गणेशराव नहा धोकर अपने कपडे पहन रहे थे. सफेद रंगका टेरीकॉटसे बना हुवा नेहरु शर्ट और सफेद उसी कपडेसे बना हुवा पैजामा. उनके शरीरके हरकतोंसे उम्रके लिहाजसे उनका शरीर कुछ जादाही थका हुवा लग रहा था. क्या करेंगे बेचारे उम्र से ज्यादा बीपी, शूगर, ॲसीडीटी ऐसे अलग अलग बिमारीयोंनेही उन्हे परेशान कर रखा था. उन्हे याद आया ... जब मै जवान था तब पॅंट शर्ट पहनता था ... वह भी शुरुवाती दिनोंमे इन वैगेरे करते हूए .... एकदम साफ दुथरे ढंगसे ... सचमुछ आदमीमें धीरे धीरे कैसा बदलाव आता है ... अपने चारो ओरके मौहोलका आदमीपर कितना बडा असर होता है ... इधर गणेशरावकी कपडे पहननेकी जल्दी चल रही थी तो उधर रसोईघरमें उनके बिवीकी बर्तनोकें आवाजके साथ मुंहसे बकबक चल रही थी - हमेशा की तरह. " 25 साल होगए नौकरी कर रहे है और ... इतने दिनोंमे क्या हासिल किया तो डीपार्टमेंटमें थोडीभी पहचान नही ... अच्छा खासा तालूकेका गाव था ... और उपरसे अपना घरभी यहांही है ... उठा दिया उन लोगोंने और ट्रान्सफर कर फेंक दिया 70 किलोमिटर दूर ... किसी देहातमें ... मतलब हमेशाकी मुश्किल दुर होगई ... मैने कितनी बार कहा ... जादा इमानदारी कुछ कामकी नही ... इमानदार लोगोंको ही इस तरह भूगतना पडता है '' गणेशरावके दिमागमें एक मुहावरा आगया - 'स्ट्रेट ट्रीज आर कट फर्स्ट' ... यह मेरे बारें मे लागू होता है क्या ?... होता है थोडा थोडा ... किसका वाक्य है यह ?... किस किताबसे है ?... कुछ याद नही आ रहा है ... लेकिन इसी मतलबका कुछ अपने चाणक्यनेभी संस्कृतमें लिख रखा है ... उसके बिवीकी बकबक अभीभी चल रही थी, "... लेकिन सुनता कौन है ... मै अनपढ जो ठहरी ... किताबोंके ज्ञानसे व्यावहारीक ज्ञान कभीभी श्रेष्ठ होता है ... लेकिन सुनता कौन है मेरी ..." लेकिन अब गणेशरावसे रहा नही गया. किताबी ज्ञानका उल्लेख उनपर सिधा हमला बोल गया था. " ... अब तूम जरा तुम्हारी फालतू बकबक बंद करोगी ... अब जाही तो रहा हूं ... उसके लिएही तो बंगलेपर जा रहा हूं ..."वे चिढकर बोले. " मतलब मेरा बोलना आपको फालतू बकबक लगता है ... इतने सालसे अपनी गृहस्थी मै ही तो संभालती आई हूं ...पिछले बार मेरे भाईने अगर मदत नही की होती तो ना जाने कहा तबादला कर फेंक दिए जाते सडने के लिए ..." " वह तुम्हारा फेंकु भाई ... कैसी मदत करता है ... उंची उंची फेंकता है सिर्फ " गणेशरावभी अब झगडनेके मूडमें आये थे. " देखो ... मै बताके रखती हूं ... मेरे मायकेके बारेंमें कुछ नही कहना "उनके बिवीने कहा. " और अगर बोला तो क्या करोगी... मुझे छोड दोगी.." " वही चाहिए ना तुम्हे... छोडनेके बाद दुसरीसे शादी करनेके लिए'' तभी अंदरसे 25-26 सालका उनका लडका विन्या वहां आगया. वह अच्छा खासा ताकदवर गबरु जवान था और चेहरेसे एकदम कठोर था. " ए चूप ... एकदम चूप" वह जोरसे चिल्लाया. " साला ... यहां जीना मुष्किल कर दिया इन बूढों ने " तब कहा दोनो एकदम चुप हो गए. अब क्या कहना है इस आजकलके लडकोंको ... एकदम बुढा कहता है मां बापको ... लेकिन जानेदो कमसे कम अबभी 'आप' वैगेरा कहनेका लिहाज बाकी है उसमें ... उतनेपरही संतोष मानना चाहिए ... उनके लडकेने एक दो बार गुस्सेसे अंदर बाहर किया और गणेशरावका अबभी धीमी गतीसे चल रहा है यह देखकर गुर्राया , " तो बंगलेपर जाना है ना ?" " हां ... यह देखो हो ही गया है " गणेशराव जल्दबाजी करते हुए बोले. " और सिर्फ तुम्हारे ट्रान्सफरका लेकर मत बैठो ... मेरे नौकरीकाभी देखो ... वही सबसे महत्वपुर्ण है " " हां ..." गणेशरावके मुंहसे निकला. विन्या काला टी शर्ट और निचे जिन्सका पॅंट पहनकर तैयार था. " तूम ये कपडे पहनने वाले हो ?... " " हां .. क्यों क्या हुवा ?... " " वह दिवालीमें खरीदा हुवा ड्रेस पहनतेतो ... उन लोगोंके

सामने यह टी शर्ट और यह पँट अच्छा नही लगेगा.." " अच्छा नही लगेगा ?... उनको कहना यह ऐसा है मेरा लडका ... और आजकल यही फॅशन है " " अरे लेकिन ... " " आप मेरे कपडेबिपडेका मत देखो ... उनसे क्या बात करना है ... कैसी बात करनी है वह देखो बस ." गणेशराव कुछ नही बोले. उन्होने सिर्फ 'अब इसे क्या कहा जाए ?' इस तरह अविर्भाव करते हूए सिर्फ हवामें हाथ लहराया.

गणेशराव और उनका लडका विन्या एक रिक्षामें बैठकर निकल दिए - बंगलेकी तरफ रिक्षामें गणेशरावके बगलमें स्पंजके सिटपर एक सीट खाली थी. लेकिन विन्या गणेशरावके बगलमें ना बैठते हूए सामने एक लकडीका तख्त था उसपर बैठ गया. गणेशरावने उसे उनके बगलमें बैठनेका आग्रहभी किया लेकिन, " नही यहीं ठिक है ... यहा हवा अच्छी लगती है " उसने कहा. गणेशरावको पता था की वहा लकडीके तख्तपर बैठनेसे या यहां स्पंचके सीटपर बैठनेसे लगनेवाली हवामें कुछ फर्क नही पडनेवाला था. जनरेशन गॅप दुसरा क्या ... या शायद मै ही अपने लडकेके साथ एक दोस्तकी तरफ नजदिकी बनानेमें नाकामयाब रहा हू.... क्या करे अपने जिंदगीका गणित पहलेसेही गलत होता गया ... शादीके लिए लडकियां देखते वक्त गडबड हो गई और ऐसी गुसैल बिवीसे पाला पडा.. लेकिन पहले वह इतनी गुसैल नही थी ... वह अभी अभी पिछले पाच छे सालोंसे इतनी गुसैल हो गई ... की उसेभी ऐसाही लगता होगा की गलत शौहर मिल गया ... और वह तो वह यह बददिमाग लडका पल्ले पड गया ... अपने नौकरीकी वजहसे मै उसके पढाईपर उतना ध्यान नही दे सका शायद यहभी वजह होगी ... लेकिन लोगोंके बच्चे तो हैही जो अपने लडकोंके पढाईपर बिलकूल ध्यान नही दे सकते... फिर वे कैसे आगे जाते है .. अपना लडकाही मुढ है और क्या ... उसकी उम्रके जब मै था तब उसका जनम हुवा था .. और इसका तो अभी नौकरीकाही कुछ नही है ... शादीकी तो दूरकी बात है ... क्या करे अपनी किस्मतही खोटी है और क्या ?... तभी रस्तेपर चढाई आ गई थी और रिक्षावाला निचे उतरकर रिक्षा खिच रहा था. रिक्षा खिंचनेवाला अपनी पुरी ताकदके साथ रिक्षा खिंच रहा था. रिक्षा खिंचते हूए उसके काले पैर और हाथकी मांसपेशीयां कैसी उपर निचे हो रही थी. और नसें तो ऐसी फुल गई थी मानो ऐसा लग रहा था की कब फट जाएगी ? उपरसे ग्रिष्मकी सुबहकी तपती धुपसे उसे पसिना छुट गया था. पसिना शायद धूपसे जादा उसे होनेवाले शारीरीक कष्टसे छुट गया था. गणेशको रिक्षावालेकी दया आ रही थी. " रुको मै उतरता हूं ... ताकी आपको आसान जाएगा .." गणेशरावने कहा. . रिक्षावाला कुछ नही बोला. वह अपना रिक्षा खिंचनेमेंही लीन था. गणेशराव रिक्षा धीमा होनेपर रिक्षासे निचे उतर गए. विन्याने तुच्छताके साथ अपने बापकी तरफ देखा और रास्तेके किनारे दिखनेवाले दुकानोंकी तरफ देखता हुवा रिक्षामे बैठा रहा. " अरे उतर क्यों गए ... बैठीए ... यह खतम होगई चढाई... और फिर ढलानही ढलान ..." रिक्षावालेने कहा. . चढाई खत्म होगई वैसे रिक्षावाला रुक गया और गणेशराव रिक्षेमें चढ गए. रिक्षावालाभी उसके सिटपर चढकर बैठ गया. और फिर ढलानपर रिक्षा पायडल ना मारते हूएभी दौडने लगी. वही अभी अभी दुखी परेशान दिख रहा रिक्षाचालक मस्तीसे उलटा पायडल घुमाते हूए खुशीसे सिटी बजाने लगा था. अब इसे क्या कहा जाए ... गणेशराव सोच रहे

थे. आदमी इतने मुष्कीलोंमेभी खुशी ढुंढ सकता है ... इसका मतलब खुश रहना तुम्हारे हालातपर निर्भर नही करता तो वह तुम्हारे जीवनकी तरफ देखनेके दृष्टीकोणपर निर्भर करता है .. इस रिक्षावालेसे अपने हालात हजार गुना अच्छे है ... फिरभी हम ऐसे हमशा दुखी क्यो रहते है ... रिक्षा एक चारो तरफसे बडे बडे पेढ थे ऐसे एक विस्तीर्ण कंपाऊंडके सामने रुक गई. गणेशराव और विन्या रिक्षासे निचे उतर गए. " कितने हो गए " गणेशरावने पुछा. " चार" रिक्षावाला कंधेपर रखे रुमालसे अपना पसिना पोंछते हूए बोला. गणेशरावने एक पांच रुपएकी नोट निकालकर उसके हवाले कर दी. उसने वह ली और पैजामेंके पहले दाई और फिर बाई जेबमें वह एक रुपएका सिक्का ढूंढने लगा. ' रहने दो ... वह एक रुपया अपने पासही रख लो ' ऐसा लगभग गणेशरावके मुंहमें आया था. लेकिन नही ... विन्या घर जानेके बाद चिल्लाएगा ... मुझे देनेके लिए आपकेपास पैसे नही होते है ...और उस रिक्षावालेको मुफ्तमें देनेके लिए होते है ... उस रिक्षावाल्याने एक रुपएका सिक्का ढुंढकर गणेशरावके हाथपर रख दिया. उन्होने वह अपने शर्टके बाएं जेबमें रख दिया. उन्होने वैसी आदतही डाल रखी थी. रेजगारी नोट सब उपरकी जेबमें, रेजगारी सिक्के सब बाई जेबमें और बडी नोट सब शर्टके निचे पहने कपडेके बनियनकी छुपी जेबमें.

गणेशराव और विनय सामने एक बडेसे कंपाऊंडमें जाने लगे. कंपाऊंडके गेटपर उन्हे वहां तैनात सेक्यूरीटी गार्डने रोका. जब उन्होने अपनी पहचान बताकर उनकी अंदर जानेकी वजह बताई, तभी उन्हे अंदर जानेकी रजामंदी दे दी गई. वे कंपाऊंडके गेटसे अंदर जाकर एक चौडे रस्तेसे, जिसकी दोनो तरफ उंचे उंचे पेढ लगे गए थे, अंदर जाने लगे. रास्तेके दोनो तरफ अशोक और निलगीरीके काफी उंचे पेढ लहरा रहे थे. जैसे जैसे वे अंदर जा रहे थे बंगलेका थोडा थोडा हिस्सा उनके दृष्टीके दायरेमें आने लगा था. जब वे बंगलेके एकदम पास गए, तब पुरा बंगला उनको दिखने लगा था. वह बंगला कहां ! वह तो एक राजमहल था.... उसके चारो तरफसे काफी खुली जगह थी, जिसमें बडे बडे पेढ उगाए गए थे, जिसकी वजहसे बाहरसे आनेवालेको पहले वह पेढही दिखते थे. बाहरसे देखनेके बाद उन पेढोंके भिडमें कही बंगला छुपा हुवा होगा ऐसा कतई लगता नही था. जब वे बंगलेके करीब पहुंच गए, उन्होने देखा की वहां तो मानो लोगों का जुलुस लगा हुआ था . बंगलेके आसपासके पेढोंके साएमें लोगोंके समुह बैठे हुए थे. कोई धोती पहने हुए, कोई पैजामा पहने हुए तो कोई पॅंट शर्ट पहने हुए, वहां हर तरहके लोग मौजुद थे. धोती पहने हुए गांवके लोग वहा जादा मात्रामें नजर आ रहे थे. उसीमें कुछ खादीके कपडे पहने हूए और पैजामा या धोती पहने हूए लिडर लोग या खुदको लिडर समझने वाले लोग इधर उधर घुम रहे थे. गांधी टोपी और वहभी अगर तिरछी पहना हुवा आदमी हो तो वह लिडर होना चाहिए ऐसा गणेशरावके मनमें कही संग्रहीत किया गया हुवा था. ऐसे लोगोंके बारेमें गणेशरावके मनमें एक डरसा बैठा हुवा था. इसलिए गणेशराव जितना हो सके उतना इन लोगोंके आसपास जानेसे बचते थे. लेकिन आज नौबत ही वैसी आ गई थी, जिसपर उनका कोई काबु नही था. लोग बाहर अपनी बारी कब आती है इसकी राह देखते हूए रुके हूए थे. लेकिन मुझे ऐसे राह देखनेकी कोई जरुरत नही होगी ... मेरीतो सरकारके साथ एकदम नजदिकी पहचान

है ... ऐसा सोचते हूए गणेशरावने उनके आसपास अपनी बारी आनेके लिए रुके हूए लोगोंपर अपनी नजरे घुमाई. उस नजरमें, कोशीश करनेके बावजुत एक कुत्सित भाव आ ही गया था. " विनू चलो हम सिधे अंदर जाएंगे " गणेशरावने विनूसे शेखी बघारते हूए कहा. दोनो बंगलेके अंदर गए. बंगलेके अंदर, बिचोबीच लोगोंको प्रतिक्षा करनेके लिए एक बडा हॉल था. उसमें लोगोंको बैठनेकी व्यवस्था की हुई थी. गणेशराव विनयको लेकर उस हॉलमें आ गए. हॉल लोगोंसे खचाखच भरा हुवा था. गणेशरावने एक बार उन प्रतिक्षा कर रहे लोगोंपरसे अपनी नजरे घुमाई. कुछ लोग किसी लिडरकी तरह अच्छी तरहसे इस्त्री किए हूए कपडे पहनकर बडे ठाठके साथ वहां बैठे हूए थे. कुछ लोग बेबस लाचारसे, अपनी बारी कब आती है यह देखते हूए दरवाजेकी तरफ टकटकी लगाकर बैठे हूए थे. इतने सारे लोग और उनमेसे कुछ अपनेसे बडे लोग पाकर गणेशको अपना आत्मविश्वास डगमगासा लगने लगा. लेकिन नही अपनी सरकारके साथ इतनी नजदिकी पहचान होनेके बाद डरनेकी कोई बातही नही होनी चाहिए. उन्होने अपने दिमागमें आए हिनताके भावनाको झटक दिया. उन्होने इधर उधर देखते हूए, वहां मौजुद चारपाच दरवाजोंमेसे सरकारसे मिलनेके लिए जानेका कौनसा दरवाजा होगा यह निश्चित किया और वे सिधे उस दरवाजेसे अंदर जाने लगे. . एक तगडा आदमी उनके बिच आया और उसने इशारेसेही 'क्या काम है ?' ऐसे अशिष्टतासे पुछा. . " सरकारसे मिलना है ? " " यह सारे लोगभी उनसे मिलनेके लिएही बैठे हूए है "उसने गुस्ताखी करते हुए कहा. " नही मेरी सरकारसे एकदम नजदिकी पहचान है " गणेशरावने गर्वके साथ कहा. उसने गणेशरावकी तरफ उपरसे निचे देखा और कुत्सित भावसे हसते हूए बोला. " भाई साहब ... सारे लोग यही कहते है ... वो वहां ... उस तरफ उस काऊंटरपर जावो ... अपना नाम पत्ता और क्या काम है यह एक परची पर लिखकर यहां दे दिजीएगा. ..और फिर आपका नाम जब पुकारा जाएगा तब आप अंदर जाईए. "लेकिन .." " भाई साहब अगर आपकी सचमुछही नजदिककी पहचान होगी तो आपको जल्दीही अंदर बुलाया जाएगा." उस आदमीने जैसे उन्हे बेवकुफ समझते हुए कहा. फिरभी गणेशराव वहांसे हटनेके लिए तैयार नही है ऐसा पाकर एक दुसरे आदमीने हस्तक्षेप करते हूए उन्हे सबकुछ ठिकसे समझाया. अपना हुवा अपमान गणेशरावके चेहरेपर स्पष्ट दिख रहा था. आपना अपमान पिकर विन्याकी नजरसे बचते हूए वे चुपचाप उस काऊंटरके पास गए. वहांभी कतार लगी हुई थी. चुपचाप जाकर वे कतारमें लग गए. विन्याभी जानबुझकर उनकी आखोंमे देखनेकी कोशीश कर रहा है ऐसे गणेशरावको महसूस हुवा. यह ऐसी है तुम्हारी नजदिकी पहचान? ... इस अपमानसे तो पहचान नही होती तो अच्छा होता ... कमसे कम इतना अपमान तो नही हुवा होता ... शायद ऐसा विन्याको कहना होगा ऐसे गणेशरावको तिरछी नजरसे विन्याकी तरफ देखते हूए महसुस हुवा. कतारमें अपना नंबर आनेके बाद काऊंटरपर अपना नाम पता और मिलनेका उद्देश लिखा हुआ परचा देकर गणेशराव हॉलमें बैठनेके लिए खाली कुर्सी ढूंढने लगे. पहले हॉलमें एक नजर दौडाई, फिर हॉलमें एक चक्कर लगाया. हॉलमें एकभी कुर्सी खाली नही थी. विन्या दरवाजेमेंही अपने पिताकी तरफ चिढकर देखता हूवा खडा हो गया. आखिर गणेशराव अपने लडकेकी तरफ उसकी तिखी नजरसे बचते हूए जाने लगे. " गणेशराव सायेब... " अचानक पिछेसे आवाज आ गया. . गणेशरावने आश्चर्यसे मुडकर देखा. चलो कमसे कम यहां कोईतो मुझे पहचानता है ... उन्हे राहतसी महसूस हुई थी. उन्होने पिछे मुडकर देखनेसे पहले गर्वसे एक कटाक्ष अपने लडकेकी तरफ डाला. उसके चेहरेके भावमें कोई फर्क नही था. उन्होने पिछे

मुडकर देखा तो एक देहाती उन्हे आवाज देते हूए कुर्सीसे उठकर खडा हुवा था. वे उसे नही पहचानते थे. लेकिन शायद वह उन्हे जानता था. अब नोकरीके वजहसे हजारो लोगोंसे पाला पडता है. सबकी पहचान रखना जरा मुश्किलही था और उपरसे ढलती उमर. याददाश्त भी पहलेजैसी तेज नही रही थी. मुस्कुराकर उन्होने उसकी तरफ देखा . " आईए साहेब ... यहां बैठिए. " उस देहातीने उन्हे कुर्सी ऑफर करते हूए कहा. वे खुशीसे चलते हूए उस देहातीके पास गए. उस देहातीके पिठपर प्यारसे थपथपाते हूए बोले. " अरे ... रहने दो ... तूम बैठोना ... हम बाहर जाकर रुकते है ... " " नही साब ... ऐसा कैसे ... हमने बैठना और आपने खडा रहना ...आप बैठिए .." उसने नम्रतासे कहा. . उन्हे उसे वहांसे उठाकर वहा बैठना ठिक नही लग रहा था और उसने दिया सन्मानभी तोडनेका मन नही कर रहा था. आखिर वह उसके आग्रहका मान रखते हूए उस कुर्सीपर बैठ गए. कुर्सीपर बैठकर उन्होने दरवाजेकी तरफ देखा. उनका लडका वहां नही दिख रहा था. शायद बाहर जाकर खडा हुवा होगा... खुली हवामें ... " मै बाहर हूं साब .. " कहते हूए वह देहातीभी हॉलसे बाहर निकल गया. वह इतने जल्दी बाहर निकल गया की गणेशरावको उसे 'धन्यवाद' कहनेकाभी मौका नही मिला

गणेशराव कुर्सीपर आरामसे पैर फैलाकर बैठे थे. बिच बिचमें वे दरवाजेसे अंदर बाहर कर रहे लोगोंकी तरफ देख रहे थे. उन्होने एकबार हॉलमे चारो तरफ जमी भिडकी तरफ देखा. भगवान जाने अब इतने लोगोंमें मेरा नंबर कब आएगा ?... तभी उन्हे अचानक हॉलमें कही हरकत महसूस हुई. कुछ लोग उठकर खडे हो रहे थे तो कुछ अपनी गर्दन उंची कर एक तरफ देख रहे थे तो कुछ लोग किसीको अभिवादन कर रहे थे. कौन है ?... सरकार तो नही ?... उन्हे लोगोंकी भिडसे गुजरता हुवा एक गोरा चिट्टा, उंचा और मजबुत शरीरयष्टीवाला आदमी दिखाई दिया. अब ये महाशय कौन ?... वह आदमी दरवाजेसे अंदर चला गया - सरकारसे मिलनेके लिए - बिना झिझक. उसे किसीने नही रोका. वह जानेके बाद भिड फिरसे शांत होकर अपनी जगहपर बैठ स्थिर हो गई. " कौन था वह ?" गणेशरावने अपनी दाई तरफ बैठे एक आदमीसे पुछा, उस आदमीने वडी ताज्जुबके साथ गणेशरावकी तरफ देखते हूए पुछा, " क्या इतनाभी नही जानते ?" गणेशरावने अपनी झेंप छिपानेकी कोशीश करते हूए अपना अज्ञान प्रकट किया. "अरे वे तो अपने मधूकरराव है ... सरकारका खास आदमी ... या दाया हाथही बोल सकते है " " अच्छा ... अच्छा" गणेशरावकी बाई तरफ एक सफेद कुर्ता पैजामा पहने एक आदमी अखबार पढते हूए बैठा था. उन्होने जाम्हाई देते हूए उस आदमी की तरफ देखकर कहा , " अब पता नही कितना टाईम लगता है तो ?" उस आदमीने अखबार वैसाही सामने रखकर अखबारके उपरसे उसकी तरफ गौरसे देखा . " आप तो अभी अभी आए ना ? " " जी हां " गणेशरावने जवाब दिया. " मै पिछले दो दिनसे चक्कर काट रहा हूं ... लेकिन उनसे मिलनेका मौकाही नही मिल रहा है ... '"ऐसा मानो वह गर्वके साथ कहकर फिरसे अपना अखबार पढनेमें व्यस्त हो गया. गणेशरावके चेहरेपर मायूसी छा गई थी. पलभरके लिए उसका वहांसे उठकर जानेका मन हुवा. लेकिन नही ... मिलना तो जरुरी है ... अपने लिए नही तो कमसे कम अपने लडके के लिए ... कुछ देर बाद कुर्सीपर बैठे बैठे ही उनकी विचारोंकी श्रुंखलाने अपना रुख अतितकी तरफ किया. उन्हे याद आ रहा था की 20-25 साल पहले एकबार उन्हे ऐसेही, इससे मिल - उससे मिल ऐसा करना पडा था. और इतने सारे प्रयास करनेके बादभी उनकी पोस्टींग देहातमेंही हो गई थी. अबभी तो वैसाही नही होगा ना ? ... पिछली बारसे इसबार उन्हे अपना तबादला रोकना

जादा जरुरी लग रहा था. क्योंकी तब वे जवान थे. सारी मुश्कीले सहन कर सकते थे. सोचते हूए उन्हे अपने जवानी के बिती हुई बाते याद आने लगी थी ..... .... बस घाटीमे दाएं-बाएं मुडती हुई आगे चल रही थी. गणेश बसके खिडकीके पास अपने सिटपर बैठा था. उसकी बगलमें एक देहाती बैठा था. बसकी चलनेकी वजहसे होनेवाली मचलनसे बचनेके लिए गणेश खिडकीसे बाहर घाटीमें दिख रही हिरियालीपर अपना ध्यान केंद्रीत करनेकी कोशीश कर रहा था. उसने बसमें बैठे बाकी यात्रीयोंपरसे अपनी नजरे घुमाई. कोई बैठे बैठेही झपकियां ले रहे थे तो कोई आपसमें बाते हाक रहे थे. गाडीके बिचवाले खाली जगहमेंभी कुछ यात्री खडे हूए थे. कोई बिचमें खडे लोहेके खंबेका सहारा लेकर खडे थे तो कोई बगलके सिटका सहारा लेकर खडे थे. उस भिडसे रास्ता निकालते हूए कंडक्टर अपनी जगहपर चला गया. अपने सिटपर बैठे आदमी की तरफ उसने सिर्फ घूरकर देखा. उस बैठे हूए आदमीने चुपचाप वहांसे उठकर कंडक्टरको बैठनेकी जगह दे दी. कंडक्टरने बैठतेही अपनी टिकटवाली बॅग खोली और उसमेंसे एक कागज और पेन निकाला. पेन कानके पिछे लगाते हूए उसने कचरेके टोकरीमें फेंकनेके लायक एक सिकुडा हुवा कागज खोला. फिर वह एक हाथसे टिकटकी बॅग उलटपुलटकर टिकटके नंबर देखकर दुसरे हाथसे कानके पिछेसे पेन निकालकर कागजपर लिख रहा था. वह यह सब इतनी सफाईके साथ कर रहा था की मानो उसे उसका कोई खास ट्रेनिंग दिया गया हो. नही तो बस चलते वक्त -इतनी हिलनेके बाद किसी कागजपर लिखना मुश्कीलही नही तो लगभग नामुमकीन था. गणेशने फिरसे अपनी नजर बाहर हरियालीपर जमाई. उसका सोचचक्र फिरसे शुरु हो गया था. कितनी जी तोड कोशिश करनेके बादभी उसपर यह नौबत आ गई थी. पांच सालतक वही तालूकेकी कोर्टमें उसने डेली वेजेसपर कुछ लिखापढीका काम किया था. फिर शादीभी की. अब पांच सालके बाद काफी मशक्कतके बाद गणेशका ग्रामसेवककी हैसीयतसे चयन हुवा था. ग्रॅजूएट होकरभी उसपर ग्रामसेवक के हैसियतसे काम करनेकी नौबत आई थी. वहभी सर्विस इतनी आसानीसे नही मिली थी. सतरा लोगोंको मिलकर, पहचान निकालकर, मन्नते करकर, उनके पैर पकडकर और उपरसे पैसेभी देकर... तब कहा उसे ग्रामसेवककी सर्विस मिली थी. सर्विस मिलनेके बाद सवाल था कहां जॉइन करना पडेगा. गणेशको तहसिलके पास लगभग 4-5 किलोमिटरके दायरेके अंदरही जॉइन करना पडे ऐसी इच्छा थी. फिरसे मिन्नते, हाथपैर जोडना और पैसे देनाभी आगया था. वहभी किया. लेकिन नही. जो नही होना था वही हो गया था. वह अपनी पोस्टींग आसपास कही नजदिक नही कर पाया था. नौकरी लगानेके वक्त लगाए वजनसे इसबार लगाया गया वजन शायद कम पड गया था. और आखिर अपनी इच्छाको मोडकर उसे तहसिलसे 50 किलोमिटर दुर बसे उजनी नामके देहातमें जाकर जॉईन करना था. आज वहां जानेका उसका पहला दिन था.

कंडक्टरने बजाए बेलसे गणेश होशमें आगया. गाडी रुक गई. उसने बाहर झांककर देखा. उजनी अभीतक नही आई थी. " उजनी और कितनी दूर है ? " उसने अपने बगलमें बैठे देहातीसे पुछा. " बहुत दूर है... आरामसे एक झपकी लियो ... आनेके बाद मै जगाये दूंगा जी ... " वह देहाती बोला. 'इतने गढ्ढोसे धक्के देते हूए चल रही बसमें निंद आना कैसे मुमकिन है ? ' उसने मनही मन सोचा. "धक्कोंका मत सोचियो जी ... मानो की झूला झुलाये रहा ... " गणेशने

चौंककर उस देहातीकी तरफ देखा. उसे इस बातका आश्चर्य हो रहा था की उसने उसके मनकी बात कैसे जान ली थी. उस देहातीने फिरसे अपनी निर्विकार नजर सामने रास्तेपर जमाई. गणेश फिरसे अपने विचारोंके दुनियामें चला गया. वह तहसिलकी जगह और वहांके मौहोलसे अच्छा खासा घुल मिल गया था. इसी बिच उसकी शादी होकर उसे एक बच्चाभी हो गया था. विनय - कितना प्यारा बच्चा.... और पहलाही लडका होनेसे मांको कितनी खुशी हो गई थी... अपने परिवारको अकेला छोडकर यहां नौकरीके लिए आना उसके जानपर आया था. लेकिन कोई चाराभी तो नही था. उसके बिवीको और बच्चेकोभी यहां देहातमें लाना एक रास्ता था. लडकेको उसने इसी साल केजीमें डाला था. और यहां देहातमें केजी वैगेरा तो कुछ नही था उपरसे पढने पढानेके लाले थे. आखिर अपने परिवारके उत्कर्षके लिए उसे इतना त्याग करना जरुरी अपरिहार्य था.... एक जगह बसकी गति कम हो गई और बस मेन रोडसे दाई तरफसे एक कच्चे रास्तेपर उतर गई. जैसेही बस कच्चे रास्तेसे चलने लगी बसमें बैठनेवाले धक्कोमें वृध्दी हुई थी. गणेश सामनेके सिटके डंडेको पकडकर सहमकर बैठ गया. गणेशने खिडकीके बाहर झांककर देखा. बाहर हरेभरे खेतमें मजूर काम करते हूए दिख रहे थे. बिचमेंही कही कुव्वेके बगलमें पाणीके पाईपसे गिरता हुवा कांचकी तरह निर्मल पाणी दिख रहा था. खेतमें बसी छोटी छोटी झुग्गी झोपडीयां और उपर आसमानमें उड रहे पंछी और उन्हे डरानेके लिए जगह जगह खडे किए मटकेके सरके पुतले. गणेशका मन मानो उस खेतके दृष्योंमें खो गया था. मानो बसमें बैठरहे जानलेवा झटकोंका उसे विस्मरण हो गया . सचमुछ कितना सुंदर जिवन है यहां देहातका. लेकिन फिर रास्तेके एक तरफसे दौडनेसमान चल रहे कृश और पतले लकडीवालोंको देखकर उसका यहांके जिवनके बारेमें फिरसे मतपरिवर्तन होकर पहलेजैसा हो गया . अचानक बसमें यात्रीयोंकी हरकत बढ गई. और धुलके बादल बसके चारो तरफ मंडराने लगे. बसने गांवकी हदमें प्रवेश किया था. " अब आवेगी उजनी " , बगलमें बैठा देहाती बोला. बाहर मंडरा रहा धुलका बादल खिडकीके रास्ते बसके अंदर घुस गया. गणेश जल्दी जल्दी खुले खिडकीकी कांच निचे खिसकाने लगा. लेकिन वह कांच अपनी जगहसे हिलनेको तैयार नही थी. वह अब उठ खडा होकर प्रयास करने लगा. वह जी तोड कोशिश करने लगा. तब तक उसका चेहरा धुलसे मलिन हो गया. उसके बगलमें बैठा देहाती उसे देखकर मुस्कुराया. "कोई फायदा ना होवे साब ... उसमें धुल घुसकर वहभी पक्का हो गया है जी ... हमारे जैसा ... तुमभी आदत डालियो ... आगे अच्छा होवेगा " गणेशने उस देहातीकी तरफ सिर्फ देखा और चुपचाप निचे बैठकर खिडकी बंद करनेका प्रयास छोड दिया. अचानक किसी चिजकी बदबु खिडकीके रास्ते गणेशके नाकमें घुस गई. उसने जेबसे रूमाल निकालकर अपने नाकको लगाया. वह देहाती फिरसे मुस्कुराया. गणेशने खिडकीसे बाहर झांककर देखा तो बाहर रास्तेके दोनो तरफ सुबह सुबह लोग लॅटरीनके लिए बैठे थे. और बस आ रही है यह देखकर वे एक एक कर उठ खडे हो रहे थे, मानो बसके सम्मानमें अदबके साथ एक एक करके उठ खडे हो रहे हो. वह गांवके बाहर लोगोंकी शौच के लिए जानेका खुला मैदान था. और उसके बाद एक झरना था, जिसे वहां के लोग नाला कहते थे. नालेपर बिछा टूटनेको आया पुल पार कर बस गांवमें घुस गई. बस गांवमें घुसतेही चारपांच छोटे छोटे नग्न बच्चोंका कांरवा बसके पिछे दौडने लगा. और बसके दुसरी ओर चारपांच लावारिस कुत्ते बसके पिछे दौडने लगे. मानो बस आनेसे उस मरीयल देहातमें जान आ गई हो. ' आ गई आ गई ...' कहते हूए, एक जगह रास्तेके किनारे खडे लोगोंने बसका स्वागत किया. उन लोगोंको बसमें बैठकर आगे जाना

था. ड्रायव्हरनेभी, शायद उनका मजाक करनेके लिए, बस उन लोगोंसे काफी आगे ले जाकर खडी की. जैसेही बस आगे जाने लगी वे लोगभी बसके पिछे दौडने लगे. पहलेही वे नग्न बच्चे और कुत्ते उस बसकी पिछे दौड रहे थे, और अब वे लोगभी बसके पिछे दौडने लगे थे. दृष्य काफी मजेदार था. . जैसेही बस रुक गई, अंदर आनेवालोंकी और बाहर जानेवालोंकी दरवाजेमें काफी भिड जमा हो गई. गणेशने सोचा, थोडी देर रुकते है और भिड कम होनेके बादही बाहर निकलते है. ... लेकिन कोई रुकनेके लिए तैयार नही था. बाहेरके लोगोंको अंदर आनेकी और अंदरके लोगोंको बाहर निकलनेकी मानो बहुत जल्दी हो गई थी. उपरसे बाहरके कुछ लोग बंदर जैसे खिडकीयोंको लटक लटककर खिडकीके अंदर रूमाल, टोपी या अपनी थैली सिटपर रखकर अपनी जगह आरक्षीत करने लगे. गणेश वह सारा नजारा देख रहा था. भिड कम नही हो रही है यह देखकर वहभी उतरने लगा, उतरते हूए उसका ध्यान एक खिडकीकी तरफ गया. एक बाहरके अंदर आनेके लिए उत्सुक यात्रीने तो हद्द कर दी थी. उसके पास जगह आरक्षीत करनेके लिए शायद कुछ सामान नही रहा हो, तो उसने सिधे खिडकीसे लटकर अपनी जगह आरक्षीत करनेके लिए खिडकीसे अपनी चमडेकी चप्पल अंदर सिटपर रख दी. गणेशको चिढभी आ रही थी, और हंसी भी. भिडसे किसी तरह जगह बनाकर बाहर उतरते हूए गणेशकी सांस चढ गयी थी. किसी तरह लोगोंसे उलझते सुलझते हूए वह बससे निचे उतर गया. जब वह बाहर आया उसके सारे बाल बिखरे हूए, अस्त व्यस्त हो गए थे. और कपडोंपर झुरीया आकर अव्यवस्थित हो गए थे और शर्टकी इनभी बाहर निकल आई थी. उसे क्या मालूम था की शायद उसने की हुई वह शर्टकी आखरी इन होगी. बाहर आए बराबर खुली हवामें सांस लेनेके बाद कहा उसे अच्छा लगा. वह पल दो पल वही रुक गया. अगले पलही वह बस फिरसे रास्तेकी धुल और डिजलका धुंआ उडाती हूई आगे निकल गई.

बससे उडा धूल और धुंआ स्थिर होकर निचे बैठनेके बाद गणेशने अपने आसपास देखा, जेबसे रुमाल निकालकर अपना चेहरा साफ किया, और बिखरे हूए बाल व्यवस्थित करनेका प्रयास किया, और कपडोंपर जमी धुल झटकनेका प्रयास किया. जानवरके तबेलेके सामने पेढ की छांवमें, पुराने लकडीके लट्ठेपर कुछ लोग बैठे हुए थे। कोई बिडी फुंक रहा था तो कोई चिलम फुंक रहा था. सारे लोग गणेशकी तरफ ऐसे देख रहे थे मानो वह किसी दुसरी दुनियासे वहां आया हो. ऐसा पँट शर्ट पहना हुवा साफ सुथरा आदमी यहाँ बहुत ही कम आता होगा. गणेश उनकी तरफ बढने लगा. अपने हथेलीपर तंबाकू मसल रहे एक आदमीके पास जाकर वह खडा हो गया. उस आदमीने बाएं हथेलीपर मसले हुए तंबाकुके आसपास दाएं हाथसे थपथपाकर तबांकूकी धूल फुंककर उडा दी. और फिर उस बचे हुए मसले हूए तंबाकूकी चूटकी बनाकर अपना गालका जबडा एक हाथसे खिंचते हूए, दांत और गालके बिचमें रख दी. " सरपंचका घर किधर है ? " गणेशने उस देहातीसे पुछा. वह देहाती लकडीके लट्ठेसे उठकर गणेशके सामने आकर खडा हो गया. गणेश अब उसके जवाबकी राह देखते हूए उसकी तरफ देखने लगा. लेकिन वह आदमी किसी गुंगेकी तरह हाथसे इशारे कर कुछ बतानेकी कोशीश करने लगा. आखिर उसने गणेशको बाजु हटाकर उसके मुंहमें जमा हुई तंबाकूकी लार एक तरफ मुंह करते हूए थूंक दी और फिर बोला, " सरपंचजीका मेहमान जी ? " ' हां ' गणेशने सर हिलाकर जवाब दिया. उस देहातीने झटसे गणेशके हाथमें थमी बॅग अपने हाथमें ली और वहाँसे आगे चल पडते हूए बोला, " पिछे पिछे आवो जी " कितना अच्छा आदमी है ... मैनेतो सिर्फ पता पुछा और यह तो अपनी बॅग लेकर मुझे वहां लेकरभी जा रहा है ... गणेशने सोचा.

गणेश चुपचाप उसके पिछे पिछे चलने लगा. " तहसिलसे आए हो का ? " उसने दुसरे हाथसे अपनी धोती ठिक करते हूए पुछा. " हां " गणेशने जवाब दिया. शायद सरपंचने उसे यहां मुझे लेनेके लिएही तो भेजा नही ?...गणेशने सोचा. " मुझे लेनेके लिए संरपंचजीने भेजा है आपको ?" गणेशने पुछा. ' ना जी ... वो क्या है ना जी .. सरपंचजीका मेहमान माने ... गांवका मेहमान " वह गणेशके सवालका रुख समझते हूए बोला. " सरपंचजी मतलब हमरे गांवकी श्यान है ... गांवकी जोभी तरक्की होवे है ... सब सरपंचजीके किरपासे ... पहले तो यहां भूर्मलभी नही आवत रही ... " " भूर्मल ?" गणेशने प्रश्नार्थक मुद्रामें पुछा. " माने ... एस्टी... वो तुम बड़े लोगन का कहत रहे .... बस... बस" वह खिलखिलाकर हसते हूए बोला. वह आगे बोलने लगा " साहेब एक दफा क्या हुवा ... हमरी चाचीके भाईके लडकेने शहरसे लडकी ब्याहके लाई ... साहेब वे बडे अच्छे लोगन रहे ... शादीका क्या ठाठ रहा .. के वे लोगन भी चाट हुयी गवा ... हमको भी न्यौता रहा शादीका .... एकबार घरमें सारे लोगन साथ साथ खाना खाने बैठे रहत ... बेचारी नई दुल्हन सबको परोस रही .... वह अपने आदमीको शार परोस रहत ... वह बोला बस... बेचारी इधर उधर देखन रही ... बर्तनसे शारकी धार चलती रहत ... हमरे चाचाका लडका बडा गुसैल .... चिल्लाया ना जी वो उसपर ... जोरसे चिल्लाया ... " बस...बस..." क्या करेगी वो बेचारी... डर की मारी.... फटाक से निचे वही उसके सामने बैठ गई." गणेश खिलखिलाकर हसने लगा. वह देहातीभी हंसने लगा. " अब उसकी तरफ देखयो ... पहचानो भी नही ... की उसने घरवाली शहरसे लाई है करके... बहूत टरेन किया है हमारे चाची के भाईने ... अब मस्त जाती है खेतमें.... " उसने पिछे गणेशकी तरफ मुडकर देखते हूए कहा. गणेश उसकी तरफ देखकर मंद मंद मुस्कुराया. " आप तो बडी मजेदार बाते करते हो भाई .... अरे हां आपका नाम पुछना तो मै भूलही गया. " सदा ... सदा है हमरा नाम"" " मतलब आप सदा ऐसीही मजेदार बाते करते होंगे इसलिए आपका नाम सदा रखा गया होगा " गणेशने मजाकमें कहा. " क्या साब आपबी मस्करी करते हो गरीब आदमीकी " वह शरमाकर बोला. चलते हूए वे एक बडे मैदानसे गुजरने लगे. " यहां हमरे गांवका बाजार होता है ... बस्तरवारको " सदाने कहा. "बस्तरवारको ?" "माने गुरवार साब " वह हसते हूए बोला. . " अच्छा " गणेशने उस खुले मैदानपर अपनी दृष्टी फेरते हूए कहा. बस्तरवार ... यानीकी बृहस्पतीवारका वह भ्रष्ट अविश्कार होगा शायद ... गणेशने सोचा. फिर सदा गणेशको दो तिन छोटी छोटी गलियोंमें लेकर गया. सामने एक जगह वे बजरंग बलीके मंदिरके सामनसे गुजर गए. मंदिर एक बडे उंचे चौपाहे पर, जिसे वे लोग पार कहते थे, बसा हुवा था. बगलमें एक बडासा बरगदका पेढ था. और पेढके बगलमें, वॉटर सप्लाय डिपार्टमेंटने बंधी हूई एक बडी पाणीकी टंकी थी. " ये हमरे गांवका पार सायेब, ईहां इस बरगदकी पेढकी वजहसे बहुत बरकत है...." "बरकत?" " माने मतलब इहां इस पेढकी वजहसे मस्त ठंडी ठंडी छाव होवे है.. लोग बाग तो बैठतेही है ... साथमें थके हारे कुत्ते बिल्ली, गाय भैस जैसे जानवरभी बैठते है ... ईहां पेढकी छांवमें " " आप लोगोंके गांवमें पाणीका नलभी आया हुवा दिख रहा है " पाणीकी टंकीकी तरफ देखते हूए गणेशने पुछा. पाणीके टंकीके उपर दो चार नटखट बच्चे चढकर खेल रहे थे. " नल कायका सायेब ... बांधकर रख दी है सिरफ पाणीकी टंकी ... कभी कभी धुपकालेमें छोडते है पाणी ... तब बहुत भिड होती है लोगोंकी ईहां " तभी एक लाल लाल अंजिरजैसा बरगदका फल पेढसे निचे गिर गया. वहां खडे तिनचार बच्चे उधर दौड पडे. उनमेसे एकने बडी सफाईसे वह फल उठाया और बाकि लडकोकों मुंह बिचकाकर चिढाने लगा. उस लडकेने फिर

वह फल हल्केसे खोलकर उसमेंके छोटे छोटे किडे सांफ कर, बाकी लडके उससे वह हथीयानेसे पहले झटसे अपने मुंहमें डाल दिया. गणेशने वह किडे देखकर बुरासा मुंह किया था. और आश्चर्यसे वह उस लडकेको देख रहा था. " अरे सायेब बहुत मस्त लगता है .. तुमभी कभी खाकर देखना... " सदा गणेशका बुरासा हुवा मुंह देखकर बोला. मंदीरके बगलसे मुडकर सदा गणेशको लेकर आगे जाने लगा. सामने रास्ता पहले गलीसे थोडा चौडा था. रस्तेके दोनो तरफ मट्टीसे बने, गोबरसे सने हूए मकान थे. वही दाई तरफ सामने एक किराने की दुकान थी. किराना दुकानके दोनो तरफ पत्थरसे बने हुए दो चबुतरे थे. वही चबुतरेपर काफी लोग भिड बनाकार बैठे हुए थे. कोई बिडी फूंक रहा था तो कोई चिलम फूंक रहा था. कोई चिलम में तंबाकू भर रहा था को कोई बाते हांक रहे थे. सदा गणेशको वहांसे ले जाने लगा था तो सारी नजरे उसकी तरफ मुड मुडकर देखने लगी. गणेशभी उनकी तरफ देख रहा था. देखते हूए उसकी नजर दुकानके कॅश काऊन्टरपर चली गई. आश्चर्यसे वह उधर देखताही रहा. क्योंकी काऊंन्टरपर एक सुंदर जवान औरत बैठी हूई थी. एक दुकानके काऊंन्टरपर, वहभी इतने पिछडे हूए देहातमें, एक औरतने बैठना इसका उसे आश्चर्य लग रहा था. अब कहा उसके खयालमें आया था की वहां दुकानके दोनो तरफ लोग मधू मख्खीयोंकी तरह इतनी भिड बनाकर क्यों बैठे हूए है. वहां काऊंन्टरपर बैठे औरत का रहन सहन किसी शहरकी औरतसे कम नही था. वह उसकी मुलायम गोरी त्वचा. बाल लंबे. होठोंपर लिपस्टीक लगाए जैसी नैसर्गीक लाली. चेहरा मानो मेकअप किया हो ऐसा साफ सुथरा. सिर्फ वह उसके ठोडीपर गुदे हूए तिन टीके उसके रहन सहनसे मेल नही खाते थे. उसने गुलाबी रंगकी पतली और मुलायम साडी पहनी हुई थी. और मामुली गहरे गुलाबी रंगकाही छोटी छोटी आस्तिनवाला ब्लाऊज पहना हूवा था. उन छोटी छोटी आस्तिनकी वजहसे उसकी वह गोरी, और भरी हूई बाहें औरही मादक दिख रही थी. गणेश पलभर रुककर उसकी तरफ देखनेके अपने मनके लालच को रोक नही सका. उस औरत की तरफ देखकर उसे किसी रेगिस्तानमे गलतीसे कोई गुलाब का फुल उगा हो ऐसा लग रहा था. लेकिन एक बात उसके बिना ध्यानमे आए नही रह सकी, की अगलबगलके लोग जिस तरहसे उसकी तरफ देख रहे थे, कमसे कम उसकी वजहसेतो उस औरतका ध्यान उसकी तरफ जाना चाहिए था. लेकिन वह काऊंटरपर बैठकर अपने दुकानमें आए ग्राहक अटेंड करनेमें और दुकानमें काम कर रहे नौकरको सुचना देनेमे व्यस्त थी. या कमसे कम वैसा जतानेकी चेष्टा कर रही थी. उसकी हर अदा और अंदाज एकदम बिनदास लग रहा था. आदमी होनेके नाते एक स्त्रीने, और वहभी जब वह उसकी तरफ घूरके देख रहा हो, उसने ऐसी उसकी उपेक्षा करना उसे अच्छा नही लगा. उसके मर्दाना अहंको चोट पहूंची थी. वैसे गणेशभी दिखनेके मामलेमे कुछ कम नही था. एकसे बढकर एक सुंदर युवतीया अबभी, उसके शादीको पांच सालके उपर हो जानेके बादभी, उसपर मरती थी. झटसे उसने अपने आपको संभाला और वह सदाके पिछे पिछे जाने लगा. चलते हूए वह अपने दिमागसे वे विचार झटकर निकालने की कोशीश कर रहा था. लेकिन उसे अपमानीत लग रहा था और दिलमे न जाने क्यूं एक कसकसी जाग उठी थी.

वे दोनो सरपंच के मकानके पास जाकर पहूंचे. मकान कैसा.... वह तो एक हवेली थी हवेली! हवेलीके अंदर जानेके लिए सामनेही पुराना तेल लगा लगाकर काला हुवा बहुत बडा दरवाजा था. हवेलीका विस्तार भी बहुत बडा था. कमसे कम सामनेसे तो वैसेही लग रहा था. हवेलीकी बायी ओर, हवेलीसे सटकर सरपंचकी बहुत बडी गोशाला थी. अभी वह

खालीही दिखाई दे रहा थी, शायद जानवर सुबह जल्दीही चरनेके लिए जंगलमें चले गए होंगे. गणेशको अंदर ले जाते हूए सदाने दायी तरफ जो बैठक थी उसमें गणेशको बिठाया. बैठक मतलब एक थोडी उंचाईपर बंधा एक कमरा था, और उसमे गद्दे इत्यादि बिछाए हूए थे. गणेश बैठकमें इधर उधर देखते हूए ही अंदर गया. उधर सदा घरके अंदर चला गया था, शायद सरपंचको बुलानेके लिए. बैठकमें दिवारोंपर अलग अलग प्रकारकी तस्वीरे लगाई हूई थी - जैसे नेहरु, लाल बहादूर शास्त्री, महात्मा गांधी, इत्यादि. गणेश उन तस्वीरोंको देखते हूए एक जगह गद्देपर बैठ गया. दिवारपर उसका ध्यान एक गंभीर प्रभावशाली लंबी लंबी मुंछोवाले, सरको महंगीसी पगडी बांधे हूए एक आदमी की तस्वीर की तरफ गया. शायद वे सरपंचके पिता होंगे या पिताके पिता होंगे. तभी अंदरसे सदा एक बाल्टीमें पानी ले आया. " आवो साबजी हाथपैर धो लिजियो ... इतनी दुर से आवत रहे ... थक गए होंगे... " बाल्टी लेकर सदा सामने बाहरी चबुतरेपर जाते हूए बोला. " हां ... " कहते हूऐ गणेश उठ गया और उधर चला गया. लोटेसे बाल्टीसे पानी लेकर गणेशने हाथ पैर मुंह धोकर, मुंह मे पाणी लेकर कुल्ला किया और अब वह पानी थूकनेके लिए इधर उधर देखते हूए जगह ढूंढने लगा. " इहा सामने थूक दियो जी ... " सदाने गणेशकी उलझन देखते हूए कहा. उसने अपने आपको असहज महसूस करते हूए अपने मुंहमे भरा हूवा पानी सामनेही लेकिन थोडी दूर थूकनेकी कोशीश की तो सदा मन ही मन मुस्कुराया. " सरपंच पुजापाठ करत रहे है ... थोडी देरमें आ जावेंगे... आप आरामसे बैठकमें बैठीयो ... मै चायपानीका इंतजाम कराये देवत हूं " गणेशके पास हाथपैर पोछने के लिए एक तौलीए जैसा कपडा देते हूए सदाने कहा. जब गणेश हाथपैर पोछने लगा, सदा जल्दीसे अंदर चला गया. गणेशको अब, हाथपैर धोनेके बाद तरोंताजा महसूस होने लगा था. बससे आनेकी वजहसे चेहरा पसिना और धुलसे मलिन हुवा था. चेहरा पोछते हूए वह पैर लंबे कर लोडपर लेट कर बैठ गया. बसमें पैर एक सिमीत दायरेमें रखनेसे अकड गए थे. चेहरा पोछकर कपडा एक तरफ रखते हूए उसने अपनी थकान दुर करनेके उद्देशसे पैरोंको और जोडोंको ढीला छोड दिया. तभी सदा पिनेके लिए पानी लेकर आया. यहा का पानी पिलानेका तरीका कुछ अलगही लग रहा था. सदाने पानीसे भरा हूवा पितल का लोटा गणेशके हाथमें थमाया. लोटेको उपरसे पितलकीही एक कटोरीसे ढका था. यह ऐसा तरीका उधर बारामतीकी तरफ उसने देखा था. जितना लगता है उतना पानी कटोरीमें खुद लो और पानी पिनेके बाद फिरसे लोटेको उसी कटोरीसे ढको. ना जाने क्यो यह तरीका उसे पहले देखा तबभी अच्छा नही लगा था. उसके मनमें एक आशंका हमेशा रहती थी की अगर कटोरीसे पानी पिकर कटोरी फिरसे लोटेपर रखी तो कटोरीका झूठा पानी लोटेमें फिरसे गिरेगा. लेकिन यह हूई उसकी सोच, उधर बारामतीकी तरफ तो बडे बडे लोग इसी तरह से पानी पिते थे. वैसे उसे प्यासभी बहुत लगी थी. सुबह पौ फटनेसे पहले घरसे बाहर निकलनेके बाद अबतक पानी की एक बुंद उसके पेटमे नही गई थी. वह मुंह के उपर लोटा तिरछा कर उपरसे गटागट पानी पिने लगा. लोटा खाली होनेके बादही उसने निचे रखा और एक लंबी सांस ली. " बहुत प्यास लगी रहत ... है जी ?... और लेकर आऊ? " सदाने पुछा. गणेशने सर हिलाकर 'नही' कहा. सरपंच पुजापाठ निपटाकर शांतीसे बैठकमें आ गए. सफेद धोती और उपर कपडेका सिला हुवा वैसाही सफेद बनियन. मस्तकपर लाल टिका लगाया हुवा. पुजाके पहिले सुबह सुबह नहा धोकर तैयार होनेसे उनके तेल लगाए हुए बाल और चेहरा एक अनोखे तेज से चमक रहे थे. सरपंच एक अध्यात्मीक व्यक्तीत्व लग रहे थे. वैसे गणेश और सरपंचजी की तहसीलमें पहलेही पहचान हूई थी.

सरपंचजीके आतेही लेटा हूवा गणेश सिधा होकर बैठ गया. " नमस्ते ... गणेशराव " " नमस्ते ... " सरपंचजी गणेशके बगलमेंही दुसरे एक लोडको खिंचकर टेंककर बैठ गए. गणेशके पिठपर हलकेही थपथपाते हूए सरपंचजीने कहा, " फ़िर कैसन हो... कुछ तकलिफ तो ना हूई ना ईहां तक पहूंचनेमें " गणेश उलझनमें पड गया की हां कहां जाए या ना कहा जाए ... क्योंकी यहां तक की उसकी यात्रा कुछ खांस सुखदायकतो नही हूई थी. . उसकी उलझन देखकर सरपंचजीने कहां " शुरु शुरु में... तकलीफ तो होवेगीही... इतनी दुर वहभी देहात मा और बससे उबड खाबड रास्तेसे आना बोले तो तकलीफ़ तो होवेगीही... लेकिन धीरे धीरे आदत हो जावे गी..." सरपंचजीका बोलनेका लहजा एखाद दुसरा लब्ज छोडा जाए तो काफी साफ सुधरा लग रहा था... कम से कम उस देहाती सदा से तो साफ सुधरा था ही. तभी सदा चाय लेकर वहां आ गया. " अरे सिरफ चाय ... साथमें कुछ खानेको भी ले आवो भाई .. " सरपंचजी ने उसे टोका. सदाने चायकी दो प्यालीयां दो हाथमें पकडकर लाई थी. सरपंजीकी सुचना सुनतेही असमंजससा वह दरवाजेमेंही खडा हो गया. " नही... सरपंचजी... घरसे निकलने के पहलेही मैने नाश्ता किया है... मुझे सुबह उठते बराबर नाश्ता करनेकी आदत जो है. ... " "अरे नही ऐसे कैसे... आप हमारे ईहा पहली बार आवत रहे.... " " नही सरपंचजी ... सचमुछ रहने दिजीए .... " " अच्छा ठिक है... लेकिन सदा इनके दौपहरके और शामके खानेका इंतजाम करनेके लिए जरा अंदर बता दीज्यो .. " सदाने अपने चेहरेपर मुस्कान लाते हूए अपना सर सहमतीमें हिलाया और चाय लेकर वह गणेश और सरपंचजीके सामने आकर खडा हो गया. चायकी प्यालीयां उनके हवाले कर वह फिरसे जल्दी जल्दी अंदर चला गया. " बहुत ही सभ्य आदमी लगता है .. " गणेशने चाय लेते हूए सदा जिस तरफ गया उस तरफ़ देखते हूए कहा. सरपंचभी जो चाय पी रहे थे उन्हे चाय पिते हूए अचानक चाय मानो उनके गलेमें अटककर खांसी आ गई. उन्होने गणेशकी तरफ आश्चर्यसे देखते हूए पुछा, " आपको ये ईहां ले आया ?" " जी हां " " हे भगवान ... " हैरानीसे सरपंचजीने अपने मस्तकपर हाथ मारते हूए कहा. " क्यो क्या हूवा ? " " कुछ नाही " आगे और सरपंचजीने कुछ नही कहां और वे फिरसे अपनी चाय पिनेमें व्यस्त हूए देखकर गणेशने कहा, " आप नही जानते ... मेरी पहचान ना होते हूए भी उसने बस स्टॉपसे मेरा सामान यहांतक उठाकर लाया... और रास्तेमें बाते कर मेरा मनोरंजनभी किया... सचमुछ ऐसे सज्जन और सभ्य लोग देहातमेंही मिलना मुमकिन है... और वेभी बहुत कम .. अपनी उंगलीयोंसे गिनती हो इतनेही होंगे... ... " " सज्जन? ... कौन सदा ? " सरपंचजीने आश्चर्यसे पुछा. गणेश सरपंचजी सदाके बारेंमे आगे क्या कहते है इसकी राह देखने लगा. लेकिन सरपंचजी इतनाही कहकर आगे चुप रहे. " क्यों क्या हुवा ? ... मुझे तो बहुत सज्जन लगा वो " " कुछ ना ही ... धीरे धीरे आपको सब समझमें आ जावेगा ... " इतना कहकर सरपंचजीने बातोंका रुख बदल दिया. " अब दिनभर क्या करने का इरादा है ... मेरा मतलब ई है के ... कुछ आराम कर काम शुरु करेंगे या अभी तुरंत... ... " सरपंचजीने बातोंका रुख बदलनेकी बात गणेशके खयालमें आगई. लेकिन उसे भी उसीके बारेंमें और कुरेदकर पुछना अच्छा नही लगा. लगभग तीनचार घंटेकी यात्राके बाद गणेश काफी थक गया था. उसमे तुरंत अभी काम शुरु करनेका उत्साह बाकी नही था. गणेश सोचमें पड गया. क्या किया जाए? ... तुरंत काम शुरु किया जाए?... या थोडे आराम के बाद?... सरपंचजीने मानो उसके मनमें चल रहा द्वंव्द भांप लिया. " ठिक है ... ऐसा किजीयो ... थोडा विश्राम करियो ... तबतक खाना बन जावे गा ... और फिर खाना खानेके बाद ही कामको शुरवात करते है... " " हां ठिक है ... वैसेही

करेंगे... " गणेश अपने पैर थोडे फैलाते हूए बोला. " और आप बिनदास्त आराम किजीयो ... एकदम पुरा लेटकर... मै सदाको दरवाजा बंद करनेके लिए कहे देता हूं " ऐसा बोलते हूए सरपंचजी बैठकके बाहर निकल गए.

खाना-वाना होनेके बाद दोपहर गणेश और सरपंचजी घरसे बाहर निकले. उनके साथ एक नौकरभी था. "सबके पहले आपके रहनेका , खानेपीनेका इंतजाम करना जरुरी है... हर बार अपडाऊन करना आपसे ना ही हो पावे गा ... " " हां मुझेभी ऐसाही लगता है ... कमसे कम यहां हूं तबतक एखाद कमरा रहनेके लिए मिलता है तो बहुत अच्छा होगा " " मिलेगा ना... जरुर मिलेगा... उधर हमरा और एक घर है .... वहां अभी कोई ना ही रहत... लेकिन वहां हम सारा खेतीका सामान समान जैसे की हल, दरांती, कुल्हाडी, और खेतीमें लगनेवाली जंजीरे, रखत है ... लेकिन सामनेके कमरेमें आप आरामसे रह पावे है... . " " हां ... उतनी ही रखवालदारी हो जावेंगी हमरे सामान सुमानकी ... " सरपंचजीका नौकर बिचमेंही बोला. सरपंचजीने उसकी तरफ कडी नजरसे देखते हूए उसे चूप रहनेका इशारा किया. साले बेवकुफ़ नौकर कभी नही सुधरेंगे ... उन्हे कब कहां क्या बोलना चाहिए.. थोडा भी दिमाग नही है.... सरपंचजीने सोचा. गणेशरावको क्या लगा होगा... की मै उन्हे रखवालीके लिए अपने घरमें पनाह दे रहा हूं ... " लेकिन सरपंचजी ... मै जादा कुछ किराया नही दे सकुंगा. " " अरे आप उसकी चिंता मत किजीयो ... हम क्या आपसे किराया लेवेंगे ? " सरपंचजीने गणेशके पिठपर थपकी लगाते हूए कहा. " नही ... नही ... ऐसे कैसे... जो कुछ भी होगा आप बता दिजीए.. " " अरे गणेशराव ये क्या शहर है .... आपसे किराया लेवेंगे तो ... सारे गांव मे हमरी नाक कट जावेंगी ... " चलते हूए अबतक गणेशके खयालमें आ चुका था की यह वही रस्ता है जिससे वे बसस्टॉपसे सरपंचजीके घरकी तरफ जाते हूए गुजरे थे. " सुबह हम इधरसेही गुजरे थे... " " हां ... हमरा घरभी इधरही आवे है ... हमरे घरके सामनेसेही गुजरे होंवेंगे . " वे तिनो फिरसे सुबह जिस दुकानके सामनेसे गुजरे थे उस दुकानके सामने आ गए. दुकानके गल्लेपर अबभी वही सुंदर युवती बैठी हुई थी. उसकी तरफ देखकर ना जाने क्यो गणेशके शरीर से एक अजिबसी सिरहन दौड गई. उसकी दिलकी धडकन तेज होने लगी थी. अभीभी उस युवतीका ध्यान उसकी तरफ नही था. लेकिन उसकी दिल मोह लेनेवाली तेज बिनदास हरकते देखने लायक थी. " वह हमरी मधुराणीका दुकान " गणेशके देखनेका रुख देखकर सरपंचजीने कहा. " अच्छा .. अच्छा " गणेश ज्यादा दिलचस्पी ना दिखाते हूए बोला. " और उसकी दुकानके एकदम सामने है हमरा घर " सरपंच उस दुकानके सामने स्थित एक घरके सामने खडे होते हूए बोले. सरपंचजीके बोलनेमें शायद कुछ शरारत छिपी हुई थी... कमसे कम गणेशको वैसे लगा था. और सरपंचजीका दुसरा घर मतलब, इट-पत्थर और मिटी से बने हूए 3-4 कमरे थे. घर उपरसे लोहेके टीन - छप्परसे ढंका हुवा था. और वे टीन नटबोल्टसे फिट किए होनेसे छप्परको बिच बिचमें छोटे छोटे गढ्ढे दिख रहे थे. सरपंचजीने नौकरके हाथमें चाबियां थमाते हूए उसे सामनेका ताला खोलनेका इशारा किया. नौकरने चाबी लेकर जल्दीसे सामनेके दरवाजेपर लगा हुवा ताला खोला. तभी गणेशके बगलमें ऐसी कुछ हरकत हूई की वह की वह चौंक गया. देखता है तो लगभग उसके शरीर को स्पर्ष करती हूई मधुरानी उसकी बगलमें आकर खडी हो गई थी. " नमस्कार सरपंचजी " मधुराणीका मधुर स्वर गुंजा. कितना मधूर और

आंदोलीत करनेवाला स्वर था वह... " नमस्कार " सरपंचजीने पलटकर उसके नमस्कार को प्रतिसाद दिया. " बहुत दिनों बाद दिखाई देवे है ... . क्या घरको रंग देनेका सोच तो नाही रहियो ... ऐसी बात होवे तो हमें बताई दियो ... हमरें दुकानमें पडी है कुछ रंगरोटी " वह सरपंचजीसे बोली. गणेश एकदम उसके करीब खडा उसकी हर अदा, उसके बोलनेका ढंग, उसकी हर हरकत निहार रहा था. बोलते वक्त उसकी रसीले गुलाबी होठोंसे झलक रहे उसके सफेद दांत विषेश मादक लग रहे थे. गणेश अपने होश हवास खोकर उसकी हर अदा निहार रहा था. " अरे नाही ... हमरे गांव में ये नए ग्रामसेवक आवे है... गणेशराव ... उनके रहने का इंतजाम करने की सोच रहे है " " अरे सच्ची ... शहरके दिखाई देवत रहे .... मेरा तो ध्यानही नाही ही था.... सोचा कोई नया मेहमान होवे है " वह गणेशकी तरफ देखते हूए बोली. अब वह उससे जरा दूर हटके खडी होगई. गणेशका दिल मायूससा होगया. उसे वह उसका हल्का हल्का स्पर्ष अच्छा लग रहा था. लेकिन उसके चेहरेपर छाई वह मायूसी फिरसे हट गई. उसकी वहं सिधे दिलको छुनेवाली मादक नजर अब उसे घायल कर रही थी. उसकी तरफ देखकर गणेश मंदसा मुस्कुराया. " अच्छा तो बाबूजी आप ईहां रहनेवाले हो... फिरतो आप हमरे पडोसी होवे है ... हमरा बहुत जमेगा.. देखोजी ... " उसने आगे कहा. तबतक सरपंचजीका नौकर दरवाजा खोलकर अंदर चला गया. "अच्छा गणेशराव मै क्या सोचरिया... आप आगेका कमरा लीजो .. " सरपंचजी बोले. " अच्छा सरपंचजी ... आती हूं " मधुराणी वहांसे निकलकर अपने दुकानकी तरफ जाते हूए बोली. सरपंचजीने गर्दन हिलाई . जाते हूए उसने गणेशकी तरफ देखते हूए एक मुस्कान दी. गणेशभी उसकी तरफ देखते हूए मुस्कुराया. जैसे वह वहांसे चली गई सरपंचजी और गणेश उस नौकर के पिछे कमरेमें घुस गए. वह नौकर अंदर आकर इधर उधर कुछ ढुंढ रहा था. " ए येडे पहले लाईट तो जलाई दे ... हमरे नौकर ना एक एक नमुने होवे है ... " सरपंच चिढकर बोले. नौकरने वापस आकर दरवाजेके बगलमें स्थित बल्बका स्वीच दबाया. अंधेरे कमरेमें सब तरफ बल्बकी पिली पिली रोशनी फैल गई. कमरेंमें सब तरफ हल, दरांती, कुल्हाडी, और खेतीमें लगनेवाली जंजीरे, जैसे सामान सब तरफ फैलकर रखे हूऐ थे.... और उस सामानपर धुल की एक हलकीसी परत जमी हूई थी. कुछ थैले भी रखे हूए थे जिसके मुंह रस्सीसे बंधे हूए थे. " तो फिर बोलियो कैसा रहा ये कमरा.... ' सरपंचजीने गणेशसे कहा. और आगे नौकरको कुछ आदेश देते हूए बोले, ' ए तूम इस कमरेंमे रखा सामान सुमान अंदरके कमरेंमे रख दियो और इन्हे यह कमरा साफ कर दीजो ... बाबूजी आजसे ईहां रहेंगे ... . " " जी साबजी " नौकरने हामी भर दी. " और हां न्हाणी उधर अंदर है " "न्हाणी?" "मतलब बाथरुम जी " सरपंचजी हसते हूए बोले. गणेशने अंदर जाकर बाथरूम देख ली. गणेश बाहर आते हूए बोला " संडास.... संडास नही दिख रहा है " " गणेशराव ....ई देहात है... ईहां सब लोगोंको खुली हवाकी आदत है... एकबार सरकारने संडास बांध दिए थे ईहां... लेकिन उसमें कोई नही जाता रहा ... आखीर लोगोंने तुड़वा दिए ... कमसे कम एक तो रखना था... आपके जैसन लोगोंके वास्ते ... " गणेशका चेहरा उदास हो गया. वह अपने चेहरेके भाव छुपाता हुवा बोला, " वैसे कमरा अच्छा है... वैसे मैभी कुछ जादा रुकनेवाला नहीं हूं यहा... हफ्तेमें दो तिन बार बस... " " और संबा अब एक काम लगाई रहा तुमरे पिछे... गणेशराव जब जब ईहां रुकेंगे... उनका पाणी वानी भरना तुम्हारी तरफ ... समझे... " सरपंचजीने अपने नौकर को ताकीद दी. " पाणी ? " गणेशने आश्चर्यसे पुछा. " अब नल कहां है ? ये मत पुछियो जी .. " सरपंचजी गणेशका मजाक करते हूए बोले. गणेश फिरसे झेंपसा गया. " हमारा ये नौकर आपको

पाणी कुंएसे भरकर लाकर देवत रहेगा... " सरपंचजी ने कहा. " चलो अब उधर ऑफीसमें जावत रहे ... तबतक तुम साफ सफाई करियो ... समझे... " सरपंचजीने अपने नौकरको फिरसे आदेश दिया. " जी साबजी " नौकर बोला और उसने अपना काम शुरु कर दिया. सरपंचजी और गणेश कमरेसे बाहर आगए और आफिसकी तरफ निकल पडे. जाते हूए गणेश लाख कोशीश की बावजुद अपनी नजरको मधूराणीकी दुकानकी तरफ जानेसे रोक नही सका.

गणेश ऑफिसमें बैठकर पुराने ग्रामसेवककी राह देखने लगा. सरकारने ग्रामपंचायतके व्दारा ग्रॅन्ट देकर जहां हर बृहस्पतीवारको हर हफ्ते बाजार भरता था वहीं मैदानमें एक कोनेमें एक अच्छा खांसा छोटा ऑफीस बनाकर दिया था. पुराने ग्रामसेवकसे चार्ज लिए बैगर गणेशको वहां काम शुरु करना मुमकीन नही था. तभी उसे दरवाजेमें किसीकी आहट हो गई. गणेशने उधर देखा. लगता है आगए है पुराने ग्रामसेवक... वह उनकी अंदर आनेकी राह देखने लगा. काफी समय होगया फिरभी कोई अंदर नही आया यह देखकर गणेशने फिरसे उस तरफ देखा. उसे फिरसे वहां दिवारपर कोई साया हिले जैसा दिखा. शायद कोई देहाती होगा ... और कामके लिए आया होगा ... साला अबतक चार्जही नही लिया और ये लोगोंका होगया शुरु... " कौन है ?" गणेश अपनी जगहसेही चिल्लाया. एक फटे पुराने कपडे पहना हूवा आदमी अंदर आ गया. " मै हूं साबजी ... पांडू" " देखो मै आजही यहां जॉईन हुवा हूं ...अभी मैने चार्जभी नही लिया है ... तुम कल आ जावो ..." " नाही साबजी ... मै ईहां का चपरासी हूं " " चपरासी ... लेकिन ऑर्डर लेते वक्त तो मुझे ऐसा कुछ नही बोला गया था की यहां कोई चपरासी भी है " " मतलब वैसे नाही साबजी ... " कुत्ता जैसे अपनी दुम हिलाते हूए अपने मालीक के पास जाता है वैसे वह गणेशके पास गया. " अच्छा अच्छा ..." अब गणेशके खयालमें आगया. " अरे ... खराडे साब कैसे नही आए अबतक ..." गणेशने उसे पुछा. " अभी आवत ही रहे होंगे... वे उनके गांवसे आवत रहे ना... इसलिए कभी कभी देर हो जात रही ..." " देर ?... सुबह आने चाहिए थे... अब दोपहर हो कर गुजरी है... फिरभी नही आए है अबतक .." " आ जावेंगे साबजी ... कभी कभी हो जात रही....ऐसन " " और तुम कहां रहते हो ..." गणेशने पुछा. " ई यहीं ... उस तरफ वाली गलीमें... ई हां ऑफीसमा कुछ आहट होई गयी इसलिए आवत रहा ... मुझे लगा खराडे साब आवे है... तभी आते हुए रास्तेमें सरपंचजी मिलत रहे ... उन्होने कहां की नए साबजी आवे है करके... " यह स्पष्ट था की पुराने ग्रामसेवककी आनेका ऐसा कुछ समय तय नही था. गणेश कुछ नही बोला. उसने फिरसे अस्वस्थतासे अपनी घडीमें देखा. " चाय पाणी ... कुछ लावू क्या साबजी " " चाय? ... यहां कही हॉटेल है क्या ?" " नाही साबजी ..." " फिर चाय कहांसे लावोगे... ? " " लाऊंगाजी आस पडोससे ... किसीके घरसे... " " और पैसे..." " साबजी ने बोलने के बाद ... पैसे लेनेकी किसकी मजालजी ? " " लेकिन ऐसे कैसे ... कुछ किसीके यहांसे लानेका और वहंभी बेदाम ..." " साबजी ... ईहांकी पब्लीक बहुत येडी है ... जबरदस्ती दिया तो भी पैसे नही लेवेगी... फिर हमराभी क्या जाता है.... बेदाम तो बेदाम " वह ताली लेनेके लिए गणेशके सामने हाथ करते हूए बोला. गणेशने उसके फटे पुराने और मैले कपडेकी तरफ और उसके पसीनेकी बदबुभरे शरीर की तरफ देखकर अपना ताली लेनेके लिए सामने जाता हूवा हाथ रोक दिया. साफ झलक रहा था की वह गणेशको खुलाना चाहता था. फिरसे दरवाजेमें कुछ हरकत हुई.

गणेशने और पांडूने उधर देखा. उन्होने देखा की आखिर खराडे साहब आ गए थे. खराडे साब मतलब सफेद पैजामा और उपर रेशमी शर्ट , मुंहमें पान, तेल लगा चिकनाई भरा चेहरा, सरपर पतले हूए लेकीन अबभी पुरी तरह काले - तेल लगे हूए बाल. चलो आगए एक बार खराडे साब... " नमस्कार साबजी..." पांडूने नमस्कार किया. पांडूके नमस्कारकी उपेक्षा करते हूए आए बराबर उन्होने वही एक कोनेमें मुंह मे भरे पान की पिचकारी मारी. " अरे क्या करे... घरसे सुबह ही निकला लेकिन देखो कैसे आते आते दोपहर हो गई... ." कुर्सीपर बैठते हूए वे गणेशरावकी तरफ देखते हूए बोले. गणेश सिर्फ उनकी तरफ देखकर मुस्कुराया. उसे मालूम था की उनसे अब देरसे आए बात के लिए बहस करनेसे सिधे चार्ज हॅड ओवर करनेके बारेमें बात की जाए तो सब कुछ उतनाही जल्दी होगा. नहीतो और एक दिन लगेगा. " कितना समय लगेगा चार्ज लेनेको ..." " उसका क्या है गणेशराव ... मुझे देनेमे कुछ समय नही लगेगा... पांच मिनिटका काम है... लेकिन तुम्हे लेनेमे कितना समय लगता है यह तुम देखो... " खराडे साहब मानो अपने खुदकेही जोक पर हंसते हूऎ टेबलके निचे पैर लंबे करते हूए बोले. पांडू आगे आगया और उन्होने अपनी बॅग पांडूके हाथमें थमा दी. पांडूने वह बॅग बगलमें दिवारमें बने बिनादरवाजेकी अलमारीमें रख दी. वहां अलमारीमें औरभी बहुत धुलमें पडे कागजाद रखे हूए थे. कोनेमें एक गोदरेजकी अलमारी थी. उसमें सब महत्वपुर्ण फाइलें रखी होगी... गणेशने सोचा. अभीभी खराडे साहब कामके बारेमें कुछ नही कर रहे है यह देखकर गणेश बोला, " तो शुरवात करे...." " रुको भाई ... ऐसीभी क्या जल्दी है.... पहले आरामसे चाय पिएंगे... और फिर कामके बारेंमे सोचेंगे.... सरकारी काम अगर ऐसेही फटाफट होने लगां तो कैसे होगा... तुम अभी नये हो... बच्चे हो... हो जायेंगी धीरे धीरे आदत... मैभी नया था तब ऐसे ही था... तुम्हारे जैसे... लेकिन सच कहूं ... बहुत गुस्सा आता था पहले... सरकारी लोगोंका ... मैनेतो सारी सिस्टीम बदलनेकी ठान ली थी.... लेकिन अब देखो... निकले थे सिस्टीमको बदलने .... और खुद बदलके रह गए... " खराडे साहबकी बडबड शुरु होगई. गणेश सिर्फ सुन रहा था. उसे मालूम था की बोलकर कुछ नही होनेवाला. उलटी औरभी देरी हो जाती. " ए पांड्या ... जरा शांताबाईके यहांसे चाय लेकर आ" खराडे साहबने आदेश दिया. पांडू तुरंत दौडते हूए बाहर चला गया. खराडे साबने अब बैठे बैठे ही अपनी कुर्सी पिछे खिसकाई और आरामसे बैठते हूए पुछा, " तो... यही रहोगे या अपडाऊन करोगे ?" " यही एक कमरा दिया है सरपंचजीने " " अच्छा... सरपंच बहुत अच्छा आदमी है यहां का" खराडे साहबने इधर उधर कोई है तो नही यह देखा और जितना हो सके उतना गणेशके पास उपना मुंह लेकर कहा, " तुम हो इसलिए एक पर्सनल मशवरा देता हूं ..." गणेश खराडे साहब क्या बोलते है इसकी राह देखने लगा. " यहां के लोग... बहुत बुरे है .. यहां किसीके झमलेमें मत पडो... यहां हम भले और हमारा काम भला ऐसे रहना पडता है.... एक को सलाह दो तो दुसरेको बुरा लगता है... और दुसरेको दो तो तिसरेको गुस्सा आता है... अब क्या बोलू तुम्हे ... बहुत बुरा गांव है ये... मतलब ... मेरे पुरे नौकरीके अबतक के कार्यकालमें मैने इतना बुरा गांव कही देखा नही " खराडे साहब बोल रहे थे. गणेशको खराडे साहबकी फालतु बकवास सुननेमें बिलकुल दिलचस्पी नही थी. उसे कब एकबार चार्ज लेकर कामपर लग जाता हूं ऐसे हो गया था. " सब फाईल इस अलमारीमें रखी होगी ... नही ? ..." गणेश फिरसे असली बातपर आते हूए बोला. खराडे साहब कुछभी बोले नही. फिरसे एकबार कोनेमें जाकर पानकी पिचकारी मारकर आगए. " आलमारीकी चाबी आपके पासही होगी ... नही? ... " गणेश फिरसे बोला ताकी खराडे साहब कुछ जल्दी करे. " क्या

भाईसाब... आप तो बहुत ही व्याकुल हो रहे हो... मेरी बात मानो ऐसी सिन्सीयारीटी गव्हर्मेंटमें कुछ कामकी नही ... कभी कभी तो ऐसी सिन्सीयारीटी हमारे लिए ही खतरा बन जाती है... मतलब ये मेरे अनुभवके बोल है... मै तो बोलता हूं ये बोल लिख लो... " गणेशको अब इस आदमीको कैसे हॅन्डल करे कुछ सुझ नही रहा था. उसे चिढभी आ रही थी और हंसीभी आ रही थी. लेकिन चिढकर काम नही बननेवाला था और हंसनेसे तो और भी खतरा था. उलटा काम बिगड सकता था. आखिर गणेशने अपने पल्ले बांध लिया की भले दो दिन क्यों ना लगे ... लेकिन खराडेसाहब के अनुसारही आगे चलना चाहिए. वैसेभी उनके पास कौनसा दुसरा रास्ता था. ?. उधर खराडे साहब की फालतु बकबक चल रही थी और इधर गणेश एक अपने अलगही दुनियामें रममान हुवा था की जिसमे उसे खराडे साहबकी बकबक तो सुनाई दे रही थी लेकिन चिढभी नही आ रही थी और हंसीभी नही आ रही थी.

गणेशकी पुरी दोपहर खराडे साहब की बकबक सुननेमें और ऑफीसकी सारी फाईले देखनेंमें गई. अपेक्षानुसार आज पुरा दिन चार्ज हॅंडओव्हर नही हुवा था. शायद और एक दिन लगनेकी उम्मीद थी. और खराडे साहबकी बकबक अगर ऐसीही चलती रही तो शायद दो दिनभी लग सकते थे. खराडे साहबके बातोंके सुरसे एक बात साफ थी की उनकी यहां और कुछ दिन रहनेकी इच्छा थी. क्योंकी उनके गावसे यह गांव नजदिक होनेके कारण यहां नौकरी करना उन्हे सुविधाजनक था. उधर गांवमें अपनी खेतीकी तरफ भी वे खयाल दे सकते थे. उनकी बातोसें और एक बात पता चली की उनका तबादला करनेमें यहांके गांववालोका बहुत बडा हाथ था. इसलिए उनकी बातोंमें गाववालोंके लिए कुछ जादा आदर नही दिखाई दे रहा था. शामको कामसे काफी थकनेके बाद गणेशने अपने कमरेमें आकर थोडा आराम करनेकी सोची और फिर आरामके बाद रातके खानेके लिए फिरसे सरपंचजीके यहां तो जानाही था. उसने कमरेका ताला खोला. अंदर जाकर दरवाजेके पिछेका इलेक्ट्रीक का बटन दबाया. लाईट जल गया लेकिन डीम . साला देहातमें ये इलेक्ट्रीकका झमेला है ही ... भले डीम क्यों ना हो ... इलेक्ट्रीक तो है ना ... वही बहुत होगया.... सरपंचके नौकरने गद्दी डालकर उपर चद्दर वैगेरे डालकर पुरी तरह से तैयार की हुई देखकर उसे अच्छा लगा. कमरेमें आते हूए सामने मधुराणीके दुकानकी तरफ देखना उसने जानबुझकर टाला था. अंदर आतेही उसने सामनेका दरवाजा अंदरसे कुंडी लगाकर बंद कर दिया और खुदको सोनेके लिए बिस्तर के हवाले कर दिया. वह बिस्तरपर अचलसा पडा रहा. वह बिस्तरपर देखनेकोतो अचल सा पडा था लेकिन उसके विचार रुकनेको तैयार नही थे. तन थक गया था लेकिन दिमाग थकनेके लिए तैयार नही था. वह सोचने लगा.... आज पुरा दिन सरपंचजीके साथ घुमनेमे और आफिसका काम करनेमें और खराडे साहबकी बकबक सुननेमें चला गया था. लेकिन ऐसा एकभी पल नही था की जब मधुराणी उसके मष्तीश्क के पटल से हट गई हो. पुरे वक्त वह उसके साथ उसके दिमागमें थी. उसकी वह उत्कट आंखे, उसकी वह शरारती हंसी, रह रहकर उसकी आंखोके सामने आती रही थी. और अबभी उसका वही हाल था. उसने उसे अपने दिमाग से झंझोरकर निकालनेके प्रयासमें करवट बदली. लेकिन उसके विचार थे की थमनेका नाम नही ले रहे थे. उसने सोचा की एखाद सिगरेट पी जाए ... तो शायद सुकुन मिले... उसे दिनमें कमसे कम एक या दो सिगरेट पिनेकी आदत थी. और आज उसने एकभी नही पी थी. लेकिन सिगरेट पिना मतलब साथमें दुकानपर जाना आही गया. लेकिन बादमें उसे क्या लगा क्या जाने, वह झटसे उठ गया. मै उससे ऐसे कितने दिन बचने वाला हूं..... किसी

समस्यासे बचनेके लिए उससे दुर भागनेसे उसका सामना करना कभीभी उचीत होता है... वह उठकर खडा हो गया, बाथरुममें गया. मटकेसे ठंडा-ठंडा पाणी लेकर हथेलीसे मुंह पर छिडका. बगलमें पितलका लोटा रखा था. उससे मटकेमेंसे पाणी लेकर उसने अपने हाथ पैर पर डाला. फिर वैसेही वापस आकर अपने बॅगके पास चला गया. बॅग खोली. बॅगमध्ये उपरही साफ सुथरे तरीकेसे रखा हुवा तौलीया था. उसने वह निकाला. मुंह पोंछ लिया. मुंह पौछते हूए टावेसे आ रही वाशींग पावडर की सौंधी सौंधी खुशबुसे उसके दिलको ठंडकसी महसूस हूई. कुछ क्षण के लिए क्यों ना हो उसे अपने बिवीकी याद आगई. उसने बॅगसे सारे कपडे उठाकर बॅगकी तहमें सबसे निचे देखा. वहां उसका बिवी और लडकेके साथ खिंचा फॅमीली फोटो रखा हुवा था. दूर जानेके बादही अपने लोगोंका महत्व महसुस होता है... उसने सोचा और फिरसे सारा सामान बॅगमें ठिकसे रख दिया. अब वह खडा होकर हाथपैर पोछने लगा. हाथपैर पोछनेके बाद उस गिले तौलीएको कहां सुखनेके लिए टंगाया जाए इसके लिए जगह ढूंढने लगा. दिवार पर उसे एक जगह एक अंकुडा दिखा. उसने वह तौलीया वहां सुखनेके लिए टंगा दिया. तौलीया लटकाते हूए उसका ध्यान खुली खिडकीसे बाहर दुकानकी तरफ गया. दुकानपर अब काफी भिड इकठ्ठा हो गई थी. शाम का वक्त होनेसे शायद. चबुतरेपरभी लोग समुह बनाकर बाते कर रहे थे. उन समुहमें कोई बिडी फुंक रहा था तो कोई चिलम भर रहा था तो कोई तंबाकू मसल रहा था. दरवाजेके पास जाकर उसने चप्पल पहन ली और दरवाजा खोलकर , दरवाजेको ताला लगाकर, वह बाहर निकल गया. बाहर चबुतरेपर बैठे काफी लोगोंकी चिकित्सक नजरोने उसे घेर लिया. फिरसे लोग अपने अपने कामोंमें मशगुल होनेके बाद वह एक समुहके करीब चबुतरेपर अकेलाही बैठ गया. वह समुह शादीको आए जवान लडकोंका था. लडके छुपछुपकर दुकानके गल्ले की तरफ देखनेमें मशगुल थे. गणेश, उसका उस लडकोंकी तरफ बिलकुल खयाल नही ऐसे जताते हूए वहां बैठा रहा. " इसेतो खेतमाँ ले जाकर मसलना चाहिए .. " उस समुहसे एक मधुरानी की तरफ देखते हूए बोला. " देखियो जादा मसलेगा तो घुटने फुट जावेंगे " दुसरेने कहा. फिर सारा समुह जोरसे हंसने लगा. ' शीशी .... ए लडके तो बहुतही घटीया किस्म के लगते है... ' गणेशने मनही मन सोचा. और वह वहांसे उठकर मधुराणीके दुकानके सामने जाकर कब खडा हुवा उसेभी पता नही चला. मधुराणी उसकी तरफ देखकर मंद मंद मुस्काई. दिनभर दुकानपर बैठनेके बादभी ना उसकी हरकतोंमें ना उसकी हावभावोंमे कुछ थकावट दिख रही थी. अबभी वह किसी खिले हूए फुलकी तरह तरुण ताजा लग रही थी. " बोलो साबजी क्या दूं " उसने कहा. " थोडी एक वील्स चाहिए थी... " " थोडी क्यूं... पुरीही ले लियो जी " उसने मजाकिया अंदाजमें कहा और खिलखिलाकर हंसने लगी. गणेशभी उसके साथ हंसने लगा. " ए एक व्हील देइयो बाबूजी को " उसने अपने नौकरको फर्माया. वह नौकर लडका एक एक ग्राहक को सामान देनेमें व्यस्त था. मतलब उसे और थोडा समय लगने वाला था..... गणेशने अपने आसपास - इर्दगीर्द एक नजर दौडाई. वहां औरभी कुछ ग्राहक खडे थे. उनमेंसे एक 7-8 सालकी सुती मटमैला, जगह जगह फटा और मरम्मत किया हुवा फ्रॉक पहने हूए एक प्यारीसी लडकी खडी थी. उसने सरको काफी मात्रामें तेल लगाया हुवा था और उसकी छोटी छोटी दो चोटीयां मैले रिबनसे बंधी हुई थी. उसके हाथके उंगलीमें रस्सीसे बंधी हूई एक कांच की शीशी लटकी हूई थी. " ताई... एक छताक गोडतेल " वह लडकी मधुराणीकी तरफ देखकर बोली. मधुराणीभी उसकी तरफ बडे लाड प्यारसे देखते हूए बोली. " देती हूं ... गुडीया थोडा रुकियो तो ... " मधुराणी उसका

गाल पकडते हूए बोली. " बर्फहुर्फुतर्फ दिर्फीनोर्फो बार्फादर्फ दिर्फीखीर्फी " मधुराणी इतने जल्दीमें उसे कुछ बोली. " मार्फामार्फाकेर्फे गार्फावर्फ गर्फईर्फी थीर्फी ' उस लडकीनेभी कुछ जवाब दिया. गणेश मंद मंद मुसकाते हूए सब देख सुन रहा था. लेकिन उन्होने क्या कहा गणेश के कुछभी समझमें नही आया था. " क्या?... क्या बोले आप लोग ...? " गणेशने उत्सुकतावश पुछा. " कुछ नाही ... वह हमरी खास बोली है जी ... " मधुराणी नटखटसी हसती हुई उस लडकीका फिरसे गाल पकडती हुई बोली. शायद वह उनकी कोई सांकेतीक बोली थी. गणेशको याद आया... उसके बचपनमेंभी उसकी बहने ऐसीही कुछ अजीब भाषामें उसके सामने बोलती थी. और उसने पुछा तो उसे कुछ एक नही बताती थी. उसने बहुत कोशीश की थी, लेकिन उसकी बहनोंने आखरी तक उसे उस भाषा का राज नही बताया था. उस छोटे लडकीके बगलमें एक धोती पहनी हूई बुढी महिला खडी थी. और उसे लगकर एक साडीसी धोती पहनी हुई और एक, शायद मुलाजीम महिला खडी थी. आसपास देखते हुए अनायासही गणेश का खयाल उपर आसमानकी तरफ गया. काफी अंधेरा छा गया था. तभी रास्तेपर सिमेंटके पोलपर टंगे इलेक्ट्रीक दिए जल गए. गणेशने गौर किया की चबुतरेपर बैठे काफी लोगोंने एक हाथसे क्यो ना हो उन दियोंका अभिवादन किया था. गणेश फिरसे अंतर्मुख अपनी सोच शृंखलामें लिन हो गया. उसने महसुस किया की अब जब वह मधुराणीके सामने खडा था और उसकी तरफ देख नही रहा था तब उसके दिलकी बेचैनी थोडी कम सी हुई थी. " ये लो साबजी " उसकी मधूर स्वरसे वह फिरसे अपनी सोच से बाहर आ गया. मधुराणीने उसके सामने लकडीके बक्सेपर रखे व्हील साबुनकी तरफ देखकर गणेश जोर से हंस पडा. " क्या हुवाजी ? " उसनेभी हंसकर पुछा. " व्हील साबन नही... वील्स सिगारेट मांगी थी मैने. " " अच्छा अच्छा ... साबजी ... ई हां ब्रिस्टॉल और चारमीनारही मिलती है ... व्हील ... या क्या कहते है उसको ... व्हील्स ई हां कोई नाही इस्तेमाल करत " उसने कहा. " अच्छा तो एक ब्रिस्टॉल दो ... और एक माचीसभी देना " " ए साबजी को ब्रिस्टाल और एक माचिस देइयो " उसने अपने नौकरसे कहा. वह एक एक सामान के बारेमें बोलती और वह नौकर सिर्फ सुन लेता था. ना 'हा' कहता ना 'ना'. लेकिन उसका बराबर ध्यान रहता था. नौकरने ब्रिस्टॉल और माचिसके बारेमें सुना लेकिन अब उसने उस छोटे बच्चीसे वह कांच की शीशी ली - तेल देने के लिए. " अरे इनको पहले देइयो ... कितनी देर से खडे है बेचारे... " उसने उसे टोका. उस नौकरने सिर्फ उसकी तरफ देखा और वह शीशी वैसेही अपने हाथ मे रखकर एक ब्रिस्टॉलका पाकीट और एक माचिस लेकर गणेशके हाथमें थमा दी.

एक कोनेमें खडे होकर गणेश सिगारेट के दिर्घ कश मारने लगा. तब कहा उसके जी को सुकुन महसुस हो रहा था. उसके बगलमेंही एक जवान लडकोंका समुह सिगारेट पीनेमें लगा हुवा था. अंधेरेका फायदा उठाकर वे किसी भूखे भेडीएकी तरह मधुराणीके दुकानकी तरफ देख रहे थे. लेकिन गणेश उनके बगलमेंही कोनेमें खडा होनेसे उसे सब दिखाई दे रहा था. " ए राम्या जरा कनेक्सन देरे..." उनमेंसे एक अपने मुंहमें सिगारेट पकडकर उसे जलानेके लिए दुसरेसे बोला. दुसरेने अपने मुंहमेंसे जलती सिगारेट उसके हाथमें थमा दी. उसने वह जलती हुई सिगारेट अपने मुंहमें पकडे सिगारेटके सिरेसे लगाकर दो चार जोरसे कश लगाकर सुलगाई और अपने दोस्त की जलती सिगारेट उसे वापस कर दी.' कनेक्सन' का मतलब समझकर गणेश मन ही मन मुस्कुराया. लंबे लंबे गहरे कश मारनेसे गणेशकी सिगारेट जल्दीही खतम हूई. उसने जेबसे दुसरी सिगारेट निकालकर उसे पहली की सहाय्यतासे सुलगाया -- मतलब उन देहाती

लडकोंके अनुसार 'कनेक्शन' दिया. फिरसे वह मुस्कुराया. तभी गणेशको किसीका जोरजोरसे चिल्लानेका या फिर झगडने का आवाज आया. " उस ग्रामसेवक के माका ---- ... " " मादर...द साला " गणेशके नामका कोईतो उध्दार कर रहा था. उसकीतो दिलकी धडकनही तेज हो गई. पहले दिनही उसे कोई गालीयां दे रहा है यह सुनकर वह विचलीत हो गया. शायद पहले वाले ग्रामसेवकको कोई गालीयां दे रहा होगा. उसने सोचा और जिस दिशासें वह आवाजे आ रही थी उस दिशामें देखने लगा. पहलेके ग्रामसेवककोही जो भी है वह गालीयां दे रहा होगा... वैसेभी पहलेके ग्रामसेवकाका और गांव के लोगोकां कुछ खास नही जमता था - जो उसे आजही पहलेके ग्रामसेवकसे पता चला था. ... उधर सामने गहरा अंधेरा था. शायद सामने उस गलीके आगे, सरपंचके घरके पास कोई तो झगड रहा होगा. " सालेका हुयी गवा शुरु ... रामायण... " बगलमें खडे लडकोंके समुहसे कोई बोला. मतलब पहलेके ग्रामसेवक के बारेमें अबभी भला बुरा कहा जा रहा था... गणेशने सोचा. चलो .... वहां जाकरतो देखते है... क्या झमेला है? .... वह जिधरसे गालीयोंका आवाज आ रहा था उस दिशामें चलने लगा. गणेशने देखा की एक आदमी अंधेरेमें खडे होकर ग्रामसेवकको गालीयां दे रहा है. उसने जरा नजदिक जाकर देखा तो वह तो हक्का बक्का और दंग रह गया. क्यों की. वह सदा था. सुबह उसका सामान उठाकर उसे सरपंचके घर ले जानेवाला सदा! उसे तो अबभी अपने आखोंपर विश्वासही नही हो रहा था. उसके बोलनेके ढंगसे और हावभावसे यह स्पष्ट था की वह पीकर टून्न हो गया था. गणेश उसे दिखते ही उसने अपना रुख गणेशकी तरफ मोड लिया. " ई देखो... ई ग्रामसेवक ... खुदको कोई लाटसहाब समझता है.... ... इसकी तो मांका --- .... एस्टी स्टँडसे मुझसे सामान उठवाया ... मादर ..द साला. " सिधे सिधे गणेशपरही गालीयोंकी बरसात होते देखकर पहलेतो वह उलझन में पड गडबडा गया. उसे इस स्थितीसे कैसे निपटा जाए कुछ समझ नही आ रहा था. सदाका उसपर गालीयोंका हमला जारी था. नही अब बहुत हो चुका.... गणेश का गुस्सा अब सातवे आसमानपर चढने लगा था. सदाके गालीयोंकी तीव्रताही इतनी थी की कोईभी भडक जाए. गुस्सेसे बेकाबु होकर गणेश अब सदाकी तरफ चलने लगा. अब उसे उसके कानके निचे लगानेकी जल्दी हो गई थी. चलते हुए गुस्सेसे उसका पुरा बदन गरम होगया था. उसका चेहरा लाल लाल होगया था. होठ थरथरा रहे थे. हाथ पैर भी कांप रहे थे. अब वह सदाके एकदम सामने जाकर खडा हो गया था. फिरभी सदाके बर्तावमे कुछ तबदीली नही आई. उसका जोर जोरसे गालीयां देना जारी ही था. गणेशने अब अपने मन को कठोर कर ठान लिया की, जो होगा देखा जाएगा, लेकिन इस आदमीको मै अब बहुत धोऊंगा. उसने अपना दाया हाथ उठा लिया और वह अब जोरसे सदाके गालपर तमाचा दे इसके पहलेही पिछेसे उसके कंधेपर किसीने हाथ रख दिया. उसने पलटकर देखा. वह सरपंचजी थे. " गणेशराव ... थोडा इधर बगल में आइयो " सरपंचजी गणेशके कंधेपर हाथ रखकर उसे एक तरफ ले गए. " अरे गणेशराव... सुबे इसने आपको मेरे घर लाया ... तभी मुझे वह बात खटक गई रही ... " " क्यों क्या हुवा ? " गणेशने असमंजसमें पुछा. " ये सद्या एकबार इसने पी ली तो इका अपने उपर कोई काबु ना रहे है ... फिर उसे कुछ समझता नाही ... फिर दिनमें जिसे जिसे मिला उन सबको यह रंडवा गालीयां बके है... " " बडी अजिब केस दिखती है ... " गणेश अपने माथेपर आया पसिना पोछते हूए बोला. " इसका कुछ बंदोबस्त क्यो नही लगाते हो आप लोग ... " वह आगे गुस्सेसे बोला. " ई क्या कहते हो गणेशराव... सुबे तो

बोल रहे थे बहुत सज्जन आदमी है " सरपंच उसे छेडते हुए बोले. " हां कहा तो था... लेकिन इतनाभी सज्जन होगा ऐसा कभी सोचा नही था. " गणेश जबरदस्ती हंसनेकी चेष्टा करते हूए बोला.

सुबह काफी देरसे गणेश निंदसे जागा. आज गणेशको यहां आकर पुरे दो दिन हो गए थे. उसने आंखे मिचकाकर देखा तो सुरज की किरणे खिडकीसे कमरेके अंदर झांक रही थी. बाहरभी लोगोंकी आवाजें आ रही थी. देर राततक गणेश सो नही पाया था. कल रातभी यही हाल था. रातमें रह रहकर मधूराणीकी उसके दिलको आरपार करने वाली नजरें उसे सो नही दे रही थी. वह एकदमसे उठ खडा हुवा और जल्दी जल्दी खिडकीके पास चला गया. खिडकीसे दुकानपर बैठे मधुराणीकी एक झलक दिखनेके बाद कहा उसके दिलने सुकुन महसुस किया. उसका इधर ध्यान नही था. वह अपने काममें मग्न थी . ये मुझे क्या हो रहा है ?.... गणेश सोचने लगा. पहले कभी मुझे ऐसा नही हुवा था .... किसी स्त्री का इतना आकर्षन !... ये कुछ ठिक नही ... शायद अपनी बिवीके विरहके कारण यह होता होगा .... लेकिन क्या इसे विरह कहा जा सकता है ?... मुझे यहां आकर मुश्कीलसे दो या तिन दिन तो हूए है .... हो सकता है.... अपनोकी कमी उनसे जुदा होनेपरही महसूस होती है.... वह धीरे धीरे कदम बढाते हूए हूए अपने बॅगके पास जाने लगा. लेकिन उसका मन खिडकीसे हटनेको तैयार नही था. भारी कदमोंसे वह बडी मुष्कीलसे अपने बॅगके पास चला गया. बॅग खोली. बॅगसे उपरका सामान उठाकर बॅगके सबसे निचे हाथ डालकर उसने अपना, बिवीका और उसके लडकेका फॅमीली फोटो बाहर निकाला. फिर न जाने कितनी देर तक वह उस फोटोको बडी प्यारसे निहारता रहा . इतनी प्यारीसी बिवी होनेके बाद मेरा मन ऐसे विचलित क्यो होता है ?... नही. मुझे मेरे मनपर काबू रखना जरुरी है .... उसने अपना इरादा पक्का किया. गणेश नहा रहा था. अपने मन का इरादा और निर्धार पक्का करनेके बाद उसे अब अच्छा लगने लगा था. लेकिन यह इरादा टिकना चाहिए. नहाते वक्त उसके दिमागमें एक तरकिब आ गई . ये सारा जादू मधुराणीके आखोंका और उसकी दिलको भेदनेवाली नजरोंका है .... अगर मैने उसकी नजरोसे नजर मिलाना टाला तो कैसा रहेगा?... तो शायद मेरा इरादा टिकना मुमकिन है ... मुमकिन नही ... मुझे मेरा इरादा टिकानाही पडेगा... इतनी देर तक हौले हौले नहा रहे गणेशको अब जल्दी हो गई थी. अभी नहाना धोना निपटाकर मै उसकी दुकानमें जाता हूं. यूंभी उसे घरमे लगनेवाली कुछ महत्वपुर्ण चिजे खरीदनी थी. उसने तय किया की अब उसके दुकानमें जाना है. कुछ सामान खरेदी करेंगे. वह अगर बोली तो --- उसे बात भी करुंगा. लेकिन कुछ भी हो उसकी आखोंसे आंखे नही मिलाऊंगा. तो होगया तय .... नहाना धोना निपटाकर गणेशने झटसे कपडे पहन लिए. दिवारपर टंगा थैला निकाला और जल्दी जल्दी निकल गया - मधुराणीके दुकानपर. जाते हूए उसके मन में एक विचार आया. यह कैसी जल्दी ... यह कैसी तडप !... उसकी तरफ देखनेकी भी तडप और अब उसके नजरोंको टालनेकीभी तडप .... सबकुछ कैसे अजिब ही लग रहा था. खाली थैला एक हाथमें लेकर गणेश उसकी नजरोंकों प्रयत्नपुर्वक टालते हूए उसके गल्लेके सामने खडा हो गया. उसने उसके हाथमें थमा थैला नौकरके हवाले कर दीया. " बोलो साबजी ... क्या मांगता है " मधुराणी गणेशके आंखोमें आखे डालकर बोली. गणेश उसकी गहरी नजरोंसे बचते हूए उसकी सरसे उपर पिछे देखते हूए बोला, " यह लीस्ट है " उसने चिजोंकी लीस्ट मधुराणीके हाथमें दी. " साबजी .. हमरे दुकानमा लिस्टवा लेकर आनेवाले आप पहलेही गिराइक होंगे जी " उसने लिस्ट हाथमें लेकर उलट पुलटकर देखते हूए कहा. फिर लिस्ट उसे वापस करते

उसने कहा, " तो फिर आपही पढोनाजी जोरसे... मैने पढा क्या या आपने पढा एकही बात हुई गवा " वह कागज वापस लेकर पढने लगा . " लक्स एक .. रिन एक... चहापत्ती सव्वाशे ग्रॅमका एक पॅक .. शक्कर एक किलो ...अगरबत्ती एक पॅक ... अच्छा दो जरा ... सुगंधीत ... " नौकर जल्दी जल्दी सामान निकालने लगा. " थोडा धीमे जी .... उसे सामान तो निकालवा देइयो .. नाही तो गडबड हो जावेगी ... उस दिन की तरहा .." मधुराणी मधूर सी हंसते हूए बोली. उसके मोतीजैसे सफेद दांतकी तरफ देखकर वहभी हंस दिया. लेकिन वह उसकी नजरोंसे प्रयत्नपुर्वक बचता रहा. नौकरने सारा सामान थैलेमें भरकर थैला गणेशके हाथमें थमा दीया. तभी वहा सदा आगया. गणेशने सदाकी तरफ देखकर देखा अनदेखा कर दिया. परसोंकी गालीयां वह अबभी भूला नही पाया था. सदा खुद होकर गणेशके पास गया. " नमस्कार साबजी " सदाने उसे अदबके साथ अभिनंदन किया. गणेशने सदाकी तरफ ध्यान नही दिया. सदाका उस रातका रुप और अभिका रुप इसमें जमिन अस्मानका अंतर था. इसलिए सदाके साथ किस तरहसे पेश आया जाए गणेशको कुछ समझ नही रहा था. गणेश अपना सामानका थैला लेकर जाने लगा. " लावोजी इधर देइयो ... मै लेता हूं थैला " सदा गणेशके हाथसे थैला लेते हूए बोला. " नही ... रहने दो" लगभग उसके हाथसे थैला छिनकर लेते हूए गणेश बोला. मधुराणी खिलखिलाकर हंस पडी. गणेश जैसे अपने कमरेकी तरफ जाने लगा वैसे मधुराणी बोली - " फिर्फीरर्फ कर्फबर्फ आर्फावोर्फोगेर्फ़े " " क्या ... क्या कहा ?" गणेश पलटकर लेकिन उसके नजरोंको टालते हूए बोला. " कुछ नाही .... लगता है हमरी बोली आपकोभी पढवानी पडेगी ... " मधुराणी मटककर बोली. गणेशको उसके इस मटकनेसे उसकी आखोंमे देखनेका पलभरके लिए क्यों ना हो प्रलोभन हुवा. पर नही ... नजरोंके तिर निष्प्रभ हूए देखकर शत्रूपक्षने यह दुसरा हथियार इस्तमाल करनेकी सोची है ... शायद... गणेश बडी मुश्कीलसे अपने आपपर काबू पाकर, सदाको टालते हूए अपने कमरेकी तरफ चल दिया. रसद से भरा हूवा थैला लेकर कमरेमें प्रवेश करनेके बाद प्रथम गणेशने सामनेका दरवाजा बंद कर दिया. खिडकीसे उसने झांककर बाहर देखा. सदा चला गया था. उसने राहत की सांस ली. फिर उसका ध्यान मधुराणीकी तरफ गया. मधुराणी अपने काममें व्यस्त दुकानके गल्लेपर बैठी थी. गणेशने खिडकीसे हटकर थैला एक कोनेमें रख दिया; शर्टके उपरी जेबसे सिगारेटका पाकिट निकाला. उसमेंसे एक सिगारेट निकालकर उसने वह माचिससे सुलगाई. वह अब सिगारेटके लंबे लंबे कश भरने लगा. वह इस बातसे खुश था की उसने दुकानमें मधुराणीकी आंखोमें आखे डालकर एक बारभी नही देखा था. उसके दिलमें उठी कसकभी अब उसे थमी थमीसी और ठंडी पडी महसुस हो रही थी. उसे उसकी नजरोंके सारे तिर निष्प्रभ करनेका विजयी आनंद हो रहा था.

आज शुक्रवार. गणेशको यहां आकर पांच दिन हूए थे. सुबह नहा धोकर वह जल्दी जल्दी अपना सामान समेटने लगा. उसकी हर हरकतमें एक उत्साह झलक रहा था. क्योंकी वह आज तालूकेकी जगह अपने घर वापस जा रहा था. अपने घर वापस जाकर अपने बिवी बच्चोंको मिलनेके मात्र कल्पना भरसे उसका सारा बदन रोमांचीत हो रहा था. और दुसरी खुशीकी वजह यह थी की पिछले तिन दिनसे मधुराणीके बारेंमे अपने बहक रहे मनपर अंकुश लगानेमें वह पुरी तरह

कामयाब हुवा था. पिछले तिन दिनोंमे मधुराणीसे रुबरु होनेके काफी मौके आए थे. लेकिन एकबारभी, गल्तीसेभी उसने मधुराणीके आंखोमें आखें डालकर नही देखा था. अपने इस उपलब्धीके लिए उसे अपने बारेमें बडा गर्व महसुस हो रहा था. उसे इस बातका भी अहसास हुवा था की पिछले कुछ दिनोंसे उसके मचल रहे जीने भी अब मानो सुकुनकी सांस ली थी. गणेश कपडे पहनकर लगभग तैयार हुवा था. तभी सामनेका दरवाजा बजा. उसने सामने जाकर दरवाजा खोला. सामने सरपर पगडीजैसा कपडा बंधा हुवा देहाती खडा था. उसने निचे धोती और उपर कपडेसे बना हुवा बनियन पहना था. गणेशने उसकी तरफ प्रश्नार्थक मुद्रामें देखा. " मालिक सामान उठाने के लिए भेज रहत " गणेशकी मुद्रा देखकर उस देहातीने कहा. " किसने ?... सरपंचजीने ? " " जी.." उसने कहा. गणेश दरवाजेसे हटतेही वह देहाती अंदर घुस गया. गणेशने कोनेमें रखे अपने बॅगकी तरफ निर्देश करते हूए कहा - '' वह उतनी एकही बॅग है .... वह लेकर तुम आगे निकलो... मै बस पिछेसे आया " " जी " उसने सरको बंधा हुवा कपडा छोडा. वह कपडा लपेटकर उसका गोलाकर बनाया और अपने सरपर रख दिया. फिर बॅग उठाकर उसने अपने सरके उपर उस गोलाकर बने लपेटे हूए कपडेपर रख दी. वह बॅग लेकर दरवाजेसे बाहर जाने लगा तब गणेश ने कहा, '' अरे... जरा संभालकर भाई ... नही तो उपर लगेगा " वह नौकर दरवाजेसे जाते हूए थोडा झुका और बॅग लेकर बाहर चला गया. उसके जातेही गणेशने दरवाजा बंद कर दिया. गणेशने कमरेसे बाहर आकर दरवाजेको ताला लगाया. उसके चेहरेसे और उसके हर एक हरकतसे उत्साह उमड रहा था. चलो अब एक बार बस स्टॉपपर जानेसे पहले एक सिगारेट पिते है... उसने सोचा. दरवाजेको ताला लगाकर वह मधुराणीके दुकानमें चला गया. अबतो उसे मधुराणीकी नजरोसे बचनेकी मानो आदतसी हो गई थी. " एक ब्रिस्टॉल " उसने एक रुपए का सिक्का मधुराणीके सामने रखे गल्लेपर रखते हूए कहा. आज मधुराणी कुछभी नही बोली . नहीतो हरबार गणेशसे वह कुछ ना कुछ बोलती थी. गणेशको पता नही क्यो अपराधी जैसे लगने लगा. मैने कुछ गल्ती तो नही कर दी... या फिर उसका दिल तो दुखाया नही?... फिर वह आज क्यो नही बोली?... कही मुझपर गुस्सा तो नही होगई... ?... या फिर मै घर जा रहा हूं इसकी वजहसे वह दु:खी तो नही महसुस कर रही है? .... नही ... नही... ऐसे कुछ नही होगा... मै फालतूही जरा जादाही सोच रहा हूं... और उसने बोलनाही चाहिए ऐसा थोडी है ?.... आज नही होगा बेचारीका मूड.... यह तो मेरी जबरदस्तीही होगई ... उसने एकसाथ अपने मनमें भिड करते विचारोंको झटकनेकी कोशीश की. मधुराणीने चुपचाप अपने पिछे रॅकमें रखा ब्रिस्टॉलका पाकिट निकाला और उसे खोलकर उसमेंसे एक सिगारेट निकालते हूए गणेशके हाथमें थमा दी. अचानक गणेशने चौंककर उसकी तरफ देखा. सिगारेटके अलावा औरभी किसी चिजका अहसास गणेशके हाथको हुवा था. जब वह संभला तब उसे अहसास हुवा की मधुराणीने गणेशके हाथपर सिगारेट थमाते हूए जानबुझकर हल्केसे उसका हाथ दबाया था. या फिर गल्तीसे दब गया था. ? यह जाननेके लिएही उसने उसकी तरफ देखा था. उसकी चेहरेपर एक मादक, घायल करनेवाली, रहस्यमय और उतनीही अर्थपूर्ण हंसी फैली हुई थी. गणेश उसकी उत्कट नजरोंमें उलझ गया था. उसका उसकी आखोमें आखें ना डालनेका दृढ संकल्प किसी अत्तर की तरह हवामें उड गया था. उसका दिल जोर जोरसे धडकने लगा. एकही पलमें सारा बदन पसिनेसे लथपथ हो गया. हडबडाकर उसने सिगारेट ली और वह बस स्टॉपकी दिशामें चलने लगा. उसको चलते हुए एक एक कदम आगे डालनाभी बडा भारी महसुस हो रहा था. उसका

एक मन कर रहा था की घर जाना रद्द कर दूं. लेकिन नही ... सरपंचके नौकरने अपना सामान आगे ले जाकर बस स्टॉपपर रखा था. अब अगर मै जाना रद्द करता हूं तो न जाने किसीको कुछ शक होगा... वह वैसेही भारी पैरसे चलते हूए नुक्कड तक चलता रहा. नुक्कडसे मुडते हूए कितनाभी अपने मनको नियंत्रीत करनेके कोशीशके बावजुद उसने मुडकर एक बार मधुराणीकी तरफ देखा. वह भी आमंत्रित करती हुई निगाहोंसे उसे देख रही थी. उसके नजरोंमें जुदाईका गम, और एक अदृष्य आकर्षित करनेवाली शक्ती थी. भारी मनसे वह बस स्टॉपकी तरफ निकल पडा. अब मुडकर देखाभी तो वह दिखने वाली नही थी, फिरभी उसने मुडकर देखा. वह उसको नही दिखाई दे रही थी. लेकिन उसने महसुस किया की वह उसके साथ साथ आ रही थी - दिल के किसी कोनेमें घर बनाती हूई !

समें धुल आ रही थी तो कभी बस उबड खाबड रस्ते के वजहसे हिल रही थी. बसमें काफी भीड थी और वह लोगोंकी फालतू बकबक. बस घाटीसे चल रही थी और उसकी वजहसे किसीकाभी जी मचलना लाजमी था. लेकिन आज गणेशको कुछभी महसूस नही हो रहा था. उसके हाथके स्पर्शसे ही यह हाल है तो ... तो आगे क्या होनेवाला है भगवान जाने ?... स्पष्ट है की वह मुझे उकसा रही है ... मतलब सिर्फ मुझेही उसके बारेंमे कुछ लगता नही तो... उसेभी मेरे बारेमें कुछ लगता है ... आग दोनो तरफ बराबर लगी हूई है... खट् खट् ... गणेशको कुछ बजे जैसा अहसास हुवा. लेकिन उसने उधर ध्यान नही दिया. क्योंकी उसे अपने सपनेसे जगना नही था. फिरसे खट् खट् आवाज आ गया. इसबार उसे किसीने हिलाया भी. तब कहा उसने होशमें आकर देखा. वह कंडक्टर था. " टिकट ..." वह फिरसे खट् खट् बजाता हुवा बोला. " जी... हां... हां ... " गणेशने हडबडाकर जेबमें हाथ डाला. एक पांचकी नोट निकालकर कंडक्टरके हाथमें थमाते हूए बोला, " एक उजनी दो " " भाई साब गाडी उजनीसेही निकली है ... " कंडक्टर हंसता हुवा बोला. " नही मतलब ... एक तालूकेके लिए टिकट दो " गणेश अपनी झेंप छिपाते हूए बोला. काफी बार इस गाडीपर यही कंडक्टर रहता था. गणेशको किसीने बताया था की उसका गांव इसी बसके रस्तेमेंही कही था और इसलिए वह यही गाडीपर हमेशा ड्यूटी लेता था. अपने गांवमें सुबह या शाम अक्सर गाडी रोककर वह अपना टिफीन कलेक्ट करता था. वह अपने गांव गाडी जरा जादा ही समयके लिए रोकता था. टिफीन लेनेके बहाने दो चार इधर उधरकी बाते भी होती थी. खट् खट् बजाते हूए उसने टिकट काटा और गणेशके हाथमें थमाकर वह फिरसे खट् खट् बजाते हूए आगे निकल गया. गणेशने वह टिकट अपने शर्टके उपरी जेबमें रख दिया और फिरसे वह खिडकीसे बाहर देखते हूए अपने सपनोमें लीन हो गया. "साहब उठो ... सो तो नही गए ?" किसीके आवाजसे गणेश हडबडाकर उठ गया. उसके कंधेको पकडकर उसे कोई झंझोर रहा था. गणेशने संभ्रमसे इधर उधर देखा तो गाडीमें बैठे सारे लोग उतर गए थे. गाडी बस अड्डेमें प्रवेश कर चुकी थी और वह अकेला अबभी गाडीमें बैठा हुवा था. उसे बस कंडक्टरने जगाया था. कंडक्टर तुच्छतासे उसकी तरफ देख रहा था. गणेशको अब शर्मींदगी महसुस होने लगी थी. अपने चेहरेके भाव छीपाकर उसने उपरसे अपनी बॅग निकाली और बससे निचे उतरने लगा. जबसे मधुराणीका मादक स्पर्श उसे हुवा था... नही जरूर उसने वह जानबुझकर किया होगा ... नही तो वह मधुरसी मुस्कुराती नही थी ... तबसे गणेश लगभग हवामें उड रहा था. उसके दुकानसे कब वह भारी पैरसे बस स्टॉप आया ... कब बस आई ... कब वह बसमें चढ गया और कब तालूकेके बस अड्डेमें पहुंच गई ... उसे कुछभी याद नही आ रहा था. उसकी मधूर हंसी, उसके कोमल स्पर्ष की कसक और उसकी पी

लेने वाली नजर ... सबकुछ जैसे अभी अभी घटीत हो गया हो ऐसा उसे लग रहा था. और वह सब उसकी नजरोंके सामनेसे हटते नही हट रहा था. गणेश बस से निचे उतर गया. उसके पिछे कंडक्टरभी उतर गया. बसचा ड्रायव्हर उतरकर कंडक्टरकी राह देखते हूए पिछले दरवाजेके पास खडा था. कंडक्टरने उतरने बाद गणेशको थोडा और आगे जाने दिया और दबे स्वरमें गणेशकी तरफ इशारा कर चिढकर ड्रायव्हरसे कहा - " येडांही है ... सारी बस खाली हो गई ... और देखता हूं तो ये जनाब खिडकीके बाहर देखते हूए बैठे हूए थे. .." ड्रायव्हर गणेशकी तरफ देखकर व्यंगपुर्वक हंस दिया. गणेशको उनका संवाद सब सुनाई दे रहा था लेकिन उनकी तरफ ध्यान ना देते हूए वह अपनी बॅग लेकर वहांसे चलता बना

गणेश तालूकेके जगह अपने घर आया. घरमें बीवी थी और एक सलोना लडका था. लेकिन उसका मन उधरही गांवमें अटका हुवा था - मधुराणीके पास. कब एक बार वापस जाकर मधूराणीके पास जाता हूं ऐसा उसे हो गया था. बिचमें छुटीयां थी इसलिए ... नही तो कबका वह उजनीको जाकर पहूंचा होता. और छुटीयोंके दिन जावो तो किसीको शकभी हो सकता है... छुटीयोंके दो दिन उसे दो महिने जैसे लंबे महसूस हो रहे थे. उसने अपना सामान पहलेसेही बांधकर रख दिया था - उतनाही समय बित जाएगा .. यह सोचकर. जितना अधीर होकर मै उजनीको जानेकी राह देख रहा हूं... उतनीही अधीरतासे... शायद उससेभी जादा अधीरतासे मधुराणीभी मेरी राह देख रही होगी... उसने सोचा... आखिर अपने मनमें जो उथल पुथल चल रही होती है... आदमीको वह भावनाएं जाहिर किए बिना चैन नही आता है... और इसलिएही मधुराणीने इशारेसे क्यों ना हो अपनी भावनाएं जाहिर की थी... शायद जबसे मेरा और उसका सामना हुवा तबसेही उसने मुझे अपने मनमें जगह दी थी... नही तो ... तबसेही उसकी नजरोमें इतनी उत्कटता मुझे महसुस नही होती... की जिसकी वजहसे मै भी उसकी तरफ खिंचता चला गया... उसका इस तरह मुझ पर मरना ... और इतने लोग छोडकर उसका मेराही चुनाव करना... इसका मतलब मुझमेंभी कुछ तो खासीयत होगी... उसे अपने खुदके बारेमें गर्व महसुस हो रहा था... वह कुछभी हो उसनेभी अपना हृदय मेरे सामने खोल दिया... यह सबसे महत्वपुर्ण... नही तो मै ही उसके पिछे किसी लंपटकी तरह घुम रहा हूं ... यह कुछ अच्छा नही दिखता था.... आखिर वह दिन आ गया. सोमवार. जिस दिनकी गणेश बडे बेसब्रीसे राह देख रहा था. आजभी गणेशको उजनी तक का सफर बिलकुल महसुस नही हुवा. पुरे सफर के दौरान उसे अपनी दोनो बाहें फैलाई हुई और उसका बेसब्रीसे इंतजार कर रही मधुराणीही आंखोके सामने बार बार दिख रही थी. बसमें उसके बगलमें कौन बैठा हुवा है... बसमें बैठे बाकी मुसाफीर क्या कर रहे है... खिडकीके बाहर क्या नजारा दिख रहा है... उसे किसी बात का होश नही था. ब्रेक लगनेसे बस झटका देकर रुक गई. उजनी आ गई थी. गणेशके चेहरेपर मुस्कुराहट झलकने लगी. आज बॅग लेकर भीडमें सबसे पहले उतरनेकी जल्दी गणेशकोही हुई थी और उसके लिए वह जी जान से प्रयास कर रहा था. किसी तरह वह बस से उतर गया. या यूं कहा जाए की भिडनेही उसे बाहरका रास्ता दिखाया था. बाहर आए बराबर उसने चारो तरफ अपनी नजरे दौडाई. हो सकता है... मधुराणीभी बस स्टॉपवर बेसब्रीसे मेरा रास्ता तकते हूए खडी हो... देखो मै भी कितना पागल हूं?... भला वह कैसे

आएगी यहां?... मेरा आनेका दिन उसे कैसे मालूम होगा?.... उसको ना पाकर उसने अपने आपको समझाया. तभी उसे सदा उसकी तरफ बढता हुवा दिखाई दिया. गणेशने झटसे उसे देखा - अनदेखा कर दिया. " अरे गणेशरावजी ... ... मैने तो पहचानाही नाही ही" सदा उसके सामने आकर बोला. गणेश उसे टालनेकी कोशीश करते हुए आगे बढने लगा. " ये क्या साब... किसी... ग... कचरेके ढेरसे सोकर उठे जैसे लगाई देवत है " सदा गणेशके पिछे पिछे चलते हूए बोला. उसके बोलनेसे गणेशके खयालमें आया था की ' किसी गधेकी तरह" कचरेके ढेरसे सोकर उठे जैसे लग रहे है आप' पहले वह ऐसे बोलने वाला था. लेकिन उसने 'गधेकी तरह' यह शब्द जुबापर लानेसे पहलेही झटसे निगल लिया था. गणेश ने रुककर अपने कपडेकी तरफ देखा. भिडसे सबसे पहले बाहर आनेकी चेष्टामें उसके सारे कपडे मसलसे गए थे. और खिडकीसे आने वाले धुलसे वह मलिन हो गए थे. इस बार धुलसे बचनेका होश कहां था उसे?. उसने अपने बालोंसे हाथ फेरते हुए .. अपने उलझे हूए बाल ठिक करनेकी कोशीश की. अब ऐसे हालमें मधुराणीके सामने जाना. उसे अपने आपकीही शर्म महसुस हो रही थी. " इधर लाईयो साबजी ... बहुत थक गए रहत ... ई का मै हुं ना ... सामान उठाइके वास्ते " सदाने कहा. " नही ... रहने दो " बोलते हूए गणेश जल्दी जल्दी अपने कदम बढाते हूए निकल पडा - मधुराणीकी दुकानकी तरफ. उसे कब एक बार मै मधुराणीको अपनी नजरोंसे पी लेता हूं ऐसा हो गया था.

सामने दिवार का कोना जैसे गणेशको दिखने लगा, उसके दिलकी धडकने तेज होने लगी. बस वह कोना पार करनेके बाद मुझे मधुराणी दिखाई देंगी. वह जल्दी जल्दी अपने कदम बढाने लगा. सदा अबभी उसके पिछे पिछे आ रहा था. लेकिन गणेशको ना सदाके अस्तित्वका होश था ना रास्तेमे दिख रहे लोगोंका. गणेश मधुराणीकी बस एक नजरभरके लिए मानो तरस रहा था. आखिर वह क्षण आ गया. कोना पार करतेही गणेशको गल्लेपर बैठी हुई मधुराणी दिखने लगी. वह अपने काममें व्यस्त थी. कब वह अपनी तरफ नजरभर देखती है, और कब मै उसकी शराबी नजरोंमें डूब जाता हूं ऐसा गणेशको होने लगा था. वह मधुराणीके ठिक सामने जाकर खडा हो गया. " बोलो गणेशरावजी ... क्या लेवेंगे ? .. सिगारेट?" मधुराणीने एकदम सहजतासे गणेशकी तरफ देखकर पुछा. गणेशको अपने मनही मनमें बन रहा मकान मानो ताशके पत्तोकी तरह ढह गया ऐसा महसुस होने लगा था. वह उससे एकदम किसी अजनबीकी तरह पेश आ गई थी, जिसकी गणेशको बिलकुल आशा नही थी. उस दिन जिस तरहसे उसने उसे जाते हूए रुखसत किया था, कमसे कम उससे तो उसे उसका ऐसा रुखा रुखा व्यवहार अपेक्षीत नही था. गणेश लगभग हक्का बक्कासा रह गया था. जो कुछ भी हो रहा था वह सब उसे अपेक्षीत नही था. उसे शर्म और अपमानके मारे ऐसा लग रहा था की उसके पैरके निचेकी जमीन फटकर उसे अपने मे समा ले. उसका चेहरा अपमानके मारे एकदम उतर गया था. उसे क्या बोला जाए कुछ सुझ नही रहा था. " नही एक लक्स चाहिए थी " वह कुछ तो बोलना है ऐसे बोला. उसके कमरेमें दो लक्स साबुन पडे हुए थे. लेकिन अब परिस्थितीयां ऐसी बन गई थी की उसे कुछ तो खरीदनाही था. " या व्हील दूं " मधुराणी किसी पहले मजेदार अवसरका संदर्भ देते हूए खिलखिलाकर हंस पडी. गणेशभी किसी तरह जबरदस्ती हंसने लगा. मेरे उतरे हूए चेहरेको देखकर कही ये मेरी खिल्ली तो नही उडा रही है? .. उसे लगा. मधुराणीने एक लक्स साबुन निकालकर उसके हाथमें थमा दिया. उसके हाथमें सिरहन दौड गई. उसकी अपेक्षा थी की मधुराणी उसके हाथको छुएगी. लेकिन इसबार मानो उसने जानबुझकर हाथका कोई स्पर्श ना हो इसका खयाल रखते हूए साबुन उपरसेही

उसके हाथमें रख दी. उसका घोर अपेक्षाभंग हुवा था. उसने जेबसे पैसे निकलकर चुका दिए और निराश चेहरेसे अपने कमरेकी तरफ बढने लगा. तभी पिछेसे मधुर स्वर गुंजा - " दोई दिन कहा गांव गए रहत . ? ... बहुत खाली खाली लगाई रहा आपके बैगेर " गणेशने पलटकर मधुराणीकी तरफ देखा. उसका चेहरा खुशीसे दमकने लगा था. मधुराणीके कटाक्षमें फिरसे वह जानलेवा भाव तैरने लगे थे. उसे लगा फिरसे पलटकर उसकी तरफ जाऊं . लेकिन नही ... वह अच्छा नही दिखेगा ... वह अब नए उत्साहके साथ अपने कमरेकी तरफ बढने लगा. जाते हूए वह सोचने लगा - मै भी कितना पागल हूं .... यहां इतने सारे लोगोंके सामने मधुराणी कैसे अपने मनके भाव व्यक्त करती .... लेकिन उसने कमसे कम हल्कासा क्यों ना हो अपने हाथका स्पर्श मुझे करना चाहिए था. .... लेकिन जाते हूए उसने फिरसे इशारा तो कियाही ना ... उसे दो दिनसे मेरे अनुपस्थितीका अहसास हुवा था ... इसका मतलब उसके मनमें मेरे लिए कुछ तो जरुर है

णेश ऑफीसमें बैठा था. ऑफीसमें गांव के लोगोंकी भीड जमा हो गई थी. ऑफीसमें कामसे आनेवालोंसे बिनाकामकें मस्तमौलाही जादा जमा हो गए थे. कोई ऑफीसके सामने चबुतरेपर बैठकर तंबाखु मसल रहा था तो कोई चिलम फुंक रहा था. ऑफीसमें ग्रामपंचायतके ग्रॅन्डसे एक बडासा रेडिओ खरीदा गया था. और वह रेडीओ शुरु कर लोग बिचबिचमें कभी खबरें सुनते तो कभी गीत संगीत सुनते. बुधवारको रात आठका वक्त गांवके जवान लडकोने बुक करके रखा था. क्योंकी उस वक्त वे बिनाका गितमालाके अलावा किसीको कुछभी सुनने नही देते थे. तो आजभी कुछ लोगोंने खबरें सुननेके लिए चबुतरेपर भिड लगा रखी थी. और गणेशका ऑफीस मतलब वही हॉलके कोनेमें एक को सटकर एक ऐसे लगाए तिन टेबल रखे गए थे. और उन टेबलोंके पिछे दो कुर्सीयां रखी गई थी. उसमें एकदम कोनेवाली कुर्सीपर गणेश बैठा था. गणेशके टेबलके सामने दो लोग खडे थे. उसमें का एक एकदम अनपढ देहाती था. उसने गणेशसे पुछा - " बोलो क्या चाहिए ?" " सायेब... वह 7-11 या क्या बोलते है उसको वो चाहिए जी ..." वह देहाती बोला. " 7-12" गणेशने उसकी गलती दुरुस्त की. " हां जी ... हां जी ... वही ... " वह देहाती अपनी गलती दुरुस्त की गई देखकर खुशीसे बोला. " पुराना 7-12 या उसकी कापी है क्या ? " उस देहातीने प्रश्नार्थक मुद्रामें पहले गणेशकी तरफ और फिर उसके बगलमें खडे युवककी तरफ, जिसकी उम्र लगभग 20-21 साल होगी, उसकी तरफ देखा. " आपका नाम बोलो " गणेशने उससे पुछा . " गणपत सदोबा खोत " उस देहातीने अपना नाम बताया. गणेशने टेबलपर उसके सामने रखे एक रजिस्टरपर वह लिख लिया. " सर्वे नंबर मालूम है क्या ?" फिरसे उस देहातीने प्रश्नार्थक मुद्रामे पहले गणेशकी तरफ और फिर उसके बगलमें खडे उस युवक की तरफ देखा. " तुम लोगोंकी यही तो परेशानी है .... पुराना 7-12 नही... सर्वे नंबर .. मालूम नही ... तुम्हारा नाम तुम्हे पता है .... आप लोगोंकी बडी मेहरबानी ... सिर्फ नामसे रेकॉर्ड ढुंढनेको काफी वक्त लगेगा ... अगले सोमवारको आवो ..." गणेश चिढकर बोला. " अगर जल्दी होवेगा तो देखोना साब ... " वह बडा हीन दीन होकर बिनती करने लगा. " अच्छा अच्छा ... गुरवारको आकर देखो ... " गणेश उसे टालनेकी कोशीश करते हुए बोला. वह देहाती हाथ जोडते हूए निकल गया. " हं तुम्हे क्या चाहिए ? " वहां खडे युवकसे गणेशने पुछा. " हमरी और हमरे चाचाका बंटवारेका झगडा है ... वो कैसे मिटाना है ये पुछनेके लिए आई गवा " उस लडकेको गणेशने काफी बार मधुराणीके दुकानमें आते हुए देखा था. गणेश ऑफीसका काम तो कर रहा था लेकिन उसके दिमागमें लगातार

मधुराणीके बारेमेंही विचार चलते रहते थे - मानो कानोंके इर्दगीर्द लगातार कोई मधूमख्खी गुनगुनाती रहती. " बैठो " गणेशने सामने कुर्सीकी ओर इशारा कर उसे बैठनेके लिए कहा. तभी वह पहले आकर गया देहाती वापस आगया. " अब क्या है ?" गणेशने बुरासा मुंह बनाकर उसे पुछा. " नाही वो अपने कामका कितना खर्चा आवेगा ?" उस देहातीने दबे स्वरमें पुछा " क्यो तुम्हे पता नही ? " उस देहातीने अपनी अनभिज्ञता जताते हूए सर हिलाया. " बाहर चबुतरेपर पांडू बैठा है उसे पुछो " गणेश उस देहातीकी तरफ ध्यान ना देते हूए, उसकी तरफ ना देखते हूएही बोला. " जी " उस देहातीने कहा. साहबने कुर्सीपर बैठनेके लिए कहा तो है, लेकिन मैने कुछ गलत तो नही सुना. ? ऐसे अविर्भावमें वह लडका कभी कुर्सी की तरफ तो कभी गणेशकी तरफ देखते हूए कुर्सीके पास खडा रहा. " अरे बैठोतो..." गणेशने उसे फिरसे बैठनेके लिए कहा. वह शर्माते हूए कुर्सीपर बैठ गया. वह देहाती आश्चर्यसे कभी उस कुर्सीपर बैठे लडकेकी तरफ देखता तो कभी गणेशकी तरफ देखता. गणेशने आखोंके कोनेसे उस देहातीको बाहर जाते हुए देखा और फिर उस लडकेसे असली बात छेड दी. " तुझे मधुराणीके दुकानमें बहुत बार देखा है मैने " " हांजी ... वो सामान समान लेनेएके वास्ते जाना पडे है ... दूकान नजदीक रही ना " वह शर्माकर बोला. " बहुत लडके इख्खटे होते है वहा शामको ... आखिर माजरा क्या है ?" गणेश असली मुद्देके आसपासकी बाते पता करनेकी कोशीश करते हूए बोला. फिरभी उसका असली उद्देश मधूराणीके बारेमें जानना यही था. " कुछ नाही साब ... बिडी सिगारेट फुंकनेके वास्ते इक्कठ्ठे होवत है .... कुछ काम धाम नाही सालोंके पास ... फिर क्या करेंगे जी " वह बोला. " झुट मत बोलीयो ... " गणेश मुस्कुराते हूए बोला. " उई क्या है साबजी ... जीहां मिठाई होवे उहा मख्खीयां तो इकठ्ठा होवेगी ही.." वह एक आंख छोटी करते हुए बोला. " अच्छा मतलब तुमभी .." " नाही साबजी ... मै अपना बाकी लडके इकठ्ठा होवे है इसलिए जाता हूं जी उहा " " अच्छा मै समझ रहा हूं " गणेश मुस्कुराते हूए उसकी तरफ एकटक देखते हूए बोला. वह शर्माकर इधर उधर देखनेकी कोशीश करने लगा. तभी एक गवार लडका अंदर आगया. गणेशने उसकी तरफ बुरासा मुंह करके देखा. क्योंकी उसे सामने कुर्सीपर बैठे लडकेसे और सवाल करने थे और तबतक उसे वहां कोई और नही चाहिए था. लेकिन वह गवार लडका बेशर्मीसे वही खडा की खडा ही रहा. " लेकिन उसके घर और कोई नही है ? ... हमेशा मुझे तो वही गल्ले पर बैठी हूई दिखती है " गणेशको लगा की नाम ना लेते हूए मधुराणीके बारेमें पुछा तो उस गवारके क्या खयालमें आनेवाला है ? . " ससूर होवे है ना जी ... लेकिन वो तो दारु पिकर इधर उधर पडा रहत है " वह गवार लडका बोला. " और उसका पती ? " गणेशने अपनी तरफसे बहुत महत्वपुर्ण सवाल पुछा. " उसका आदमी मर गया साबजी ... . शादी होनेके एक सालके अंदरही मर गवा बेचारा " " कौन कहता है मर गवा ... मारा है उसे पाटीलने " वह गवार लडका गणेशके टेबलके और पास आते हूए बोला. " ए ढेकळ्या... कोर्टमा साबित किया रहत पाटीलने ..." कुर्सीपर बैठा लडका आवेशमे आकर खडा होते हूए बोला. " कोर्टमॉं बहुत पहचान है पाटीलकी ... उहां तो पैसे देकर किसी मरे हूए को जिंदा कर सकता है उ ... " " ए फुकणीके ... मुंहमें आया सो मत बकीयो " दोनोमें अब काफी तू - तू मै - मै होने को थी. गणेश बिचमें पड गया. " ए तूम पहले बाहर निकलो... इसका काम होने दे ... फिर तूम अंदर आना ... " गणेशने उस गवार लडके को बाहर निकाल दिया. वह गंदी गंदी गालीयां देते हूए, बिच बिच मे मुडकर पिछे देखते हूए बाहर चला गया. फिर गणेशने उस लडकेसे मधुराणीकी जितनी मुमकीन थी उतनी जानकारी निकाल ली. बेचारी मधुराणी ... पती शादी होनेके बाद एक सालके

अंदरही गुजर गया... बेचारीका नसीब और क्या ?.... उसपर क्या बितती होगी .... गणेशको उसके बारेमें अब सहानुभूती होने लगी थी.

जैसे जैसे दिन बित रहे थे गणेशका अपनी खिडकीसे मधुराणीकी तरफ देखना दिन ब दिन बढ रहा था. मधुराणीभी इधर गणेश खिडकीमें आनेपर उधरसे उसकी तरफ देखकर मुस्कुराती. उसका उसके दुकानमेभी आना जाना बढ गया था. पहले पहले कुछ लेनेका बहाना बनाकर वह उसके दुकानमें जाता था. लेकिन अबतो उसको जानेके लिए किसी बहानेकीभी जरुरत महसुस नही होती थी. सुपारी तोडना, सुतली, सुई धागा जैसी छोटी छोटी चिजोंके लिए भी वह बेझिझक दुकानपर जाता था. मधूराणीभी खुशीसे उसे जोभी चाहिए वह देनेके लिए तत्परही रहती. चिजे देते लेते वक्त वह अपने कोमल हाथोकां हल्कासाभी क्यो ना हो स्पर्ष करनेसे नही चूकती थी. धीर धीरे गणेशकाभी ढाढस बढ रहा था. वह भी उसका स्पर्ष पानेके फ़िराकमेंही रहता था. आजकल तो मधूराणीका कोमल स्पर्ष हूए बिना और उसकी गहरी नजरोंमे डूबकर मदहोशीका आनंद लेनेके बिना उसके दिन का प्रारंभ नही होता था. उसनेभी अब सोच लिया था की इतने दूर इतने दुर्गम देहाती इलाकेमें उतनाही उसका दिल लगा रहेगा. और वह बेचारीभी भला क्या करती. उसकी उम्रही ऐसी थी और उपरसे वह बेईमान जवानी और तो और उसका अकेला सहारा उसका पती भी गुजर गया था. एक दिन उसने उसे अपने गुप्त बोलीका रहस्यभी बता दिया. " मैर्फे तुर्फुमर्फपर्फरर्फ प्रेर्फेमर्फ कर्फरर्फतीर्फी हुर्फु .... देखियो तो समझता है क्या ." उसने कहा. " नही तो ... कुछ भी नही समझ रहा है... कोई तेलगु बोली जैसी बोली लगती है .." वह अपने दिमागपर जोर देकर समझने की कोशीश करता हुवा बोला. " ... बहुत सादा जी है ... उसमेंसे सिर्फ र्फ, र्फु, र्फा, र्फे निकाल दो ... बस होई गया ." " बस इतना सरल है ... " उसने कहा. " अब फिरसे तो बोलो एक बार तुमने क्या कहा था " गणेशने फिरसे पुछा. " मैर्फे तुर्फुमर्फसेर्फे प्रेर्फेमर्फ कर्फरर्फतीर्फी हुर्फु .... " उसने फिरसे दोहराया. " मै... तुमसे .. आगे क्या बोला था ... एक बार बोलो तो... और थोडा धीरे बोलो ..." गणेश वाक्यकी जोडतोड करनेकी कोशीश करते हूए बोला. " मैर्फे तुर्फुमर्फसेर्फे प्रेर्फेमर्फ कर्फरर्फतीर्फी हुर्फु " " मै... तुमसे ... प्रेम... करती ... हूं ... मतलब ... मै तुमसे प्रेम करती हूं ... बराबर है ना " " हा जी एकदम सही ... " उसने क्या कहा यह गणेशको समझा था ... लेकिन उसका मतलब समझनेको थोडा समय लगा. मतलब समझतेही उसका चेहरा शर्मके मारे लाल लाल हो गया था. " देखोजी ... देखो ... कैसे शर्मा रहत है... ... ऐसे क्या शर्माते हो जी ... मैने तो बस मिसाल दी थी.' मधुराणीने कहा. " इतना आसान... लेकिन इतनी आसान होकरभी यह बोली बाकी लोगोंको क्यो नही समझती है...' गणेश अपने चेहरेसे शर्मके और झेंपके भाव छिपानेकी कोशीश करता हुवा बोला. " क्योंकी उका और एक राज है... यह बोली बहुत फास्ट बोलनी पडती है... ताकी सुननेवाला समझ ना पावे . ' " हां ... तुम ठिक कहती हो " उसने कहा. एक दिन शामको गणेश काफी थका हुवा था और बेडपर लेटकर आराम कर रहा था. आज उसे पासही एक देहातमें जाना पडा था. वहा जानेके लिए बस नही थी. इसलिए सरपंचजीने उसे जानेके लिए बैलगाडीका इंतजाम किया था. गणेशको बैलगाडीसे सफर करनेकी आदत नही थी. रास्ता उबड खाबड होनेसे उसके बदन का एक एक पुर्जा दर्द कर रहा था. सफरमें उसके साथ दो हमसफर होनेसे उसे सफरमें उतनी दिक्कत नही हुई. एक था आसपासके गावोंमे घुमकर मोटर पंप पंखे इनकी मरम्मत करनेवाला मेकॅनिकका काम करनेवाला बबन और दुसरा था येडा. उसका नाम क्या था पता नही लेकिन

लोग उसे उसके सनकी बरतावसे 'येडा; ही कहते थे. सफरके दौरान बबनके साथ गप्पे मारते हुए वक्त अच्छा बिता था. येडेसे तो बाते करनेकी कोई अपेक्षाही नही थी. बिचबिचमें वे उसकी मजाकभी उडाते थे. बेडपर लेटे लेटे गणेशको बैलगाडीमेंका एक किस्सा याद आगया और उसके चेहरेपर हंसी आ गई. बैलगाडीमें पिछे तिन लोग बैठे थे और गाडीवान गाडी हाक रहा था. गाडीके धक्कोसे बचनेके लिए पिछे बैठनेके लिए सुखी घास फैलाई थी. उसका दुसरा उद्देश ये भी थाकी रास्तेमें बैलोको खानेके लिएभी वह घासभी काममें आ सकती थी. " इस गाडीके धक्कोसे तो आदमीके सारे नट बोल्ट ढिले हो जावेंगे " बबन गाडीका पहिया एक बडे पत्थरपरसे गुजरनेके बाद पडे धक्केसे संवरते हूए बोला. अपने मेकॅनिकके पेशेके अनुसार उसने एकदम बराबर मिसाल दी थी. गणेश येडेकी तरफ इशारा करते हूए मजाकमें बोला, " वैसे इस येडेके नट बोल्ट हो होकर कितने ढिले होनेवाले है ... क्योंकी उसके नट बोल्ट तो पहलेसेही ढिले है ." बबन गणेशको ताली देकर जोर जोरसे हंसने लगा था. और फिर उसकी हंसी रोके नही रुक रही थी. काफी देर तक वह पेट पकड पकड लोट पोट होकर हंसता रहा. बेडपर लेटे लेटे गणेश अपनी विचारोंकी श्रृंखलासे बाहर आ गया. बाहर कोई अजीबसी आवाजें आ रही थी. उसने लेटे लेटे ही करवट बदलकर खिडकीसे बाहर झांककर देखा. बाहर काफी अंधेरा हो गया था. साडेसात आठ बजे होंगे. वह बाहर क्या माजरा चल रहा है ध्यान देकर सुननेकी कोशीश करने लगा. " बो बो ... बॅ बॅ ..." एक आदमीका कर्कश्य आवाज आ गया. " ओ.. ऍ ... ना .. ना ... ना" उसके पिछेही तुरंत एक स्त्रीका कर्कश्य आवाज आ गया. गणेश करवट बदलकर फिरसे सोनेकी कोशीश करने लगा. लेकिन वे अजिबसी आवाजे बार बार आने लगी थी. मानो कोई झगड रहा हो. बिचमेंही मधुराणीका जोरसे ठहाका लगाकर हंसनेका आवाज आ गया. अब गणेश अपने आपको रोक नही सका. वह उठकर बैठ गया. बाहर क्या चल रहा है यह पता करनेकी उसे उत्कंठा होने लगी थी. तुरंत उठकर, कपडे बदलकर वह कमरेसे बाहर निकल गया.

बाहर गणेशने देखा की एक 21-22 सालका जवान लडका और 18-19 सालकी जवान लडकी एकदुसरेसे झगड रहे थे. जिस तरह से वे झगड रहे थे, उससे ऎसा लग रहा था की वे दोनोभी गुंगे हो. उनका झगडा देखकर पलभरके लिए गणेशभी मनही मन मुस्कुराया. उसने मधुराणीके दुकानकी तरफ देखा. वह अभीभी वह झगडा देखकर हंस रही थी. वह देखकर गणेश भी अपने आपको उसकी दुकानकी तरफ़ जानेसे नही रोक सका. " गणेशराव ... देखोयो तो गुंगे कैसे झगडत रहे ... दुइ गुंगे झगडते पहले कभी देखा है जी ?" गणेशको देखकर वह बोली. " नही ... ... पहली बार देख रहा हूं " गणेशने उसके हंसीमें अपनी हंसी मिलाते हूए जवाब दिया. "पता है क्यों झगड रहत ?" गणेशने उसकी तरफ प्रश्नार्थक मुद्रामें देखा. " वुई क्या हूई गवा की ... ई गुंगा जा रहा था लोटा लेकर .. उधर आदमीयोंके शौच की खुली जगा की तरफ़...और गुंगी जा रही उधर औरतोकी शौच की खुली जगा की तरफ़ ... अंधेरेमें दोनोकी टक्कर हुइ गवा ,,, और दोनोके पानीके लोटे उंडेल गए रहत ... " मधुराणी गणेशकी ताली लेकर फ़िरसे जोरसे हंसने लगी. गणेशभी जोरसे हंसने लगा. आज काफ़ी देर तक गणेश और मधुराणी गप्पे मारते हूए बैठे थे. तभी एक आदमी जल्दी जल्दी मधुराणीके पास आगया. उसकी सांस फ़ुली हूई थी. और वह बोलने लगा. " जरा हौले ... पहले अपना फ़ुली हूई सांस तो

ठिक कराइ लियो और फ़िर बोलीयो... मै यही हूं... मै कही भाग जानेवाली नाही ? " मधुराणी उस आदमीसे मजाकमें बोली. उसने रुककर गणेशकी तरफ़ देखकर अपना फुली हूई सांस ठिक की और जेबसे चाबी निकालकर मधुराणीको देते हूए वह बोला, " ई लो ... पंधरा गोनी होई गवा .. और तुमरे गोडाऊनमें रखवा दिए रहत " वह चाबी मधुराणीके हाथमें थमाते हूए बोला. मधुराणी ने कुछ काम का बहाना बनाते हूए दुसरी तरफ़ मुडकर कुछ ढुंढने लगी. और उधरही मुंह रखते हूए उसे बोली, " रखियो ऊंहा गल्लेपर " उस आदमीने मुरझे हूए चेहरेसे वह चाबी सामने गल्लेपर रख दी. मधुराणीने उसके पिछेसे बही खाता और पेन ढुंढकर निकाला. फ़िर सामने उस आदमीकी तरफ़ मुडते हूए बोली. " सिरफ पंधरा गोनी ... पिछले बखत तो जादा हुई गवा " " क्या बात करती रही ? ... पिछले बखत तो सिरफ बारा गोनी हुई गवा ..." " पिछले बखत बोयाभी कम था ना " " हां उ सब ठिक है ... लेकिन औसत तो उतनीही आनी चाहिए ना " मधुराणी बही और पेन गणेशके पास देते हूए बोली , " गणेशराव जरा निकाईलो तो औसत ... हां तुम जरा बताईयो तो " तो आदमी बोला, " पिछले बखत ... ढाई एकडमे बारा गोनी हुई गवा ... और इस बखत तिन एकडमें पंधरा गोनी ..." गणेश बहीपर गिनती और हिसाब करने लगा. " नही मधुराणी इसबार औसत अच्छा आया है ... इसबार पांचका तो पिछले बार चार दशमलौ आठ का " " अरे मुझे तो ये मालूम रहा ... संभाजीरावपर पुरा भरोसा है हमरा ... हम तो ऐसेही उनका मजाक कर रहत ... ... क्यो संभाजीराव? " मधुराणी संभाजीरावकी तरफ मुस्कुराकर देखते हूए बोली. संभाजीरावभी शरमाकर हंस दिए. " ठिक है जाता हूं फिर ... " वह बोला. मधुराणी उसकी तरफ देखकर फिरसे मुस्कुरा दी... मानो हंसनेके बोलीमें कह रही हो... ' ठिक है ...अब तशरफ ले जा सकते है " वह चला गया. वह नजरोंसे ओझल होतेही मधुराणी बोली " बदतमीज कलमुहा ... काम तो अच्छा करत है ... कडी मेहनत भी करत है ... लेकिन .नजदीकी बढानेकी कोशीश करत है... अभी देखाना कैसन चाबी मेरे हाथमे थमानेकी कोशीश कर रहा था... हाथको छुनेकी कोशीश करेगा .... अपने घरमें मां बहन नाही ... " यह बोला हुवा गणेशकोभी लागू होता था इसलिए गणेशकोभी शर्मीदगी महसुस हो रही थी. छटसे मधुराणी गणेशके जांघपर थपथपाते हूए बोली , " मतलब उकी औकातभी तो उतनी होनी चाहिए जी जी " गणेशका चेहरा फिरसे खिल गया. उसने सोचा - अच्छा तो कमसे कम मुझे तो नही बोला मधुराणीने ... मै उसके लिए अपवाद जो हूं ... लेकिन यह किसी मजबुर बेवा औरतकी मजबुरीका लाभ उठाना बराबर नही लोगोंका... " गणेशराव आपका हिसाब तो एकदम भारी दिखता है जी ... बहुत जल्दी किया ... नाही मालूम था की गणितमेभी आप इतने निपूण रहत ... " " मधुराणी आप तो तारिफोंके पुल बांध कर अब तो मुझे शर्मींदा कर रही हो .." गणेश शर्माकर बोला. वहां दूकानमें या आसपास कोई नही था. उसका फायदा उठाते हूए मधूराणी इतराते हूए बोली, " गणेशराव मुझे ... ऐस आप वैगेरे मत कहियो ... " गणेशने चमककर उसकी आंखोमें देखा. उसकी आंखोमें उसे मदभरे भांव उभरते हूए नजर आ रहे थे. गणेशको उसके कान गरम होनेजैसा अहसास होने लगा था. " सिरफ मधू कहा तो चलेगाजी ... या फिर राणी चलेगा ... हां राणीही ठिक रहेगा " गणेशका गला सुखने लगा था. उसके हाथपैरमें कंपन महसूस होने लगी थी. उसने झेंपकर अपनी नजर मधूराणीके चेहरेसे हटाकर निचे झुकाई . फिरभी उसे अहसास हो रहा थाकी अबभी मधूराणी लगातार एकटक उसके चेहरेकी तरफ ही देख रही है. मानो आज वह उसे अपनी आंखोसे पी लेना चाहती हो. " आपके दुकानका हिसाब किताब कौन रखता है " वह कुछ तो बात बनानेकी कोशीश करते हूए बोला.

" मै ही रखती हूं जी ... क्यो ? ... मुझे अनपढ तो नाही समझ रही ... ?" मधुराणी जोरसे हंसते हूए बोली. " नही वैसे नही ... " वह हडबडाकर संभलते हूए बोला. " उ पडोसका विलास करता है हमरी सहायता कभी कभी ..." " नही .. मैने सोचा कभी कभी मैभी सहायता करता जाऊंगा आपकी ." " आपकी ..." उसने टोका. " नही मतलब ... तुम्हारी ' ऐसा कहते हूए गणेशका चेहरा शरमके मारे लाल लाल हुवा था. "वैसे सहायता की कोनी जरुरत तो नाही... पर सहायता करनेका कोई दुसरा कोई मक्सद रहा तो चलेगा ' फिरसे मधूराणी उसकी आंखोमें आखें डालकर बोली. उसने फिरसे शर्माकर अपनी नजर झुकाई. वह अब उसके सामने रखे लकडीके संदूक की तरफ देखने लगा. संदूकपर रखा मधूराणीका हाथ ऐसेही संदूकसे खेल रहा था. उसकी हाथके हर हरकतसे उसके मनकी चंचलता स्पष्ट झलक रही थी. गणेश अब अपना ढाढस बांधनेकी कोशीश करने लगा. उसकी आंखोमें देखनेकीतो हिम्मत नही बन रही थी उसकी. लेकिन नही वह मुझे सिग्नलपर सिग्नल दे रही है ... उसके सिग्नलका जवाब देना अब जरुरी है ... नही तो मुझे वह क्या समझेगी ... नंपूसक ... नही ... कुछ तो जवाब देनाही चाहिए .... उसके दिमागमें सोच का चक्र जोर जोरसे घुम रहा था. वह अब अपने हर हरकतके परिणामके बारेमें सोचने लगा. साली अपने गले पडी तो ? ... बडी मुश्कील हो जाएगी ... सिर्फ मजा मारने तक तो बात ठिक है ... जाने दो ... बाद का बादमें देखा जाएगा ... पहले ... उसके सिग्नकलका जवाब तो देते है ... उसने उसकी चेहरेकी तरफ देखा. उसकी नशिली नजर अभीभी उसे पी रही थी. फिरसे झेंपकर उसकी नजर झुक गई. अब तो उसे अपने आपपर गुस्सा आने लगा था. मुरख वह इतनी तुझे सिग्नल पर सिग्नल दे रही है .. और तुम किसी निर्जीव वस्तूकी तरह उसके सामने सिर्फ बैठे हो ... अपने हाथपैर फुलाकर ... नही ... कुछतो करनाही चाहिए ... अब लोहा गरम होकर लाल लाल हो चुका है ... यही सही वक्त है ... घाव करनेके लिए ... आखिर उसने तय किया... . उसकी तरफ देखना तो मुमकिन नही है... . उसकी आंखोमें देखनेपर ... न जाने क्यो सौ तपते सुरज की तरफ देखे जैसा होकर आखे चौध जाती है... कमसे कम ... निची गर्दन रखकर भी मै बहुत कुछ कर सकता हुं... मै उसका हाथ तो अपने हाथमें ले सकता हूं... वह धीरे धीरे अपनी हिम्मत बटोरकर अपना हाथ उसके संदूकपर रखे हाथकी तरफ खिसकाने लगा. उसके हाथमें कंपन होने लगी थी. पैरभी अब कांपने लगे थे. वह अपने कांपते हाथको किसी तरह काबुमें करनेकी कोशीश करते हूए उसकी तरफ खिसकाने लगा. बाहर इतनी ठंडी हवा बह रही थी फिरभी वह पसिना पसिना हो गया था. आखिर उसने बडी हिम्मत कर अपने कंपकपाते हाथका हमला उसके हाथपर बोल दिया. लेकिन ये क्या?... उसके पहलेही उसने अपना हाथ वहांसे झटसे उठा लिया था. वह एकदम मुरझा सा गया. उसे अपमानीत महसूस होने लगा था. तभी मधुराणीका आवाज आया, " बापू ... तनिक संभालके... थोडी कम लियो ... नाही तो कल जैसे गटरसे उठाकर लाना पडेगा... " गणेशने अपनी शर्मींदगीसे निची झुकी गर्दन उपर उठाकर देखा. मधुराणीके सामने दो - तिन दिनकी दाढी बढा हुवा एक वयस्क देहाती खडा था. उसने मधुराणीके सामने अपना हाथ फैलाया था. और मधुराणीने एक एकके दो सिक्के उसके हाथपर रख दिए थे. उस आदमीने वे सिक्के ले लिए और कुछ ना बोलते हूए वहांसे चल दिया. अच्छा मतलब मधुराणीने वह आदमी आया था इसलिए झटसे अपना हाथ पिछे खिंच लिया था... नहीतो उसे बडे कठिण समयसे गुजरना पड सकता था ... मधुराणीने सतर्कतासे वह समय टाला था... गणेशने सोचा. उसे सचमुछ उसकी तत्परताका बडा आश्चर्य लग रहा था. सचमुछ

अपनी आंखोमे खो जानेके बावजुद उसका सब तरफ खयाल था. ... और मै ... सचमुछ उसकी सतर्कताकी जितनी तारिफ की जाए उतनी कम थी... अब उसके चेहरेसे अपमानके भाव मिटने लगे थे. उसने मधुराणीकी तरफ देखा. वह उसकी तरफ नटखटसी देखते हूए उठ गई. " कौन था वह ?" वह अपने चेहरेके भाव छिपानेकी चेष्टा करते हूए बोला. " ससूरा " वह बोली. " चलियो बहुत देरी हुई गवा ... दूकान बंद करना पड़ेगा ... नहीतो लोग ..." वाक्य आधाही छोडते हूए वह दुकान बंद करने की तैयारी करने लगी. " ठिक है मैभी निकलता हूं ..." वह खडा होते हूए बोला. वह फिरसे उसकी तरफ देखते हूए नटखटसी हंस दी और अपने काममें फिरसे व्यस्त हो गई. मानो कुछ हुवाही ना हो. सचमुछ उसका एक अवसर से दुसरे अवसरमें चपलतासे प्रवेश करनेका हुनर प्रशंशा करनेलायक था. वह उसकी बिजलीसी तेज हरकतोंकी तरफ देखते हूए अपने कमरेकी तरफ मुडा. वह भारी कदमोंसे अपने कमरेकी तरफ जा रहा था. दरवाजेकेपास खडे होकर उसने एक बार मुडकर मधुराणीकी तरफ देखा. उसनेभी उसकी तरफ देखा. अबभी वह नटखट मुस्कान उसके चेहरेपर फैली हुई थी.

आज गुरुवार होनेसे साप्ताहीक बाजार था . सुबहसे रास्तेपर भिड और वातावरणमें एक उत्साह भरा हुवा दिख रहा था. उजनीको साप्ताहीक बाजारके बहाने आसपासके गांवके लोग आते थे. गणेश सुबह सुबह नहा धोकर अपने ऑफीसकी तरफ चल पडा. आज साप्ताहीक बाजार होनेसे आसपासके गांवके लोगभी उसकेपास आनेवाले थे. मतलब रोजके मुकाबले आज कामका बोझ जरा जादा ही होनेवाला था. इसलिए वह अपने कमरेसे थोडा जल्दीही बाहर निकल गया. जाते हूए उसने एकबार मधुराणीकी दुकानकी तरफ नजर दौडाई. और मधूराणीनेभी जवाब दिया - एक मिठीसी मुस्कान देकर. ऑफीसकी तरफ जानेवाले उसके कदम अपने आपही उसकी दुकानकी तरफ मुडे. अभी अभी उसने दुकान खोला था. दूकानमें दुसरा कोई ग्राहक नही दिख रहा था. और उसका नौकरभी नही आया था. या फिर उसे कही और भेजा गया होगा. " आवोजी गणेश " 'गणेश' पर कुछ जादाही जोर देते हूए वह बोली. उसने 'गणेश' थोडा धीरेसे और हिचकिचाते हूए संबोधीत किया था. उसने पहली बार गणेशको 'गणेश' ऐसा संबोधीत किया था. यूतो वह उसे 'गणेशराव' करके संबोधीत करती थी. गणेशके दील की धडकन तेज हो गई. " क्या दूं जी ? ... बोलोयो तो " ' क्या दूं? ' पर जोर देकर एक खास अदासे बोलते हूए मानो वह कुछ और ही जताना चाहती थी. गणेश गडबडा गया. उसका दिल जोर जोरसे धडकने लगा. चेहरा लाल लाल होने लगा था. उसने इधर उधर देखा. उसे क्या किया जाए कुछ सुझ नही रहा था. भलेही दुकानमें उसके और मधुराणीके अलावा कोई नही था, लेकिन रास्तेपर बाजार जानेवाले लोग दिख रहे थे. " सिगारेट दिजिए " किसी तरह वह बोला. " दिजिए ?" उसने प्रश्नार्थक मुद्रामें गणेशकी तरफ देखकर टोका. उसकी तिरछी नजर उसे उकसा रही थी. " मतलब दो .." उसने हिम्मत कर उसे संबोधीत किया. उसने एक सिगारेट निकालकर उसके हाथपर रख दी. गणेशने सिगारेट लेनेके बहाने उसका हाथ अपने हाथमें लिया. मधुराणीने शर्माकर गर्दन झुकाकर अपना हाथ अदबसे उसके हाथसे छुडा लिया. तभी एक ग्राहक वहां आ टपका. अब गणेशके पास उसके जानेकी राह देखनेके अलावा कोई रास्ता नही था. उस ग्राहकने कुछ खरीदा और जाने लगा तो गणेशको सुकुन महसूस होने लगा. लेकिन तुरंत वहा दुसरा एक ग्राहक आगया. और उसके पिछे तिसरा, चौथा ... ऐसे ग्राहकोका तांताही लग गया. '' अच्छा निकलता हूं'' उसके मुंह मे आया '' राणी'' संबोधन को मुश्कीलसे निगलकर उसने कहा. मधूराणी सिर्फ

उसकी तरफ देखकर मुस्कुरा दी. वह भारी कदमोसे अपनी ऑफीसकी तरफ चल दिया. गणेश जब ऑफीसमें पहुंचा तब उसके टेबलके सामने काफी लोगोंकी भिड जमा हो गई थी. किसीको प्रमाणपत्र किसीकी सनद तो किसीके लोनके लिए लगनेवाले कागजाद. और किसीको सरकार ने एलान किए अनुदानके लिए कागजाद चाहिए थे. गणेशने आएबराबर तुरंत काम शुरु कर दिया. शायद कामके साथ मिलनेवाले उपरके कमाईके कारण उसे काममें कुछ थकावट महसुस नही होती थी. बाहर चबुतरेपर पांडू पैसे इकठ्ठा करनेके लिए बैठा था. पहलेभी जब खराडे साहब थे तबभी वह वही काम करता था. वह लोगोंको अंदर भेजनेके पहलेही उनसे पैसे ऐंठता था और उनके पास एक परची देता था. पांडू जादा कुछ पढा लिखा नही था. भलेही वह सिर्फ दुसरी कक्षा तक ही पढा था, फिरभी परची लिखनेका काम वह बखुबी निभाता था. पांडूको बाहर बिठानेसे गणेश के दो काम आसान होते थे. एक तो पैसे खुद नही लेने पडते थे, जिसके कारण ऍन्टी करप्शनवालोंका कोई डर नही रहता. वैसे ऍन्टी करप्शनवाले इतने बेमालूम तरीकेसे और वह भी इतने दूर देहातमें आनेवाले नही थे , इसका गणेशको अंदाजा था. लेकिन नही कभीभी किसीभी मुसिबतके लिये तैयार रहना सबसे बेहतर होता है. गणेशको पांडूका दुसरा फायदा यह था की लोगोंको क्या चाहिए यह जाननेके लिए गणेशको फालतूकी मगजमारी करनेकी जरुरत नही पडती थी. दिनके आखिरमें गणेशभी पांडूको कुछ इनाम देकर खुश करता था. उस इनाम के लालचमेहीतो वह दिनभर गणेशका काम करता था. एक एक को निबटने के बाद गणेशके टेबलके सामने अब एकमात्र देहाती बच गया था. उस अकेलेको देखकर गणेशने चैनकी सांस ली. और फिर घडीमें देखा. लगभग एक बजनेको था. सुबहसे उसने पाणी तक पिनेका वक्त नही मिला था. अब उसका पेट भूखसे बेहाल होगया था. प्याससे गला भी सुख गया था. उसने सोचा की बस इस एक देहातीको निबट लूं तो बाहर बाजारमें एक चक्कर मारते है और खानेको कुछ मिलता है क्या यह देखते है. तभी एक लडका अंदर आगया. उसके हाथमे पितलका एक ग्लास था. उसने कुछ ना बोलते हूए वह भरा हुवा ग्लास गणेशके सामने रख दिया और बिना कुछ बोले चल दिया. " अरे ... ये क्या है?" गणेशने उस लडकेको छेडा. " मालूम नाही" उसने कंधे उचकाकर जवाब दिया, " पांडूदा भेज रहत " उसने आगे कहा और वह चल दिया. गणेशने पहले ग्लासके अंदर झांककर देखा और फिर एक घुंट लिया. उसे अच्छा लगा. बाहर बैठे पांडूने कहीसे जुगाड जमाकर इस ठंडे शरबतका इंतजाम किया था. शरबत सौफसे बनाया हुवा था. मटकेके ठंडे पाणी मे शक्कर डालो और फिर उसमें सौफकी पाउडर बनाकर डालो और कपडेमेंसे उसे खंगालो - बस होगया शरबत - सौफका शरबत. गणेशने इस तरीकेका सौफका शरबत पहली बार इस उजनीमेंही पिया था. उसे वह खुब भाता था. बचा हुवा शरबत उसने झटसे चंद घुंटोमेंही गटक लिया. उसे प्यासही वैसी लगी थी. अब गणेशने उस बचे हूए एकमात्र देहातीको बुलाया. वह देहाती एक कदसे काफी उंचा 20-22 सालका लडका होगा. " क्या चाहिए ?" गणेशने पुछा. " हमरे बाने भेज रहत " उसने जवाब दिया. " अरे हां ठिक है तेरे बापने भेजा है... लेकिन क्या काम है यहतो बताएगा?" गणेशने पुछा. फिर वह दिमागपर जोर देकर याद करनेकी कोशीश करने लगा. " बाहर पांडूसे मिला?" गणेशने पुछा. " जी " उसने जवाब दिया. " फिर उसने कुछ परची तो दी होगी" गणेश. " जी दि रहत ..." उसने उपरके जेबसे एक मसलकर मुरझी हुई एक पर्ची निकाली और गणेशके हाथमें थमा दी. " अबे पागल हो क्या ..." गणेशने चिढकर कहा. गणेशने एकबार उस मसले हुए पर्चीकी तरफ देखा और फिर आश्चर्यसे उस लडकेकी तरफ

देखा. गणेशने वह मसली हूई पर्ची खोलकर देखी और उसपर क्या लिखा है यह पढनेकी कोशीश की. लेकीन वह कागज इतनी बुरी तरह मसला हुवा था की उसपर लिखा हुवा पढना मुश्कील लग रहा था. " तुम्हे पढना लिखना आता है?" गणेशने उस देहाती लडकेसे पुछा. " जी ... आता हैजी " उसने गर्वके साथ कहा. " अच्छा तो फिर इधर आकर इस पर्चीपर क्या लिखा है जरा पढके तो बता ... " गणेश अबभी उस पर्चीको पढनेकी कोशीश करते हूए बोला. उस देहाती लडकेने पहले गणेशके पास जानेके लिए कहांसे रास्ता है यह देखा. गणेशके सामने एकसे सटकर एक ऐसे तिन टेबल रखे हूए थे और गणेश बाए कोनेमें एकदम दिवारसे सटकर बैठा था. गणेशकी तरफ जानेका रस्ता वे तिन टेबल छोडकर एकदम दाए कोनमे था. फिर उस देहातीने गणेशके सामने रखा एक टेबल हटाकर उधर जानेकी कोशीश की. और फिर उसे क्या लगा पता नही एकदमसे अपनी उंची टांग टेबलके उस तरफ रखकर टेबलपरसे उधर चला गया. गणेश ने वह उसका तरीका देखा और हक्का बक्कासा होकर आश्चर्यसे उस लडके की तरफ देखने लगा. " अबे पगले हो क्या?" गणेश गुस्सेसे चिल्लाया. लेकिन दुसरेही पल उस लडकेके चेहरेके भाव देखकर और उसका टेबल लांघनेका तरीका याद कर उसे उस लडकेकी हंसी आ रही थी. " अबे क्या येडे आदमी हो... वह उधरका रास्ता छोडकर... सिधे टेबल लांघकर इधर आगया तू..." गणेश हसते हूए बोला. उसे क्या बोला जाए? ... हंसे की उसे गुस्सा करे?... गणेशको कुछ सुझ नही रहा था. तबतक वह लडका वह टेबल लांघकर गणेशके बगलमें खडे होकर उस परचीपर क्या लिखा है यह पढने लगा, " खेत बोनेका परमान पत्र "

गणेश बाजारमें दोनो तरफ लगे दुकानोंकी तरफ देखते हूए चल रहा था. सरपे मई महिनेकी धूप होते हूए लोग हरीभरी सब्जी, पके हुए आम, प्याज. लहसून लेकर बाजारमें दुकानें लगाकर बैठे थे. कोई तरकारीका दुकान लगाकर बैठे थे तो कोई सिर्फ धानके, जैसे गेहूं, ज्वार, चावल, ऐसे अलग अलग धानके दूकान लगाकर बैठे थे. आज जादा ना घुमते हूए गणेश सिधा बंडू हॉटेलवालेके टेंट के पास गया. बंडू गरमागरम भजिया, आलूवडे, दालवडे, मिर्च की भजिया, शेव, चिवडा, बुंदी , जलेबी ऐसे काफ़ी खानेकी चिजे उसके पास मिलती थी. तलनेकी जायकेदार खुशबु, और गरम गरम तेल का मनको मोहनेवाला तडकेका आवाज, और सामने थालीमें रखे हूए कुछ पिले तो कुछ लाल ऐसी खानेकी चिजे. दुकानके सामनेसे गुजरा और उसके मुंहमे पाणी ना आया हो ऐसा बहुतही कम होता होगा. आलूवडेको वे लोग 'आलूबोंडा' कहते. बंडूके हॉटेलमें बना आलूबोंडा गणेशको खुब भाता था. " आवो जी ... हमरे जैसा आलूबोंडा तुमको कही नाही मिलेगा... वो क्या है नाजी हमरा आलूबोंडा बनानेका तरीका बहुत अलग रही .... ' कहते हूए उसने आलूका बना हुवा गोला बेसनमें डूबोकर भट्टीपर रखे कडईके उबलते हूए गरम तेलमें छोडा. फिर दुसरा, तिसरा ... ऐसे आलूबडेसे कडई भरनेके बाद अपना बेसनसे भरा हुवा हाथ बगलमें रखे पाणीके बर्तनमें डूबोकर धोया. फिर गिले हाथसे पाणी की छीटे कडईमें आलूवडे तल रहे उबलते तेलमें छीडकी. 'तड् तड्' ऐसा आवाज हो गया. यह सब देखनेमेभी गणेशको बहुत मजा आता था. . " बैठो ... साबजी ... बैठीयो तो ..." गणेश दुकान के टेंटका कपडा उड ना जाए इसलिए रखे पत्थरपर बैठ गया. आलूवडे तलनेका इंतजार करते हूए वह उन तेलमें उबलते वडोंकी तरफ देखने

लगा. बंडू हॉटेलवालेके साथ दुकानमे उसकी बिवी उसे काममें हाथ बटाती थी. जब वह तलनेका काम करता था तब उसकी बिवी ग्राहक संभालती थी. और जब वह तलनेका काम करती तब बंडू ग्राहक संभालनेका काम करता . गणेशको किसीने कहा था की बंडू हॉटेलवालेने दो शादीया की थी. एक बिवी घर और उसके बच्चे संभालती थी तो दुसरी उसके साथ उसको हाथ बटानेके लीए उसके और उनके हॉटेलके साथ नगर डगर घुमती थी. ... कभी किसी मेलेमें, तो कभी दुसरे गांवके बाजारमें वे जाकर अपना दुकान लगाते थे. पंधरा दिन एक बिवी को लेकर घुमा की वह उसे घर और बच्चे संभालनेके लिए घर छोडता था और अगले पंधरा दिन दुसरे बिवीको लेकर घुमता था. अपने धंदेके अनुसार उसने अपना जिवन मानो ढाल लिया था. वैसे वह दुनियादारीके मामलेमे काफी होशीयार था. उसकी होशीयारी उसके दो शादिया करनेमें देखतेही बनती थी. दुसरी शादी करनेसे एक्स्ट्रा बिवी तो बिवी उपरसे बिना पगारकी नौकर भी उसे मिली थी. अबतक बडे पुरे तलकर बन चुके थे. बंडू वे तले हूए वडे बाहर निकालकर एक थालीमें डालने लगा. " दुसरे हॉटेलवाले ... ऐ ऐसे वडे खानेको परोसेंगे ... लेकिन ई तो आधाही काम हो गयाजी ... ." वह बचे हूए वडे कडईसे थालीमें डालते हूए बोला. " अब आगेका काम देकहियो ... इस वडे के कानके निचे ऐसे एक एक बजानेकी ... इस झारेसे .. ऐसे ... " वह अपने हातमे थामा हुवा झारा हरएक वडेपर हल्केसे मारते हूए बोला. जैसे जैसे वह उस झारेसे उन वडेको मारता था वैसे वैसे वे वडे टूटकर खुलते थे. " और फिर इस खुले हूए वडोंको फिरसे तेलमें डालियो ... ऐसे ..." फिरसे वे खुले हूए वडे तेलमें छोडते हूए वह बोला. " अजी ई है आलूबोंडे बनानेकी असली ढंग... ये हम .... हमरे बापसे ... हमरा बाप ... उसके बाप से ... और उसका बाप ... उसके बापसे ... ऐसे पिढीयोंसे हम सिखत रहत ... ." यह बंडूकी बकबक हर बार वडे खानेको आनेके बाद गणेशकोही नही तो वडे खानेको आए सारे ग्राहकोंको सुननी पडती. लेकिन सारे लोग ये इतने अच्छे जायकेदार वडे खानेके लालचमें सुन लेते थे. वह फिरसे तेलमें छोडे हूए वडे झारेसे हिला रहा था. बिच बिचमें यूंही बगलमें रखे पाणीके पतेलेमें हात डूबोकर पाणीकी कुछ छिंटे उस उबल रहे तेलके कडईमें छिडकता था. उससे वह 'तड् .. तड्' ऐसा आवाज बार बार आता था. और वह वैसा 'तड् .. तड्' आवाज करकी मानो उसे आदतही हो गई थी. शायद बाहर इतने तपते धुपमें... तपते भट्टीके सामने उतनेही उत्साहके साथ .. हमेशा काम करते रहनेका रहस्य शायद उस 'तड्.. तड्' होनेवाले आवाजमेंही छिपा हो ऐसा गणेशको हमेशा लगता था.

पेट पूजा होने के उपरांत गणेश ने बाज़ार के मैदान के कोने में स्थित , महादेव के मंदिर में जाने का निश्चय किया. वह महादेवीजी का मंदिर देखने में भले ही प्राचीन था परन्तु काफी बड़ा था . मंदिर के आस पास का क्षेत्र भी बड़ा और फूलो व फलो के सघन वृक्षों से घिरा था . इसमें एक विशाल नीम का वृक्ष भी था . गर्मियो में शीतल छाया के लिए इस वृक्ष का बहुत उपयोग होता था . और आज तो बाज़ार का दिन और उसमे भी गर्मियों की लू बरसाती कड़ी धुप , इस वृक्ष के नीचे काफी लोगो की भीड़ जमा हो गयी, कुछ थके हारे लोगों ने तो नींद की झपकी भी ली. मंदिर के प्रवेश द्वार के एकदम सामने एक सार्वजानिक कुआ था. गाँव के अनेक लोग उस कुए से जल भरते थे. मंदिर के तरफ जाते-जाते गणेश को कोने पर एक पान की टपरी दिखाई दी. वह उस पान की टपरी पर ही रुक गया और उस पानवाले को उसने

एक बनारसी पान बनाने का आदेश दिया. पान टपरी के पास काफी लोग जमा थे, कोई व्यक्ति बिडी मांग रहा था , तो कोई सिगरेट तो किसी को तम्बाकू की छोटी पुडिया चाहिए थी. पानवाले ने ग्राहकों को निपटाया, और गणेश का बनारसी पान बनाने के लिए हाथ में लिया, गणेश वहीँ उसके सामने खड़ा रहा. पान बनने तक क्या किया जाये ये सोचते हुए गणेश ने सामने की ओर देखा तो उसे पान टपरी के बाजु में ही, मंदिर की दिवार से लगकर, कुछ बच्चे कांच के कंचो का खेल जोरशोर से खेलते दिखाई दिये. गणेश उनकी तरफ बढा. जाते-जाते उसने पान वाले को, पान तैयार होने के बाद, आवाज देने को कहा. कंचे खेलने वाले चार- पाँच बच्चे थे. उनमे से एक बच्चा दिवार से लगभग, दस ग्यारह फूट पर रखे पत्थर के पास गया. उसके हाथ में कम से कम १५-२० कंचे थे. उसने उस पत्थर के पास खड़े रहकर कंचो को दिवार की दिशा में धीरे से फेका. दिवार के पास ही, जमीं में, कंचे के आकार का एक गढ्ढा था. वह गोटिया जैसे ही गढ्ढे की दिशा में लुड़कने लगी , बाकि के बच्चो की सांस ऊपर नीचे होने लगी. क्योकि यदि एक भी गोटी उस खड्डे में गिरती है तो वह बच्चा सभी की सभी कंचे जीत जायेगा. काफी सारी गोटिया उस खड्डे के एकदम नजदीक जाकर घूम रही थी, पर एक भी उस गढ्ढे में नहीं गिरी. फिर उन्ही बच्चे में से एक ने किस गोली को मारना है, यह उस गोटिया फेकने वाले बच्चे को बताया. उस बच्चे ने, हाथ में एक गोटी लेकर, थोड़ी सी एक आँख बंद करके , उस गोटी को लक्ष्य किया और उस गोटी को हाथ में रखी गोटी से फेककर मारा. एकदम से सभी बल्लू बल्लू करके चिल्लाने लगे. उसके द्वारा मारी हुई गोटी, किसी दूसरी ही गोटी को लगी थी. गोटी मारने वाले के चेहरे पर निराशा छा गयी, उसने निराश चेहरे से अपनी निकर की जेब में हाथ डालकर कंचे निकाले और उसमे से तीन कंचे गिनकर खेल में डाल दिए. अब अगला बच्चा खेल खेलने के लिए तैयार हो गया. गणेश को यह सब देखकर आनंद आ रहा था. वह अपनी बचपन की यादो में खो गया. बचपन में वह बच्चो के साथ ऐसे ही कंचे खेलता था।.अचानक पीछे से आयी आवाज से गणेश होश में आया. "पान होई गया साब" पान वाला चिल्लाया था. उसने उसके पास से पान लिया, पैसे दिए और वह पान मूह में ठूस लिया, फिर उसे एक सिगरेट देने को कहा. सिगरेट जलाकर, पान खाते-खाते गणेश, पेट भरे होने की तृप्त आत्मा के साथ, धीरे धीरे मंदिर के प्रवेश द्वार की तरफ बढने लगा. मंदिर में दो ही द्वार थे. मुख्य द्वार से अन्दर प्रवेश करने के बाद एक बड़ा हॉल था. हॉल में से अहाते की तरफ जाने पर, अहाते के बाहर एक पत्थर का बड़ा सा नंदी रखा था. जिसके पीठ और कंधे पर चढ़कर, गाँव के छोटे-छोटे बच्चे खेलते रहते थे. मंदिर में दो ही द्वार होने के कारण हॉल में काफी आड़ रहती थी. मंदिर के, हॉल के कोने में, आड़ में हमेशा ही ताश के एक दो खेल चलते रहते, और बाजार के दिन तो रहते ही रहते , साथ में, बंडू के होटल के गरम गरम मिर्ची के भजिये का भी बड़े स्वाद के साथ आनंद लिया जाता. वैसे ताश के खेल रोज ही खेले जाते. गणेश को ताश खेलने में कभी भी रूचि नहीं थी, पर यदि समय न कट रहा हो तो गणेश हमेशा ही अपने आफिस में से उठकर इस मंदिर में आ जाता था. वहा खड़े रहकर उन ताश के पत्तो को खेलते देखना गणेश को सुहाता था. कभी-कभी तो गणेश को आश्चर्य होता था की गावों में रहने वाले बच्चे इतना कठिन रमी का खेल इतनी आसानी से कैसे खेल लेते है. मतलब इन ग्रामीण बच्चो में भी सर्वसामान्य लोगो की तरह दिमाग होता है , लेकिन वे शायद इसका उपयोग काफी बार गलत या निरर्थक रस्ते के लिए करते है. गणेश मंदिर में ताश के खेल को देखने में तल्लीन था. तभी कोई दौड़ता हुआ आया- "ए चलो रे....... उधर बाजार में तमाशा (गोची) होई

गवा. " ताश का खेल आधे में ही रूक गया. सभी ने खेल में लगाये अपने अपने पैसे बाँट कर वापस ले लिए. एक ने ताश का बण्डल जेब में ठूस लिया. "क्या हुई गवा " किसी ने तो भी चिंतित स्वर में पुछा. "अबे जल्दी चलियो ......... उहा जाकर ही देख लियो ......... ईहाँ क्या चिल्लावे है ....... और ईहाँ टेम कोनो है. " वो बोला और जैसे हवा की तरह आया था वैसे ही हवा की तरह दरवाजे से बाहर निकल गया. सभी उसके पीछे दोड़ने लगे. गणेश की भी उत्सुकता बढने लगी. क्या हुआ होगा......... वह उनके पीछे दोड़कर तो नहीं.......... पर जितनी जल्दी हो सके उतने तेज कदमो से चलने लगा. बाजार में एक स्थान पर बहुत सारी संख्या में लोग जमा थे. मंदिर में ताश खेलने वाले सभी लोग वहा आक़र रूक गए. गणेश भी भीड़ में घुसकर, एड़ी के बल पर, अपने पैरों को उचा करके, क्या हुआ ये देखने लगा. भीड़ के बीच में चल रहे द्रश्य को देखकर, गणेश को अपना दिल बैठता हुआ सा महसूस हुआ, उसके हाथ पैर ठन्डे पड़ गए, चेहरा एकदम सफ़ेद हो गया. वहाँ पर मधुरानी एक गवार से दिखने वाले व्यक्ति को अपनी अस्सल कोल्हापुरी चप्पल से बुरी तरह पीट रही थी. वह व्यक्ति अपने दोनों हाथो से उसके मार से बचने का प्रयत्न कर रहा था और उसे जो शर्मिंदगी महसूस हो रही थी वह भी छिपाने का प्रयत्न कर रहा था. जो व्यक्ति मार खा रहा था, वह शायद इन ताश खेलने वालो में से किसी एक का मित्र था. क्योकि इनमे से एक बीच में आया- "क्या हुई गवा " उसने पुछा. मधुरानी अत्यंत आवेश और गुस्से में थी. उसी आवेश में उसने, जो बीच में आया उसे भी दो तीन चप्पले जड़ दी. "मरद - औरत के झगड़े और रास्ते में हो रहे झगड़े के बीच नाहीं पड़ना चाहिए............ ई कहने वाले जूठ नाहीं कहते" बाजु में खड़े एक वृद्ध ने सुझाव दिया। "मधुबाई.........." वह कहने का प्रयत्न करने लगा. "मधुबाई......... क्या हुई गवा .... तनिक बताओ तो " बीच में पड़े व्यक्ति ने मार खाकर बड़े ही कातर स्वर में पुछा. "मरे, ........... की समझता है.... मुर्दे....... भीड़ में से जाते जाते चिमटी ली मरे ने............. उस चंडाल से कहियो घर जाकर उसकी माँ बहन की चिमटी लेइयो ........." बीच में पड़ने वाला क्या कहे, उसे समज नहीं आया, फिर भी वह बोला......... " किहा चिमटी लीयो मधुबाई" "मरे, अब तुझे की खोलके बताऊ ......... और ई मधुबाई , मधुबाई क्या लगा रखा रहे ....... में क्या तुझे तमाशे में नाचने वाली बाई नजर आवे है " "वैसा नाहीं मधुबा..... मधु ..... बहन " उसने कहा. " बहन " उसके मुँह से बहुत मुश्किल से निकला था. गणेश ने मधुरानी का ऐसा चंडी अवतार पहले कभी नहीं देखा था. उसने मन ही मन में मधुरानी की जो कल्पना की थी उसकी छबी मलिन पड़ गयी. वह एकदम निराश, हताश दिखाई देने लगा.

चार पाच दिनसे गणेश मधुराणी की दुकान की तरफ फटकाभी नही - वैसी उसकी हिम्मत ही ना बनी. एक दो बार खिडकीसे बाहर झांककर देखते वक्त मधुराणीसे नजर मिली थी ... बस उतनीही. तब भी उसे वह बडी बडी आंखोसे उसकी तरफ़ देख रही मिली थी. कभी उसे उन आखोमें ' वह मुझसे ऐसा क्यो बर्ताव करता है? ' ऐसा ऐतराज और गुस्सा दिखता तो कभी जुदाई का गम दिखाई देता. कभी ' मेरी कुछ गल्ती हो तो मुझे माफ़ करदो' ऐसी बिनती दिखती थी. उसे इस बातका अचरज था की मधुराणी आंखोकी भाषा से इतना सबकुछ कैसे बोल पाती है.... या फिर यह सारे उसनेही अपनी सुविधा की हिसाबसे लगाए मतलब... थे ? बाहर कुछ गडबड सुनाई दे रही थी इसलिए गणेशने

खिडकीसे झांककर देखा. " ए पांड्या ... जल्दी आई गवा ... उधर एक गेसींग मिल गया है रे " खिडकीके बाहर किसी लडकेने मानो ऐलान कर दिया और वह नदीकी तरफ़ दौड पडा. उसके पिछे और दो चार लडके दौड पडे. और चबुतरे पर बैठे बुजुर्ग लोग असमंजससे इधर उधर देखने लगे. गणेशका ध्यान मधुराणीकी तरफ़ गया. वह गल्लेपर बैठकर एक लडकेसे गुफ़्तगु कर रही थी. वह लडका नदीकी तरफ़ हाथसे इशारे कर उसे कुछ बोल रहा था. अब वह लडका भी नदीकी तरफ़ दौड पडा. तभी गणेशकी मधुराणीसे नजर मिली. उसने उसे एक मिठीसी स्माईल दी. गणेशके चेहरेपरभी स्माईल झलकने लगी . लेकिन फ़िर अचानक उसे मधुराणीका वह बाजारमें दिखा चंडीका अवतार याद आ गया. झटसे वह खिडकीसे बाजु हट गया. शामको आसमानमे सुरज डुबनेसे फ़ैली लाली दिख रही थी. नदी के इस तरफ़, गावके बगलमें एक गन्ने का खेत था. वहां एक जगह गणेशको लोगोंकी भिड दिखाई दी तो गणेश भिडकी तरफ़ निकल पडा. अभीभी काफ़ी ग्रामस्थ उस भिडकी तरफ़ दौड रहे थे. गणेशभी अब जल्दी जल्दी चलने लगा. अबतो अंधेरा होनेको आया था. इसलिए कुछ लोग लालटेन लेकरभी आ रहे थे. गणेश जब भिडके पास पहुंच गया तब सारे लोग एकदम शांत होगए. कुछ लोग गणेशकी तरफ़ एकटक देखने लगे. तो कुछ लोग भिड्के बिचोबिच देखने लगे. भिडके बिचोबिच वह गुंगा और गुंगी गर्दन झुकाकर खडे थे. तभी गणेशने देखा की एक आदमी आवेशसे उस भिडमें घुस गया और उस गुंगीको पिटने लगा. " रांड ... हमरेही घर जनमनी थी तोहार ... " बह उस गुंगीको बेदम मारने लगा. गुंगी जोरजोरसे चिल्लाने लगी. वह चिल्ला रही थी की रो रही थी, समझना मुश्कील था, और भीड का भी उससे कुछ लेना देना नही दिख रहा था. उसपर वह गुंगा गुस्सेसे आग बबुला होकर उस आदमी की तरफ़ लपक पडा. तभी भिडमेंसे दो चार ताकदवर लोगोंने उसे पकड कर रोक लिया. " ... गावमें मुंह दिखायने लायक नाही रखा तुने... अबही तुमको बहुत बेदम मारुंगा ... और मारते मारते मरही जाए तो बहुतही अच्छा होईगा... तुमरा काला मुंह देखनेसे तो जेलमें जानाही अच्छा होइगा. " गणेशको अब माजरा क्या है ... थोडा थोडा समझमें आने लगा था. गुंगेने और गुंगीने यहां खेतमें कुछ तो प्रेमप्रताप किया होगा. और उसे मारनेवाला उसका बाप होगा. गुंगीका बाप - एक तरफ उसका मुंह चल रहा था तो दुसरी तरफ़ उसके हाथ और लात. अब गुंगी निचे जमीनपर गीर गई थी और उसका बाप उसे हाथ और लात दोनोंसे मार रहा था. पहले पहले गणेशको उसका बाप जो कर रहा था वह सही लग रहा था. हर एक हाथ लात की मारसे उसके दिलको एक सुकुनसा महसुस हो रहा था. सचमुछ उसने उसके बापको गांवमें मुह दिखानेके लिए भी जगह नही छोडी थी.... मै अगर उसके बापके जगह होता तो उसकी जानही लेता ... गुंगीतो गुंगी उपरसे काफ़ी कारनामेवाली दिखती है ... दुसरा कोई नही मिला तो उसने बराबर एक गुंगाही ढुंढा .... अब उसके बापको उसके शादीका काफ़ी मुश्कील होगा ... . हां कोई बुढा, बेवडा करेगा उससे शादी और उपरसे काफ़ी दहेजभी लेगा... कुछ क्षण गणेशको वह उस गुंगीका मानो बापही हो ऐसी अनुभूती होती रही. लेकिन जल्दीही जो हो रहा था वह उसके मन को खटकने लगा. जो हो रहा है वह कोई ठिक नही हो रहा है ऐसा उसे लगने लगा. गणेश अब एक इन्सानियत के नाते सोचने लगा. होगया होगा बेचारीको उस गुंगेसे प्यार... उसकाभी शायद इसपर प्रेम होगा ... अच्छे लोगोंनेही प्यार करने का क्या ठेका ले रखा है... ? ... क्या ऐसा कही लिखकर रखा है ?... वे भी हमारे तुम्हारे जैसे ही ना... उनकीभी भावनाएं हमारे जैसीही ... उनकीभी हमारे तुम्हारे जैसीही जरुरते ... सिर्फ फ़र्क यह है की वे गुंगे है ... और उनका गुंगा

होना क्या उनका चुनाव था ... बेचारोके किस्मत का एक हिस्सा था ... अचानक गणेश जोशमें आने लगा. उसे गुंगीका बाप जो उसे मार रहा था और वह तडप रही थी - देखा नही जा रहा था. उस गुंगीकी चिखे... और गुस्सेसे भरा चिल्लाना उससे देखा नही जा रहा था. "रुको... ये क्या कर रहे हो आप लोग ? ... क्या बेचारीको जानसे मारोगे ?..." एक आवाज आया. गुंगीका बापभी थोडी देरके लीए स्थंभीत हो गया. सब लोग कुछ क्षणके लिए शांत हो गए. गणेशको अपने आपपरही भरोसा नही हो रहा था की वह आवाज उसका खुद का था. गुंगीका बाप अब गणेशको जादा तवज्जो ना देते हूए फिरसे गुंगी को पिटने लगा. " भाईसाब ... ये क्या कर रहे हो ... मर जाएगी बेचारी " " बेचारी ?" उसके बापने रुककर बुरासा मुंह बनाकर कहा. उसका बाप उसे फिरसे पिटने लगा. अब गणेशभी उन्हे रोकनेके लिए आगे बढ गया. " बाबूजी ... इस झमेलेमे मत पड़ियो ... नाही ही तो बादमा बहुत पछतावेंगे . .. " " ईहा सरकार जिस कामके लिए भेज रहत ... उही चुपचाप करियो ... इ गाव के झमेलेमें मत पडियो " "ई कोय तुमरी तालूकेकी जगा ना होवे ... उहा चलता होयगा ई सब... ईहा नाही चलेगा... " " ऐसी घटना हमरे गांव मा कभी ना होवे है ... ई पहली बार होएगी ... " " हम जब बच्चे रहत थे तब एक बार पाटीलके लौंडी को चमारके लौंडे के साथ पकडा रहत . ... पाटीलव उसके टूकडे टूकडे करके कुत्तेको डाला रहा उस वखत . .. " एक बुढा बता रहा था. " फिरंगी पुलीस आवत रही उस वखत ... पुछताछ कराइ वासते ..." गणेशने उस बुढेकी तरफ़ देखा. मानो वह अपनी मुक जबानमें उसे पुछ रहा था, ' तो फ़िर?... आगे क्या हुवा ? ' " पुलीस पुछ-पुछ कर थक गई रहत ... वोतो पाटील को कोई लडकी रहत उही साबीत ना कर पावे ... खुनकी बात तो बहुत दूर " गणेश अचंभीत होकर उस बुढेकी तरफ़ देखने लगा. सचमुछ ऐसा हुवा होगा क्या ?.... " लेकीन चाचाजी वह बहुत पुरानी बात होगई... अब दुनिया काफ़ी आगे बढ चुकी है ..." गणेश उस बुढे को समझानेकी कोशीश करने लगा. " भाईसाब ... दुनिया आगे बढ गई इसका ये मतलब नही की गन्नेके के खेतका सहारा लेकर एकदुसरेके उपर चढ जावो ..." एक तिरछी टोपीवाला आदमी बोला. उस गंभीर वातावरणमेंभी हंसी की हल्की लहर दौड गई. हंसनेवाले खांसकर जवाने लडके थे. वह सब सुनकर गुंगीका बाप और जादा चिढ गया और पागलसा हो गया. उसने गुस्सेके जोशमे नजदीक पडा हुवा एक बडासा पत्थर दोनो हाथोसे जोर लगाकर उपर उठाया. पत्थर काफ़ी भारी होने से उसे कष्ट हो रहा था. अब उसने वह पत्थर अपने सरके उपरतक उठाया था. और बेदर्दीसे वह पत्थर वह गुंगीके सरपर मारनेही वाला था उतनेमें ...

अब उसने वह पत्थर अपने सरके उपरतक उठाया था. और बेदर्दीसे वह पत्थर गुंगीके सरपर मारनेही वाला था उतनेमें ... " रुको " एक रौबदार आवाज गुंजा . सारे लोग स्तब्ध होकर पिछे मुडकर देखने लगे. गुंगीके बापने वह पत्थर चुपचाप एक तरफ फ़ेंक दिया. गणेशनेभी पिछे मुडकर देखा. पिछे गांवका सरपंच खडा था. गणेशने पहले कई बार सरपंचका सात्वीक रुप देखा था. लेकिन आज पहली बार इस तरहके प्रसंगसे खंबीरतासे निबटते हूए गणेशका सरपंचके इस अलग रुपसे परिचय हुवा था. " रघू ... ई तुम्हरी लडकी है ... इका मतलब ये नाही की तुम कानुन हाथमें लेय लो " सरपंच गुंगीके पास जाकर खडे होते हूए बोला. वहा खडे होकर उसने अपनी पैनी नजर एकबार चारो तरफ़

दौडाई . मानो वे आखोंकी जबांसे वहा उपस्थीत लोगोंसे संवाद साध रहे हो. इतने लोग यहां पर होते हूए ऐसा जघन्य अपराध कैसे हो सकता है ?.... तुम सब लोगोंकी क्या मती मारी गई ?.... लडकीके बापका मै समझ सकता हूं ... उसके सर पर गुस्सेका भूत सवार था... . लेकिन तुम लोग ?... मानो सरपंच हरएकसे सवाल कर रहा था. उनके शरीरको भेदकर निकलती नजरसे नजर मिलानेकी किसीकी हिम्मत नही बन रही थी. सारे लोगोंने अपनी नजरे निचे झुकाई थी. " गुंगेका बाप कहां है ? " सरपंचने भिडसे सवाल पुछा. भिडमें थोडी हलचल दिखाई दी. जहा गुंगेको कुछ जवान लडकोने पकडकर जकड रखा था, वहां पिछेसे एक देहाती सामने आया... डरते हूए ही. " इहा आओ ... ऐसे सामने... " सरपंचने उसे एक तरफ़, सामने आनेका इशारा किया. " और तुम... गुंगीका बाप ... रघु... इहा आओ ... ऐसे... तनिक उके बगलमाँ खडे हो जाओ " सरपंचने गुंगीके बापको आदेश दिया. वह गुंगेके बापके बगलमें जाके खडा हो गया. गुंगीका बाप हीन दीन अवस्थामें खडा था. उसने एकबार अपने बगलमें ख़डे गुंगेके बापकी तरफ़ देखा लेकिन उसने उसकी उपस्थितीका ऐहसास दिखानेकीभी जरुरत नही समझी. वह अक्कड और हेकडीके साथ बेफ़िक्रसा खडा था. " ए ... गुंगेको छोड दियो . ... " सरपंचने अगला आदेश दिया. गुंगेको पकडे जवानोने उसे छोड दिया. " उको ईहां खडा करो... उके बापके बगलमाँ .... " सरपंचने उन जवानोंमेसे एक जवानको फ़र्माया. बह युवक गुंगोको पकडकर उसके बापके बगलमें ले गया. " तूम तुमरी बेटीको इहा लाकर खडा करीयो " सरपंचने लडकीके पिताको आदेश दिया. लडकीका बाप धीरे धीरे लडकीके पास गया. गुंगी अभीभी जमिनपर पडी अपना मुंह छुपाकर रो रही थी. उसका बाप उसके पास जाकर खडा हो गया. वह कुछ क्षण हिचकिचाया. उसे समझ नही आ रहा था की मै अब उसे किस हकसे उठाऊ. उसने झुककर उसके कंधेको पकडकर उठाया. वह दर्दसे कराहती हुई उठ गई. उसकी और उसके बापकी एक क्षण के लिए नजरे मिल गई और वह अपने पितासे लिपटकर रोने लग गई. उसके बापकेभी आखोंमे आंसू आगए और अनजानेमें उसका धीरज भरा हाथ उसे सहलाने लगा. वह दृश्य देखकर गणेशका दिलभी भर आया था. " उको इहा लेकर आओ ...ऐसन " सरपंचने उसे टोकते हूए फ़िरसे आदेश दिया. रघूने गुंगीको अपनेसे अलग किया और उसके कंधेको पकडकर सामने लेकर गया. वह उसके पहले जगहपर खडा होगया और बगलमें उसने अपने बेटीको खडा किया. गुंगी गर्दन झुकाकर खडी हो गई. इतनी बडी भिडसे आंखे मिलानेकी शायद उसकी हिम्मत नही बन रही थी. गणेशने पहली बार उस गुंगीको इतने करीबसे देखा था. वह खुबसुरत थी. रंगभी गोरा था. शरीर भी सुडौल था. लेकिन इतने सौदर्यमें एक ही बाधा थी की वह गुंगी थी. अगर उसके गुंगेपन के बारेमें पता नही हो तो कोईभी पहली नजरमें उसे प्रेम कर बैठे ऐसा उसका रुप था. " अब सारे लोगन ... मेरी बात सुनियो ... " सरपंचने सबको आदेश दिया. गुंगीका बाप सरपंचकी तरफ़ देखने लगा. गुंगेका बापभी ना चाहकरभी सरपंच की तरफ़ देखने लगा. गुंगी बेचारी अबभी अपनी गर्दन झुकाए खडी थी. और गुंगा कभी सरपंचकी तरफ़ तो कभी गुंगीकी तरफ़ देख रहा था. उसकी गुंगीकी तरफ़ देखनेवाली नजरमें उसको उसके बारेमें लगने वाली चिंता और संवेदना दिख रही थी. बेचारा शायद सचमुछ उससे प्यार करता था. वह गुंगा होकरभी उसकी हर हरकतसे उसका गुंगीके प्रती प्रेम व्यक्त हो रहा था. शायद वह बोल पाता तो बोलकरभी इस तरह व्यक्त नही कर पाता. फिरभी उसके मुक भावनाओंको शायद गुंगीसे जादा कोई नही समझ पाता. " तुम लोगन को अपनी इज्जत प्यारी रही ? ..." सरपंचाने लोगोंसे सवाल किया. सिर्फ़ गुंगीके पिताने सरपंचकी

तरफ़ आगतिकतासे देखा. गुंगेका बाप सरपंचसे नजरे चुरानेकी कोशीश कर रहा था. " तुम लोगन को अपने गावकी इज्जत प्यारी रही ? " सरपंचने इसबार गुंगेके पिताकी तरफ़ रुख करते हूए गंभिरतासे पुछा. गुंगेके पिताने किसी तरह हिचकिचाते हूए सरपंचके नजरसे नजर मिलाई. " तो फ़िर सुनियो पंचायतका फैसला… मै इहा इसी वक्त कर देता हूं ..." सारे लोग सरपंच आगे क्या कहता है यह सुननेके लिए बेताब थे. " इ दोनो की जल्द से जल्द पहला मुहूर्त देखाइके शादी कर डालियो ..." सारे लोगोंने आश्चर्यसे सरपंचकी तरफ़ देखा. अरे यह हमारे दिमागमें क्यो नही आया ? .... शायद उनको ऐसा लगा होगा . सारे लोगोंके नजरोंमे हामी दिखने लगी थी. " काहे रघू तुम्हे कबूल रही ?" सरपंचने गुंगीके पितासे पुछा. " जी ... महाराज ... लडकेके बापने हमका सहारा दियो तो बडे उपकार होंईगे हमरे उपर .." गुंगीका बाप गुंगेके बापकी तरफ़ बडी आशासे देखता हुवा बोला. गुंगेके बापने कोई प्रतिक्रिया व्यक्त नही की. वह सिर्फ़ गहरी सोचमें डूबे जैस दिखने लगा खा. " काहे पांडूरंग तुमको कबूल रही ?" सरपंचने गुंगेके बापसे पुछा. " जी सरकार ... जोबी आपकी मर्जी " गुंगेका बाप हडबडाकर बोला. सारे भिडमें जमे लोगोंके चेहरेपर खुशी झलकने लगी थी. गणेश कौतुहलके साथ सरपंचकी तरफ़ देखने लगा. इसे कहते है नेतृत्व ... सचमुछ ... सरपंचजी ... आज मान गए आपको ... सरपंचने एक चुटकीमें सबको पसंद आएगा ऐसा न्याय और फ़ैसला देकर इतनी बडी समस्या सुलझाई थी. " अरे फ़िर एक दुसरेका मुंह काहे ताक रहे .... चलो शुरु होई जाओ और कामपर लग जाओ ... हमें जल्द से जल्द शहनाई बजानी है का नाही ? " सरपंचभी खुशीशे बोल उठा और गांव की दिशामें तेजीसे चल पडा. सारे लोगभी अब खुशीसे सरपंचे पिछे पिछे चल पडे. कुछ उत्साही जवान लडके खुशीके मारे आवेशके साथ घोषणाए देने लगे. "सरपंच.." "जिंदाबाद" "सरपंच' "जिंदाबाद"

गणेश जितना हो सके उतना मधुराणीके दूकानपर जाना टालने लगा था. लेकिन आज उसकी मजबुरी थी. क्योंकी उसे कुछ सामान खरीदना था और गावमें दुसरा दुकान जो था वहभी बंद था. दुसरा दुकान हर शुक्रवारको बंद रहता था. हर शुक्रवारको उस दुकानदारके शरीरमें गजानन महाराज प्रवेश करता है ऐसा लोग कहते थे. लेकिन गजानन महाराजका दिन तो गुरुवार.... फ़िर गुरुवार के बजाय... शुक्रवारको कैसे गजानन महाराज उसके शरीरमें प्रवेश करते है .... गणेशने उस बात पर काफ़ी रिसर्च करनेकी कोशीश की. काफ़ी लोगोंसे इस सवालका जवाब ढुंढनेकी कोशीश की. लेकिन किसीके जवाबसे गणेशका समाधान नही हूवा. लेकिन एक दिन ऐसेही सोचते हूए गणेशको उसका जवाब मिल गया. गुरुवार साप्ताहिक बाजार का दिन था. उस दिन खरीदारीके लिए आस पडोसके देहातके लोग उजनीमें आते थे. उनकी पुरे हफ़्तेमें जितनी कमाई नही होती होगी उससे कई जादा कमाई उस एक दिनमें होती थी. मतलब गुरवारका दिन दुकान बंद रखना कतई उसके हितमें नही था. इसलिए शायद एड्जेस्टमेंट के तौरपर गजानन महाराज उसके शरीमें गुरवार के बजाए शुक्रवारके दिन प्रवेश करते होंगे. गणेश मनही मन मुस्कुराने लगा. सामान लेनेके लिए थैली लेकर गणेश बाहर निकल पडा और उसने अपने दरवाजेको ताला लगाया. मधूराणीसे अपनी नजरे टालते हूए वह उसके दुकानमें गया. वह क्या चाहिए यह बताने वाला था इतनेमें वहा एक 3-4 सालका लडका दौडते हूए आगया. "

मासी एक चॉकलेत देइयो ..." एक सिक्का सामने लकडीके पेटीपर रखते हूए वह अपनी तोतली बोलीमें बोला. मधुराणीने तुरंत उसे उठाकर अपने पास लिया, " मासीके बछडे ...किते दिनसे आए रहत ... इते दिन कहा था बबुआ .." मधुराणीने उसे अपने पास लेते हूए तिरछी नजरोंसे गणेशकी तरफ़ देखते हूए कहा. " जावो ... मै किस्से बात नाही करत .... " मधुराणीने इतराते हूए लडकेसे कहा. बिचबिचमें वह तिरछी नजरोंसे गणेशकी तरफ़ देखती. " मासी चॉकलेत ..." वह बच्चा फ़िरसे बोल उठा. " देती रे मेरे... लाल ... " मधुराणीने तिरछी नजरसे गणेशकी तरफ़ देखते हूए उस बच्चेको लगातार दो तिन बार चुमा. मधुराणीने उस लडके को छोड दिया और चॉकलेट निकालकर उसके हाथमें थमा दिया. चॉकलेट हातमें आतेही वह लडका तुरंत दौड पडा. " ऐसे आवत रहो मेरे बछडे .. " मधुराणी जोरसे बोली. दौडते हूए उस लडकेने मधुराणीकी तरफ़ देखा और वह मुस्कुरा दिया. " बडा प्यारा बच्चा है जी " मधुराणीने गणेशसे कहा. मधुराणी गणेशसेही बात कर रही थी इसलिए गणेशको एकदमसे क्या बोला जाए कुछ सुझ नही रहा था. " हां ना... बच्चे मतलब भगवानके यहांके फ़ुल होते है " गणेश किसी तरहसे बोल पडा. " भगवानको मानत हो ?" मधुराणीने गणेशसे पुछा. " वैसे मानताभी हूं ... और नहीभी " गणेशने कहा. " कभीबी किसी एक छोर को पकड़े रहियो ... दुइयो छोर पे होनेकी कोसीस करियो तो बडी मुस्कील होवे है ... " मधुराणी गणेशके आखोंमे आखे डालकर बोली. उसके बोलनेमें हलकीसी तकरार महसुस की जा सकती थी. गणेश उसके बोलको समझनेकी कोशीश करने लगा. " छोडो जान दो... बहुत दिनवा के बाद दिखाई दिए रहे ... कुछ लेनेके लिए आए रहे या फिर ऐसेही " मधुराणीने एकदमसे अपना मूड बदलकर ताना मारा. " वैसे नही ... मतलब थोडा सामान लेनेका था.... " गणेश हिचकिचाते हूए बोला. " तो भी मै बोलू... आज बाबू सुरजवा पश्चिमसे कैसे निकल पडा " मधुराणीने फ़िरसे ताना मारा. " नही वैसे नही ... " गणेश अपना पक्ष मजबुत करनेके उद्देश से कहने लगा. " आज शुक्रवारको उधरका दुकान बंद होवेगा इसलिए आए होगे " मधुराणीने अपनी नाराजगी जताते हूए कहा. गणेशको क्या कहा जाए कुछ समझमें नही आ रहा था. गणेशका बुझसा गया चेहरा देखकर मधुराणी खिलखिलाते हूए बोली. " तुम तो एकदम नाराज होये जी .... मै तो बस मजाक कर रही थी बाबूजी " मधुराणी इतने जल्दी जल्दी अपने भाव कैसे बदल पाती है इस बातका गणेशको आश्चर्य था. कही वहभी तो नही गडबडा गई की कैसी प्रतिक्रिया दी जाए. लेकिन एक बात तो पक्की थी की मेरा रुखा बर्ताव उसे कतई पसंद नही आया था... गणेशका एकदमसे दिल भर आया. मानो उसका उसके प्रति प्रेम उमडने लगा था और किसी प्रेमीने ठूकराए प्रेमीकाके जैसी उसकी अवस्था लगने लगी थी. अपने दिलका दर्द छिपानेके लिएही शायद वह इतने जल्दी जल्दी अपने भाव बदल रही थी. उसे लगा तुरंत आगे जाकर उसे अपने बाहोमें भर लूं. उसे सहलाऊं... और उसके दिलका दर्द कम करनेकी कोशीश करुं. शायद मेरा बर्ताव उससे कुछ जादाही रुखा था... मुझे उसे इस तरहसे एकदम तोडकर नही बर्ताव नही करना चाहिए था. .... उसपर जी जानसे मरनेवाला उसका सखा इस दुनियामें नही रहा... . इसलिए शायद वह मुझमें उसका सखा ढुंढनेकी कोशीश कर रही होगी... लेकिन मै कैसे उसके पतीकी जगह ले सकता हूं.?... . मेरीभी कुछ मर्यादाएं है... फ़िरभी अपनी मर्यादाओंमे रहके जितना हो सकता है उतना उसके लिए करनेमें क्या हर्ज है ... तबतक मधुराणीने गणेशका सामान निकालकर उसके सामने रख दिया. " ई लो अपना सामान " मधुराणीने कहा. " लेकिन मैनेतो क्या क्या निकालना है कुछ बोलाही नही ... " " बाबूजी ... मै क्या आपको एक दो

दिनसे जान रही ... तुमको कब क्या चाहिए हो ... मई सब जानत रही ... " सचमुछ उसे जो चाहिए बराबर वही सामान उसने निकाला था ... कितनी बारीकियोंसे वह मुझे जानने लगी है ... यहांतक की साबुन कौनसी लगती है ... चाय कौनसी लगती है ... और कितनी लगती है ... सचमुछ वह मुझसे प्यार तो नही करने लगी ... शायद हां ... नहीतो मेरी इतनी छोटी छोटी चिजोंपर वो भला क्यो ध्यान देती... उधर दिमागमें विचारोंका सैलाब चल रहा था और बाहरी तौर पर वह अपने थैलीमें अपना सामान भरने लगा था. एक हाथसे थैली पकडकर दुसरे हाथसे सामान भरनेमें उसे दिक्कत हो रही थी. " लाओ जी मै पकडाए देती हू थैली " कहते हूए मधुराणीने अपने दोनो हाथोसे थैली पकड ली. थैलीका एक तरफ़का हिस्सा गणेशने पहलेसेही पकडा हूवा था. उस हिस्सेको मधुराणीने इस तरहसे पकडा की गणेशका हाथभी उसके हाथमे आ जाएं. अचानक मधुराणीने उसका हाथ अपने हाथमें लेनेसे गणेश हडबडा गया. उसने हडबडाहटमें अपना हाथ झटसे पिछे खिंच लिया. लेकिन अगलेही क्षण उसे अपने गल्तीका अहसास होगया. मै भी कितना पागल ... अपना हाथ पिछे खिंच लिया ... कितना अच्छा मौका था. ... दैव देता है और कर्म ले जाता है ... लोग झुट नही कहते ... मुझे थैलीका दुसरा हिस्सा फिरसे पकडना चाहिए ... वह थैलीका मधुराणीका हाथ रखा हुवा हिस्सा पकडनेके लिए मन मन निश्चय करने लगा था. लेकिन उसकी हिम्मत नही बन रही थी. गणेशकी वह हडबडाहट देखकर मुस्कुराते हूए मधुराणी बोली , " बाबूजी आपतो एकदम वो ही हो ... आपके बिवी का न जाने कैसा होवे रहे " अरे क्या कर रहा है ? ... वह तो सिधा तुम्हारे मर्दानगीपर घांव कर रही है ... गणेशने पक्का निश्चय कर मधुराणीका हाथ रखा हुवा हिस्सा पकडनेकी चेष्टा की. लेकिन तबतक थैलीमें पुरा सामान डालना हो गया था. " अब और कुछ डालना है ... थैलीमें " गणेशने उसका थैलीके साथ पकडा हुवा हाथ देखकर मजाकमें कहा. " नही .. बस इतनाही " कहकर गणेशने फिरसे अपना हाथ पिछे खिंच लिया. मधुराणी नटखटसी फिरसे मुस्कुराने लगी. गणेश शर्माकर लाल लाल हो गया था. उसे अपना खुदकाही गुस्सा आ रहा था. की वह ठिकसे इतने बडे मौके का फायदा नही ले पा रहा था. इसलिए उसका चेहरा औरही लाल हो गया था. उस अवस्थामें उसने झटसे थैली उठाई और तेजीसे अपने कमरेकी तरफ़ निकल पडा. कमरेका ताला खोलकर अंदर जानेसे पहले उसने एकबार पलटकर मधुराणीकी तरफ़ देखा. वह अबभी उसकी तरफ़ देखकर मुस्कुरा रही थी. न जाने क्यो उसे क्या लग रहा था - कही वह यह तो नही सोच रही की , '' कितना बेवकुफ़ है ... कैसा होगा इसका.' वह झटसे कमरेंमें घुस गया. दरवाजा बंद करनेके लिए पलटनेकीभी उसकी हिम्मत नही बनी. कमरेमें आतेही सिधा वह बाथरुममें चला गया. लोटेसे मटकेका ठंडा पाणी निकालकर चेहरेपर छिडका. क्या कर रहा है तू ... वेवकुफ़ के जैसा ... वह सिग्नलपे सिग्नल दे रही है .... और तूम हो की बस ढक्कनके जैसे कुछ नही कर रहे हो .... नही कुछतो करना चाहिए ... गणेशने अपना जबडा कस लिया. मैने अपने आपपर बहुत संयम रखनेका प्रयत्न किया. ... लेकिन मधुराणी तुम ही हो की जो मेरे प्रयत्नको यश मिलने देना नही चाहती ... अब मै हार गया हूं ... पुरी तरह हार गया हूं ... अब इसके आगे जो भी होगा उसके लिए मै जिम्मेदार नही होऊंगा ... उसके लिए मधुराणी तुम ही पुरी तरहसे जिम्मेदार होगी ... ऐसा विचार मनमें आते ही गणेशको हल्का हल्का महसूस होने लगा था. उसके अंदरके अपराधके भाव पुरी तरहसे नष्ट हो गए थे.

पाटिलकी हवेली पर हमेशा चहल-पहल का माहौल बना रहता था , दरअसल यह एक पुरानी हवेली थी जो छोटी पहाड़ी पर बनी हुई थी . इसके चारों ओर एक दीवार बनी हुई थी और पहरे के लिए चार पाँच जगह इसी दीवार पर सुरक्षा चौकियाँ बनी हुई थी, जिसमें चौकीदार पहरा दिया करते थे . आज कल वह चौकियाँ खाली रहतीं थी , क्योंकि अब वैसी सुरक्षा की ज़रूरत नहीं थी . आज हवेली में खास बैठक बुलाई गयी थी . एक एक कर गाँव वाले आने लगे . पाटिलकी हवेली से बुलावा गाँववालों के लिए बड़ी इज़्ज़त की बात होती थी . हालाँकि बैठक में गिने-चुने गाँववालों को ही बुलाया गया था. लेकिन बैठक में क्या चर्चा होती है इस बात को जानने कई गाँव वालों ने आस पास ही डेरा जमाया हुआ था , जिसे जहाँ जगह मिली वह वहीं बैठ गया . बैठक में हिस्सा लेने वाला शख्स बड़ी शान से सीना चौड़ा कर उस जमावड़े को बड़ी हिकारत से देखते हुए हुए हवेली के अंदर जा रहा था . बैठक के दौरान हवेली से बाहर किसी वजह से जो भी आदमी आता था उससे 'ताज़ा हाल' जानने के लिए लोगों का हुजूम उमड़ पड़ता था और वह बाहर आया हुआ आदमी ना - नुकुर करते भाव खाते हुए लोगों को अंदर की खबर देता था . गणेश जैसे ही हवेली के करीब पंहुचा उसने घड़ी में देख कर इस बात की तसल्ली करना चाही कि कहीं उसे देर तो नहीं हो गयी , उसने देखा तय समय को ५ मिनट बाकी थे . जैसे ही उसका ध्यान आस पास के जमावड़े की ओर गया उसका दिल ज़ोर ज़ोर से धड़कने लगा . उसने सोचा - मेरे यहाँ आने से पहले ही यहाँ बैठक तो शुरू नहीं हो गयी ... लेकिन बैठक को तो वक्त है... या बैठक शुरू होने के पहले ही कुछ हो गया ..... गणेश ने सरसरी निगाह से लोगों के जमावड़े का जायज़ा लिया. सबकी कौतूहल भरी आँखें उसी को देख रहीं थी . अब भीतर जा कर ही बात पता चलेगी....उसने खुद से मन ही मन कहा . गणेश ने जल्दबाज़ी में हवेली की ओर कदम बढ़ाए , लेकिन भीतर जाने के लिए दो-तीन रास्ते थे. वह ठिठक गया .अब इनमें से किस रास्ते से भीतर जाया जाए ? वह इस बात को सोचते हुए उसने आस पास नज़रें दौड़ाई , तभी पाटिल साहब का नौकर उसे दिखाई दिया . " यहाँ इस तरफ ..." उस नौकर ने एक जगह इशारा करते हुए कहा. गणेश उसके पीछे पीछे चल दिया , गणेश उसकी ओर देख कर मुस्कुराया . गणेश पहली बार इस हवेली में आया था. हालाँकि उसकी और पाटिल साहब की कई दफ़ा मुलाकात हो चुकी थी लेकिन वे सभी या तो आफ़िस में या गाँव के किसी आयोजन में हुई थी .वह नौकर घुमावदार रास्ते से होता हुआ गणेश को हवेली के उपरी हिस्से में ले गया , उपर आलीशान बैठक थी जहाँ गाँव के २-४ रसूखदार लोग बैठे हुए थे . गणेश को आते देख उनमें दुआ सलाम हुई .पाटिल और सरपंच का आना अभी बाकी था . गणेश बैठक के एक कोने में जा कर बैठ गया . बाकी लोग बाग बीड़ी , पान, चिलम , तंबाखू का मज़ा लेने में मशगूल थे और साथ ही साथ खेती किसानी की बातें हो रहीं थी . गणेश का उन लोगों में जा कर बात करने का जी नहीं हुआ, इसलिए एक तरफ वह अकेला ही बैठा रहा . उसके बगल में ही दूसरे कोने में एक बूढ़ा गाँववाला बैठा हुआ था . उस गाँववाले ने कमीज़ के नीचे हाथ डाल कर कुछ टटोला और बनियान के भीतर बनी ख़ुफ़िया जेब से खाकी कपड़े की छोटी से गठरी बाहर निकाली. उसने गठरी की गाँठ हौले से खोली. बड़े आराम से चिलम की सफाई की . चिलम के पिछवाड़े एक छोटी गोली जैसी कोई चीज़ थी , उसने वह चीज़ बाहर निकाली और उसे साफ किया और वापिस चिलम के पिछवाड़े डाल दिया. शायद वह चीज़ चिलम पीते हुए तंबाखू को मुँह के अंदर जाने से रोकने का काम करती थी , इसलिए उसे पिछवाड़े डाला जाता होगा. इसके बाद उसने उस गठरी से कपड़े की एक और छोटी गठरी निकाली . गणेश उस बूढ़े की

हरकतों पर बारीकी से नज़रें जमाए हुए था . उसने उस छोटी गठरी की गाँठ खोली उसमें मौजूद तंबाखू को उसने चिलम में दबा कर भर दिया . अब वह दोबारा गठरी में कुछ ढूँढने लगा. उसने उसमें से एक सफेद पत्थर का टुकड़ा निकाला उसे गाँव वाले 'चकमक पत्थर' कहते थे. और चकमक पत्थर के टुकड़े खेतों में या झरने के किनारे बालू में बहुतायत में मिलते थे . उस पत्थर को वैसे ही हाथ में पकड़े हुए गठरी से उसने कोई की-चेन जैसी चीज़ बाहर निकाली उस चीज़ के एक सिरे पर असल में लोहे की एक छोटी मोटी पट्टी थी और दूसरे सिरे पर उस पट्टी से बँधी हुई रेशमी चीज़ थी. उस रेशमी चीज़ को बीचों बीच काट कर एक छोटी सी डिबिया बनाई गयी थी , उस डिबिया में रूई रखी गयी थी . गणेश ने कभी किसी से इस बारे में पूछा था तो उसे बताया गया वह रूई कपास के बीजों के बजाए किसी जंगली पौधे के बीजों से बनाई गयी थी, जिसे वह लोग 'कफ' कह कर पुकारते थे . उस बूढ़े ने उस रेशमी डिबिया से थोड़ा कफ निकाल कर सफेद पत्थर के सिरे पर उसे लगाया और उस छोटी लोहे की पट्टी से उस पत्थर को जोरों से घिस कर , कफ जलाने ले किए वह चिंगारी पैदा करने लगा. दो तीन बार की गयी असफल कोशिशों के बाद चौथी बार उस कफ ने आग पकड़ ली . उसने वह जलता हुआ कफ चिलम के मुंहाने रखा और उसके पिछवाड़े एक छोटे से कपड़े की चिंदी ठूंस कर वह चिलम पीने लगा , जैसे जैसे वह जोरों से कश लेता था चिलम के मुंहाने पर उसे तंबाखू अंगारों की तरह लाल दिखता था . दो तीन लंबे कश ले कर बड़ी शान से वह बूढ़ा मुँह से धुआँ छोड़ रहा था . उसे अहसास हुआ की गणेश उसे काफ़ी देर से अपलक देखे जा रहा है अगली दफे दो चार लंबे कश ले कर धुआँ छोड़ते हुए उसने चिलम वाला हाथ गणेश की ओर बढ़ा कर बोला " पीवेगा ?" गणेश ने अजीब सा मुँह बना कर हाथ के इशारे से मना किया. " नाही? .... अरे बबुआ का नसा है इसका ...बहुत बढ़िया .... उ बीड़ी , सिगरेट मा कौनो दम नाही ... एक कस ले के तो देख" बूढ़े ने दोबारा मिन्नत की. "मुझे नही चाहिए ... " कहते हुए गणेश ने अपनी नज़रें उस बूढ़ें से हटा कर दूसरी ओर कर लीं .

गणेशकी नज़र बाहर खुले में बालकनी की तरफ गयी . वह उठ कर बालकनी में आ गया उसने आस पास देखा , यह हवेली गाँव की सबसे उँचाई पर स्थित थी , लिहाजा गाँव के सभी घर उँचाई से खिलौनों की भाँति दिख रहे थे. उन घरों के आस पास खेतों की हरियाली आँखों बड़ी ठंडक दे रही थी. और उस हरियाली के बीचों बीच सर्पिले घुमावदार मोड़ ले कर झरना कल कल करता बह रहा था . चारों ओर उँचे उँचे पहाड़ और टीले के बीच में बसे हुए गाँव की उस कुदरती खूबसूरती को वह निहार रहा था . लोगों में मची हलचल से वह अपनी सोच से बाहर आया , उसने पीछे मुड़ कर देखा . उस दीवानखाने में भारी भीड़ जमा हो गयी थी लेकिन अभी भी पाटिल साहब और सरपंच का कोई अता - पता न था . वह वापिस दीवानखाने में आया , उसकी जगह अभी भी खाली थी वह वहाँ जा कर बैठ गया. तभी गाँव के स्कूल मास्टर मते गुरु जी का आना हुआ , लोगों ने उनका अभिवादन किया , उन्होने बैठने से पहले पूरे दीवानखाने का जायज़ा लिया और कोने में बैठे हुए गणेश की ओर रुख़ कर लिया . इंसानी फ़ितरत भी बड़ी अजीब होती है, इतनी भीड़ में भी अपने बैठने लायक आरामदायक जगह तलाश कर ही लेता है . उन्होने सोचा.... कोने में बैठा हुआ गणेश भी सरकारी मुलाज़िम है और मैं भी सरकारी मुलाज़िम हूँ , हम दोनो की खूब जमेगी ... उन्होने गणेश को नमस्ते की और

उसके बगल में आ कर बैठ गये. "और गणेश जी सब कुशल मंगल ? बड़े दिनो बाद मुलाकात हुई" उन्होने बैठे हुए गणेश को थपकी देते हुए कहा . " जी हाँ ... हमारा आपके स्कूल की तरफ आना नहीं होता और आपका हमारे दफ़्तर में .... फिर ऐसे खास मौकों पर ही हमारी मुलाकात होती है " गणेश ने जवाब देते हुए कहा . " जी , यह भी खूब कही आपने " मास्टर जी ने कहा. तभी सरपंच का आगमन हुआ और दोबारा दुआ सलाम का दौर चल निकला . कुछ लोग उनका हाल चाल पूछने उनकी ओर चल पड़े . " आ गये सब के सब ? " सरपंच जी ने जानना चाहा . उन्होने ऐसा कर लोगों को अपने आने की खबर दी . " करीब करीब सब आ गये , सिर्फ़ पाटिल साहब का आना बाकी है.... में यूँ गया और यूँ उनको ले कर आया" उनका हाल चाल पूछने आया एक आदमी बोला . उसकी और गौर न कर सरपंच साहब बैठक के बीचों बीच आए और रसूखदार लोगों में जा कर बैठ गये . " शामराव जी सब ख़ैरियत ?" सरपंच ने शामराव के बगल में बैठते हुए पूछा. " का कहें हुजूर .... अब के बरस बड़ी हिम्मत कर बुआई करा है अब देखे हमरा किस्मत में का गुल खिलना लिखा है " शामराव ने जवाब दिया . " अरे कौनो चिंता का बात नाही अपने बड़ा काम किया आपको तो इनाम मिलना चाहिए सरकार से ... हौसला रखिए सरकारी अमले के पास ज़रूर कोई योजना होगी" सरपंच ने शामराव को तसल्ली देते हुए कहा और गणेश की ओर मुखातिब होते हुए बोले " अरे गणेश जी कोई नयी योजना है का? " " हाँ हैं न , इस बारे में विस्तार से बात करने के लिए मैं एक बैठक बुलाना चाहता हूँ " गणेश ने जवाब दिया. " अरे तो भई जल्दी करो.... कब लेओगे ?.... बताओ?" सरपंच ने लगेहाथ पूछ ही लिया. " जब भी आप कहें" गणेश ने कहा. "फिर ई शुक्रवार का दिन कैसा रहेगा ?" सरपंच ने पूछा " क्यों शामराव जी ?" " हाँ हुजूर चलेगा" शामराव ने जवाब दिया . " मुझे मंजूर हैं , मैं नोटिस तैयार कर चपरासी के ज़रिए सब तक पंहुचाता हूँ ..." गणेश बोला. " अरे चपरासी का कौनो ज़रूरत नाही ... सब इधर ही मौजूद हैं .... आप तो बस वखत बताओ" सरपंच ने कहा. "सुबह दस बजे कैसा रहेगा" गणेश ने सरपंच से पूछा . " चलेगा ..... क्यों गाँववालों ?" सरपंच ने बैठक में मौजूद अन्य गाँववालों की राय जानना चाही . " हाँ.. हाँ... चलेगा.. चलेगा" भीड़ में दो चार लोग बोले . " हाँ तो गणेश जी .. ई तय रहा .. शुक्रवार के रोज सुबह दस बजे " सरपंच ने फ़ैसला सुनाया. गणेश ने सहमति से गर्दन हिलाई . गणेश को सरपंच जी की हाथों हाथ फ़ैसला करने की अदा बड़ी भाती थी . उसे भला क्या खबर थी कि सरपंच की इसी आदत के चलते गाँव के कई लोगों को मायूसी होती थी , उनकी अक्सर यह शिकायत होती थी कि उनकी राय सरपंच कभी नहीं लेता , और उनकी तरफ से सारे फ़ैसले खुद ही लेता था .

अचानक गणेश को अहसास हुआ कि लोगों की बातचीत की आवाज़ें थम सी गयी .उस वक्त वह बगल में बैठे मास्टर जी से बतिया रहा था . उसने वजह जानने के लिए पीछे मुड़ कर देखा और यह देख कर हैरत में पड़ गया कि बैठक में मौजूद सारे लोग दरवाज़े की ओर एकटक देखे जा रहे थे . लोगों की देखा देखी उसने भी दरवाज़े पर नज़र डाली और वह यह देख कर सन्न रह गया .... चौखट पर मधुरानी खड़ी थी . वह आज सज धज कर आई थी . वह यहाँ क्यों आई ? क्या वजह हो सकती है ? ..... वह उसी को निहार रही थी. गणेश को काटो तो खून नहीं . वह सोचने लगा .... कहीं यह

बला मेरे पीछे तो यहाँ तक नहीं पंहुच गयी? इधर मधुरानी ने चौखट पर खड़े खड़े ही लोगों पर एक नज़र डाली . सरपंच जी को देखते ही उसने उन्हें राम-राम की. एक बार फिर उसने चारों ओर नज़र धूमाई और इस बार उसकी नज़र गणेश पर आ कर ठहर गयीं . गणेश उसको देख मुस्कुराया . वह गणेश की ओर धीरे धीरे बढ़ने लगी . वह जैसे जैसे पास आती जा रही थी गणेश के दिल की धड़कनें तेज़ होती जा रहीं थी. उसे पसीने छूट रहे थे . " अरी इहा आओ मधुरानी " सरपंच जी ने उसको पास बैठने के लिए पुकारा . " ना जी इहा कोने मा ही ठीक है" उसने जवाब दिया. अब कहीं जा कर गणेश की जान में जान आई. "यानी की वह इसी बैठक में हिस्सा लेने आई थी. मैं भी न जाने क्या सोच रहा था " गणेश ने मन ही मन कहा. गणेश की आँखों के सामने वह दृश्य तैर गया जब बीच बाज़ार एक लफंगें के चिकोटी काटने पर मधुरानी ने उसकी चप्पल से जम कर धुनाई करी थी . मधुरानी गणेश के एकदम करीब आ कर पालथी मार कर बैठ गयी थी . यह देख गणेश सोचने लगा - यहाँ जगह की कमी के चलते वह यूँ इस तरह मेरे पास आ मुझे छूते हुए बैठी है .... नहीं वह अगर चाहती तो लोगों को तोड़ा खिसकने के लिए कह कर अपने बैठने के लिए जगह आराम से बनवा सकती थी ... लेकिन उसे तो मास्टर साहब और मेरे बीच ही बैठना था .. ज़रा देखूं तो क्या उसका पालथी मास्टर जी को भी छू रही है ? लेकिन यह क्या मास्टर जी से तो वह थोड़े फ़ासले पर बैठी है लेकिन मुझ से तो चिपक कर बैठी है... गणेश को उसके नर्म जिस्म की छुअन बड़ी अच्छी लग रही थी . वह जानबूझ कर वैसे ही बैठा रहा. बीच बीच में वह चोर निगाहों से आस पास नज़र दल कर यह जानने की कोशिश करता कि कहीं कोई उन्हें देख तो नही रहा . लेकिन मधुरानी तो अपने चेहरे पर मुस्कान लिए ऐसे बैठी थी की शायद ही किसी को गणेश पर शक हो . यह देख कर उसने चैन की सांस लीं उसने गौर किया कि आस पास के लोग चोर निगाहों से मधुरानी को ही निहार रहे थे कुछ तो इतने बेशरम थे कि खुल्लम खुल्ला उसके बदन को ताक रहे थे . इधर सरपंच जी का पाटिल साहब की राह देखते देखते बुरा हाल हो गया था " पाटिल साहब अभी तक नहीं आए ? " उन्होने बेसब्री छुपाते हुए कहा. " पाटिल जी पूजा कर रहे हैं " उनका एक चमचा बोल पड़ा. "इतनी देर पूजा पाठ ? .... भई किसकी पूजा कर रहे हैं ? हम भी तो सुनें ?" सरपंच जी ने ताना मारा. लोगों में हँसी की लहर दौड़ गयी. " जा भैया अंदर जा , ज़रा बतला दे , सब गाँव वाले काफ़ी देर से उनकी राह देख रहे हैं उनसे कहना ज़रा जल्दी करें " सरपंच ने उस चमचे को हुक्म सुनाया. वह अपनी टोपी पहनते हुए और लंबे लंबे ड़ग भरता दरवाज़े के बाहर निकल गया. बड़ी देर हो गयी वह बंदा पाटिल जी को बुलाने गया लेकिन वापस नहीं लौटा , सरपंच जी की बेसब्री देख कर एक और आदमी पाटिल जी को संदेसा देने बाहर गया वह भी गायब हो गया . अब लोगों में बातचीत बंद हो गयी , कुछ लोग बेसब्री से इधर उधर चहल कदमी करने लगे . कुछ लोग बीड़ी चिलम सुलगा कर कश लेने लगे कुछ तंबाखू हथेलियों में रगड़ने लगे . सरपंच जी का सब्र अब टूटने लगा था वह बाहर दालान में चल कर आए मगर फिर भी कई लोग अब भी दीवान खाने में मौजूद थे , कुछ वहीं पैर फैला कर बैठ गये. गणेश वहाँ से हिलने को तैयार नहीं था वह अब भी मधुरानी की नर्म मुलायम छुअन के मज़े ले रहा था . उसने देखा इक्का दुक्का लोग उठ कर बाहर टहलने जा रहे हैं , उसने सोचा उसे भी तोड़ा बाहर घूम आना चाहिए वरना यूँ इस हाल में कोई देखेगा तो ग़लतफहमी हो जाएगी , वह उठने लगा. " ओ रे गनेस जी किधर जात हो ? आपको भी सिग़िरेट की तलब लगी है का ? " मधुरानी ने उससे पूछा . गणेश हार कर वैसे ही नीचे बैठ गया तभी लोगों का हुजूम बाहर से अंदर आ

गया . "लगता है पाटिल साहब आ गये " गणेश बोला " हाँ जी कितनी देर इंतेजार करवाया " मधुरानी परेशान होते हुए बोली . फिर गणेश की ओर देखते हुए बोली " पर ई अच्छा हुआ आप बैठक में मिल गये वरना मैं कभी की चली जाती " गणेश उसकी ओर देख मुस्कुराया . बाहर से आए सब लोग जब अपनी अपनी जगह बैठ गये तो आख़िर में पाटिल जी अंदर आए . अंदर आते ही सब को देख उन्होने नमस्ते की फिर बैठक के बीचोंबीच आ कर बाहर खड़े सरपंच जी को पुकारा "राम राम सरपंच जी अंदर आइए , अब बैठक शुरू करते हैं " सरपंच जी मुड़ कर अंदर आए और उनकी नमस्ते का जवाब दिया थोड़े झुंझलाते हुए वह पाटिल साहब की बगल में आ कर बैठ गये. " बैठक शुरू की जाए..." मानों पाटिल जी सरपंच की आज्ञा ले रहे हों , सरपंच जी ने पाटिल जी की ओर देख कर गर्दन हिलाई. बैठक में आए लोगों का जायज़ा लेते लेते उनकी दृष्टि कोने में बैठी मधुरानी पर टिक गयीं "मधुरानी अरी यहाँ सामने आ कर बैठ " पाटिल जी ने उसे सामने आ कर बैठने को कहा. "मैने तो आते ही साथ उससे सामने बैठने को कहा था ... लेकिन..." अपनी बात अधूरी छोड़ कर सरपंच जी मधुरानी की ओर देखते बोले. मधुरानी ने वहाँ बैठे बैठे ही हाथ से उनको इशारा किया कि वह ठीक ठाक बैठी है और बैठक शुरू की जाए . फिर सभा में नज़र डालते अचानक ही पाटिल जी को कुछ याद आया " ओ गाँववालों ई बार इलेक्सन में दूई सीट महिला के लिए हैं , ई सोच कर हमने मधुरानी को बुलवा भेजा , कम से कम एक सीट का तो फ़ैसला होना चाहिए " पाटिल जी बोले गणेश को पाटिल साहब की बातों पर गौर कर रहा था , पाटिल जी किसी चालाक राजनेता की तरह बातें बनाने में माहिर थे , पिछले बार जब उसकी उनसे मुलाकात हुई तो उसने जाना की वह बड़ी साफ हिन्दी बोलते थे और बड़े पढ़े लिखे जान पड़ते थे , फिर यहाँ गँवई हिन्दी बोलने की क्या तुक ? शायद लोगों से अपनापन जताने की चाल हो.

फिर बैठक शुरू करते हैं . " पाटिल जी ने सभा को संबोधित करते हुए कहा . " गूंगी का बापू किधर है? " ... "और उस गुँगे का बाप ??" उन दोनो को खोजते हुए पाटिल जी की नज़र कोने में सिमट कर बैठे हुए लोगों में गयी " रे आप लोगन वहाँ काहे बैठे रहे ? इक इस कोने में तो दूजा दूजे कोने मैं , बात का है भई ?" पाटिल साहब ने मजाकिया अंदाज़ में कहा . लोगों में क़हक़हे लगने लगे. " अरे यहाँ आइए दोनों के दोनो " पाटिल साहब ने उन्हें सामने बुलाया . पाटिल जी ने फिर से अपनी नज़रें बैठक में घुमाई और इस बार मास्टर जी और उनके बगल में बैठे गणेश को संबोधित कर बोले " अरे मास्टरजी आप तनिक आगे आइए , गनेस बाबू आप भी , पंडित जी थोडा आगे सरकिये " . हार कर अब गणेश को वहाँ से उठना ही पड़ा. उसने मधुरानी की तरफ कनखियों से देखा, उसके होंठों पर शरारती मुस्कान थी , गणेश आगे जा कर पाटिल जी के साथ बैठ गया. "तो सरपंच जी पहले क्या किया जाए ?" पाटिल जी ने सरपंच जी की ओर मुड़ कर पूछा . " जी अब तो दोनो के बापू तय कर चुके हैं , क्यों भाइयों?" सरपंच जी पांडूरंगराव और रघु की ओर देख कर बोले . दोनो ने अपनी गर्दन सहमति में हिला दी. " फिर ब्याह का मुहूरत तय करना चाहिए " सरपंच जी बोले. " पहले लेन देन का तो तय कर लो" बीच में एक बोल उठा . "वो भी करेंगे पहले मुहूरत तो तय कर लो" सरपंच जी उसकी बात काटते बोले. पाटिल जी पंडित की ओर मुखातिब हो कर बोले " अरे पंडित जी ज़रा देख कर बताओ शुभ

मुहूरत कौन सा है? " पंडित जी पंचांग के पन्ने पलटने लगे, फिर कुछ देख कर बोले "तुलसी विवाह के बाद शुभ मुहूरत २६ तारीख को आता है" "कौन से रोज ?" सरपंच जी पूछे . "बृहस्पतिवार" पंडित जी जे जवाब दिया . "यानी के साप्ताहिक बाजार वाले रोज" एक गाँव वाला बोला. "पंडित जी , दूसरा मुहूरत देखो कोई " सरपंच जी बोले. गाँव में बृहस्पतिवार के दिन बाजार का था , लोगों की खरीददारी के लिए यह दिन तय था . यदि इस दिन ब्याह होता तो कई लोग बाग शामिल न हो पाते . पंडितजीने थोड़ी देर और पांचांग के पन्ने उल्टे पुल्टे किए और बोले "अगला मुहूरत उसी महीने की २८ तारीख को आता है .. शनिवार के रोज" "ठीक है , ब्याह २८ को करना तय कर लो , क्यों भाइयों " सरपंच जी पांडु और रघु की ओर देखते बोले. गूंगों के बापुओं ने चुपचाप गर्दन हिला दी. "२८ तारीख को बात हो गयी पक्की" पाटिल जी ने फ़ैसला सुनते हुए कहा . " अब लेनदेन की बातें हो जाएँ " एक बंदा उतावला हो कर बोला . शायद उसे गूंगे के बाप ने पहले ही साध रखा था . पाटिल जी ने पांडुरंग राव को पूछा " क्यों भैया का चाहते हो? " पांडुरंग राव ने बदहवासी से पाटिल जी को देखा . तभी गणेश ने देखा पाटिल जीने सबकी नज़रें बचा कर गाँव के डॉक्टर साहब को आँख मार कर इशारा किया . डाक्टर साहब भी कुछ कहने के उठ खड़े हुए " एक मिनट , ज़रा ठहरिए " सबकी निगाहें डाक्टर साहब की और घूम गयीं वह काफ़ी शर्मीले थे और ऐसी बैठकों में खास बोलना पसंद नहीं करते थे , लेकिन लोग यह जानने को बेकरार हो उठे थे की डाक्टर साहब क्या कहते हैं. " देखिए ..... ऐसा है , गूंगे और गूंगी की शादी में एक दिक्कत है " डाक्टर साहब गला साफ कर बोले. "दिक्कत? कैसन दिक्कत? " दो चार लोग हैरत से बोले. डाक्टर साहब और गंभीर हो गये. लड़की के बाप की यह देख कर हालत पाली हो गयी. "ज़रा खुल कर बताइए डाक्टर जी " सरपंच जी ने बेताबी से कहा. दो तीन मिनट यहीं गुजर गये . "अरे डाक्टर जी कुछ बोलो तो सही " पाटिल जी बेसब्री से बोले "मुँह में दही जमा है क्या?" " हैं जी ??? म..म..मैं सोच रहा था य.. यहाँ बोलना ठीक रहेगा?" डाक्टर अपना पसीना पोछते हुए बोला . " अरे ओ डाक्टर , सीधे सीधे बताता काहे नहीं है.... का दिक्कत है ?" गूंगी का मामा कड़क कर बोला. उसे गूंगी के बाप ने समझा बुझा कर चुप कराया . डाक्टर इधर बेबसी से पाटिल जी की ओर देख रहा था , उसके पसीने छूट रहे थे "अरे बताओ डाक्टर जी घबराईए मत , मैं हूँ न ?" पाटिल ने कहा. हिम्मत जुटा कर डाक्टर बोला " जी ऐसा है की गूंगा और गूंगी की शादी होती है तो उनके बच्चे भी गूंगे पैदा होंगे , म म मेरा मतलब इस बात की गुंजाइश ज़्यादा है " बैठक में सबको साँप सूंघ गया . "उससे कौनो फरक नाही पड़े है" एक आदमी बोला. "कैसे नाही पड़े है ? एक आदमी पांडुरंग राव के बगल से उठते बोला. शायद वह उनका रिश्तेदार था " इहा इक गूंगे लड़के को पालते पालते ससुरा खून पानी बन गया , अब ब्याह हुआ तो दो गूंगा जोड़ा , और बच्चे भी गुंगे पैदा हुए तो गूंगों की फौज , इन सबको क्या आप संभालेंगे ?" "उनको हम संभालेंगे , आप उसकी चिंता नाही करो" गूंगी का मामा उठ कर बोला. "अरे हमार वंश का होगा ? हमरा पोता भी गूंगा ??? ना.. ना... ई हांका मंजूर नाही" दूसरा रिश्तेदार बोला. "अरे भाई दोनो पार्टी के लोग थोड़ा सब्र करो बैठ जाओ" सरपंच बीच बचाव करते हुए बोले. "अरे ओ सरपंच !! तू संभालेगा उन गूंगों को ? " लड़के का मामा बोला . "अरे भाई उसका भी कोई रास्ता निकाल लेंगे , मैं अकेला क्या कर सकता हूँ , पूरे गाँव वालों की मदद चाहिए " सरपंच जी उसको समझाते हुए बोले. "मतलब ए ही होगा ....की वो गूंगे गाँव की सड़कों पर हाथ फैला कर भीख माँगे हैं.... और आप गाँव वाले उनको भीख देंगे " लड़के का मामा कड़क कर बोला फिर पांडुरंग जी का हाथ पकड़

कर बोला " चलिए जी , यह ब्याह अब न होवे है . अपने बेटे को और भी अच्छे रिश्ते आवे रहे हैं और ई गूंगी से ब्याह रचा कर उसकी जिंदगी खराब नहीं करनी " " अरे थोड़ा ठंडे दिमाग़ से सोचो भाई , यूँ गुस्सा ना करो अपने बेटे का तो ख्याल करो " गणेश ने बीच बचाव किया . " आपसे मतलब ? कौन हो जी आप? " लड़के के मामा ने गणेश पर भड़क कर कहा . " हमारे गाँव के बड़े साहब हैं" एक आदमी ने बताया. " देखो साहब जी ....अपने काम से काम रखो.... हमारे मामले में टाँग न अड़ाओ , वरना अच्छा नहीं होगा " मामा कड़क कर बोला. गणेश मन मार कर रह गया . "चलो जी आप चिंता न करो , हमारे लड़के का ब्याह मैं कराऊंगा वह भी किसी अच्छा छोकरी से , गूंगी बाहरी से नहीं " मामा पांडुरंग जी का हाथ पकड़ कर बोला. " अरे और आप के छोकरे ने हमारी बेटी की जिंदगी बर्बाद कर दी , उसका का होगा ? " लड़की के मामा ने मोर्चा संभाल लिया. " हमको उससे कौनो मतलब नाही , तुमसे लड़की संभाली नही जात है , हमारी का ग़लती? तुम्हारी लड़की है ही कुलच्छनी , हमार लड़के पर डोरे डाल कर उसको अपने जाल में फाँस लिया , कलमुंही जाए भाड़ में " लड़के के मामा दरवाज़े से तेज आवाज़ में बोला. " हरामज़ादे मैं तेरी ज़बान खींच लूँगा " लड़की की तरफ से एक गाँव वाला उठ खड़ा हुआ . " माधरज़ाद साला ससुर का नाती" लड़की का मामा गुस्से से चीखा " अरे ओ सुदामा , पकड़ इस कुत्ते को , आज इस हरामी की माँ बहन एक करता हूँ " कहते हुए वह लड़के वालों की तरफ लपका . चारों ओर अफ़रा तफ़री मच गयी. लड़की वाले और लड़के वाले आपस में उँची आवाज़ में चिल्ला चोट करने लगे. कुछ हाथापाई पर उतारू हो गए , चारो और लात घूँसे चल रहे थे , खूब गाली गलौज हो रही थी. तभी एक तेज रौबदार आवाज़ गूँजी " खामोश!!!! " " सुअर के बच्चों !!!" "हरामज़ादो , यह क्या रंडी बाजार बना रखा है" "निकल जाओ इस घर से , बाहर जा कर जो करना है करो" पाटिल साहब गुस्से में ज़ोर ज़ोर से बोल रहे थे. पूरी बैठक में खामोशी छा गयी. " रामू!!!!!" " कहाँ मर गया ससुरा? " "जी मालिक?" हवेली का एक कारींदा दौड़ा दौड़ा आया , पाटिल जी ने झगड़ने वालों की ओर इशारा कर कहा "उठा कर बाहर फेंक दो इन मधर ज़ाद को" रामू और उसके साथियों ने तुरंत हुक्म की तामील की वह उन लोगों को धक्के दे कर बाहर निकालने लगे . गणेश , मधुरानी और अन्य लोग बड़ी हैरत से यह ड्रामा देखे जा रहे थे . बैठक में सबको जैसे साँप सूंघ गया था , केवल बाहर जाने वालों की चप्पल चटखने की आवाज़ आ रही थी . " माफी चाहता हूँ ..... आप सब आराम से बैठिए " पाटिल जी ने कहा "आज कल तो भलाई का जमाना ही नही रहा" सरपंच जी भी अब बाहर जाने लगे. "अरे सरपंच जी तनिक ठहरिए , थोड़ा जलपान करिए फिर बैठक बर्खास्त करते हैं " पाटिल जी बोले। " आप सब लोग भी बैठिए.... और चाय वाय पी कर जाइए वरना आप लोग कल चर्चा करेंगे कि पाटिल जी ने चाय तक को नहीं पूछा " अब तक दोनो पार्टी के लोग नीचे पहुँच चुके थे और नीचे से झगड़ने की ज़ोर ज़ोर से आवाज़ें उपर तक आ रहीं थी.

गणेश जब मधुरानी की दुकान के सामने से गुजरा तो वहाँ ख़ासी भीड़ थी . कल बैठक में हुई बमचक के बाद से वह काफ़ी बेचैन था. लिहाज़ा मधुरानी से बात कर अपनी बेचैनी से छुटकारा पाना चाहता था. मगर लोगों की भीड़ देख कर उससे मिल पाना मुमकिन नहीं था. गणेश ने भीड़ में गर्दन उठा कर मधुरानी की ओर देखा , उनकी नज़रें मिलते ही

वह अर्थपूर्ण ढंग से मुस्कुराई. मानों उसकी आँखें उससे कह रही हों ....मेरी मजबूरी को समझो...इन लोगों के होते हुए मै तुमसे कैसे मिल सकती हूँ" गणेश बेचैनी से उसकी दुकान की तीन चार चक्कर लगा आया, फिर हार कर एक जगह खड़े हो कर सोचने लगा.... यहाँ चहल कदमी करने से कुछ हासिल नहीं होगा , उल्टा अगर किसी को शक हो गया तो बेकार की मुसीबत गले पड़ जाएगी ... उसने भीड़ में गर्दन उठा कर मधुरानी की ओर देखा और हाथ से "बाद में आने" का इशारा किया . उसकी भी अपनी आँखों से मूक सहमति पा कर उसने वहाँ से कदम बढ़ाए . अचानक उसे अजीब सी आवाज़ सुनाई दी " जफ्र आफ़र मैफ़र तुंफ्र राफ्र देफ्र" वह ठिठक कर वहीं बीच रास्ते ठहर गया. यह तो शायद मधुरानी का ख़ुफ़िया संदेसा है , क्या कह रही थी वह··· पिछली बार... उसने अपनी याददाश्त पर ज़ोर डाल कर याद करने की कोशिश की ....अरे हाँ वह फालतू की " फ्र , फ्री" हटाने की बात कर रही थी , क्या मतलब हो सकता है इसका ??? ज से जल्दी ?? आ से आना ?? म से मैं , तु तुम , रा से राह दे से देखना ???" उसके दिमाग़ में यह बात कौंधी ...."जल्दी आना , मैं तुम्हारी राह देखूँगी" .... अरे वह शायद मुझ ही से बातें कर रही थी , मगर किसी को शक न हो इसलिए अपनी ख़ुफ़िया ज़बान में बोली.... उसने दूर मुड़ कर देखा , मधुरानी उसी को देखती हुई शरारत से मुस्कुरा रही थी , हाय वह उसकी मदहोश करने वाली शराबी आँखें , और दिल पर छुरियाँ चलाने वाली नशीली नज़र , मानों वह अपने आशिक को करीब बुला रहीं हों , गणेश भी उसकी ओर देख मुस्कुराया और अपने कमरे की तरफ बढ़ा. रास्ते में उसे वही गूंगी लड़की लोटा ले कर खेतों की तरफ जाती दिखाई दी , उसने आस पास देखा उस गूंगे लड़के का कहीं अता पता न था . लेकिन यह उसकी नज़रों से न बच सका क़ि आस पास के लोग भूखी नज़रों से गूंगी के जिस्म को ताके जा रहे थे . उड़ते उड़ते उस तक यह बात पंहुची थी कि उस गूंगे लड़के को उसके घरवालों ने एक कमरे में क़ैद कर रखा था, और सुबह शाम पहरे पर एक क़ारींदा बैठा रखा था. शायद इसलिए वह गूंगी लड़की भी उदास सी लग रही थी , भारी कदमों से वह अपने कमरे में लौट आया. वहाँ से लौट कर वह बिस्तर पर लेटा और उसकी आँख लग गयी . अचानक उसकी नींद टूट गयी - दरवाज़ा पर खटखट हुई , वह चौंक कर उठ खड़ा हुआ ....भला इस समय कौन आया होगा ?.... उसने आगे बढ़ कर खिड़की से झाँक कर पता करना चाहा , बाहर अंधेरा छा गया था , उसने मधुरानी के दुकान की तरफ देखा , दुकान में अब कोई ग्राहक न था , मधुरानी भी दुकान में न थी . शायद यह मधुरानी ही होगी.... वह जल्दी से दरवाज़े के करीब आया और होंठों पर मुस्कान लिए उसने दरवाज़ा खोला . लेकिन यह क्या ? दरवाज़े पर मधुरानी न थी , यह सारजाबाई थी जो खाना ले कर आई थी . चुपचाप उन्होने अंदर आ कर भोजन की थाली रख दी और सुबह की जूठी थाली ले कर चली गयी . अंदर आ कर उसने सोचा "दुकान खुली छोड़ कर मधुरानी न जाने कहाँ गयी होगी" . गणेश बाहर आया और उसकी नज़रें मधुरानी को इधर उधर खोजने लगीं , उस दिखाई दिया अंधेरी गली के कोने में खड़ी मधुरानी किसी औरत से धीमे धीमे बातें कर रही थी. उस दूसरी औरत ने हाथों में लोटा पकड़ रखा था . अचानक उस औरत की नज़र गणेश की तरफ गयी और ज़रा तेज आवाज़ में अपनी बात ख़त्म करते हुए बोली "अबकी बार मोडे को बड़े डाक्टर को दिखाएँगे ऐसे मेरा मर्द बोला " और जाते जाते बोली " बाद मा बताऊंगी" उस को जाता देख मधुरानी भी अपनी दुकान की ओर चल पड़ी और रास्ते में गणेश को देख पूछा " तब के वखत आए रहे ?" , गणेश ने बाहर से कमरे का दरवाज़ा बंद किया और वह भी उसके पीछे पीछे चल पड़ा.

"हे भगवान , कैसे बदमिज़ाज लोग हैं यह , बेकार बखेड़ा खड़ा कर दिया इन गाँववालों ने " गणेश मधुरानी से बतियाते हुए बोला " अच्छी ख़ासी चर्चा चल रही थी सब गुड गोबर कर दिया " " सादी ब्याह के मामलों में ऐसा ही होवे है बाबू तुम न जानत रहे , कौन मुआ किस बात को ले कब आड़े आ जाए कौनो खबर न रहे " मधु रानी जवाब देते हुए बोली. कुछ सोच कर गणेश बोला " कुछ भी हो , मुझे तो इसमें उस पाटिल का ही हाथ नज़र आता है " "उ कैसे ? " मधुरानी ने पूछा. " तुम भूल गई ? सरपंच जी ने उनको चर्चा करने पर राज़ी किया था , मुझे लगता है पाटिल जी को यह नागवार गुजरा " " ना ना बाबूजी ... पाटिल भला आदमी है उ बात होती तो उसने अपनी हवेली में उनको बुलावा न भेजा होता " मधुरानी की बात सुन गणेश एक पल सोच में पड़ गया . इसे पाटिल जी से इतनी हमदर्दी क्यों ? ..... आख़िर इसी पाटिल की जीप तले आकर इसके मर्द ने अपनी जान गँवाई थी .और फिर भी यह उसी की तरफ़दारी करती है , क्या वजह हो सकती है? अब यूँ तो पाटिल के बुलाने पर भी इसको वहाँ जाना नहीं चाहिए था.... हुम्म! इसी से पूछता हूँ ... लेकिन क्या यह वाकई मायने रखता है? ..... फिर वह मधुरानी को जवाब देते हुए बोला " अरे इसी बला को तो राजनीति कहते हैं " तुनक कर वह बोल उठी " ई राजनीति हमें न मालूम है बाबू ....हम तो बस इतना जानत रहे कि उ पाटिल बाबू मक्कार ना है , दिल का सरीफ़ होवे है , हम कहे देते है .... हमको आदमी की परख करना आवे है , आपको न परखा हमने ? " शरारत से उसकी आँखो में आँखें डालते हुए वह बोली. "तुम औरतों तो पैदाइशी भोली भली होती हो , खैर मैने पाटिल जी को डाक्टर साहब को इशारा करते हुए देखा है" गणेश उसकी नज़रें टाल कर बोला. "जाने दो न बाबू जी उ मुए पाटिल को , काहे उसकी बातें करत हो" वह उठकर उसकी ओर खिसक कर बैठ गई . "जो भी हुआ बहुत बुरा हुआ ... अब उस बेचारी गूंगी लड़की का क्या होगा ? अपनी नासमझी और ज़िद के चलते उसके अरमानों का बेदर्दी से कत्ल किया इन लोगों ने . उस लड़की के साथ बहुत ग़लत हुआ कम से कम यह देखकर तुम्हें कुछ तो विरोध करना चाहिए था , लेकिन तुम भी चुप रह गयीं , तुमसे मुझे यह उम्मीद न थी " गणेश झुंझला कर बोला. उसने मधु रानी की तरफ देखा , यह बात सुनकर उसके चेहरे की रंगत एक पल में बदल गयी . गणेश को महसूस हुआ कि बेकार ही उसने उससे गुस्से में इतनी कड़ी बात कर दी . "साहब जी" वह संजीदा आवाज़ में दूर कहीं देखते हुए बोली " ई दुनिया में कई सही गलत बातें होत हैं ...ई सब किस्मत का खेल है जो भाग में लिखा है... सो होवे है उ भाग के आगे हमारा तुम्हारा कोई बस न चले है" फिर वह रुककर बोली "आप भी तो उहाँ बोले थे , कौनो फायदा हुआ उ लोगों के सामने मुँह खोल कर ? उल्टा पूरा गाँव के सामने बेइज़्ज़ती हो गयी" यह सुन कर गणेश सकपका गया. मधु रानी संभल कर बोली " उ लोगन के सामने मैं भी बोली रही तो मुझे भी डपट देते कि औरतों - लुगाइयो को बीच में बोलना न चाहिए " वह अपनी रौ में बोली चली जा रही थी . गणेश बीच में बोल उठा " न न मेरा वह मतलब न था " गणेश उसके सामने सफाई देते हुए बोला . लेकिन उसकी बात को बीच में काटते हुए मधुरानी बोल पड़ी "आप सोचत रहे कि उनका ब्याह हो जाता तो अच्छा रहता , आप लोगन के लगने से कौनो फ़र्क पड़े है ? मुझे भी लागे है कि आपके संग मेरा ब्याह हो जावे तो कितना अच्छा हो " गणेश का मुँह खुला का खुला रह गया वह ऐसे चौंक उठा मानों उसे बिजली का झटका लगा हो. वह फटी फटी आँखों से मधु रानी को अपलक देखता ही रह गया . बात को आगे बढ़ाते हुए उसने कहा "लेकिन मेरा ऐसन

सोचने से का होवे है बाबू जी ? .... ई तो किस्मत की बात होवे है" हे भगवान ! यह मुझ पर डोरे डाल रही है ? क्या यह मेरे गले पड़ने की सोच रही है?..... गणेश सोच में पड़ गया .... बडी चालू चीज़ है यह , मुझे फाँसने की कोशिश कर रही है.... गणेश के पसीने छूट गये . "बाबूजी" मधुरानी की आवाज़ से उसकी तंद्रा टूटी. " अ.... हाँ ???" रुमाल से अपनी गर्दन और और चेहरे पर पसीने की बूँदें पोछते हुए उसने मधुरानी से कहा "कुछ ? कहा मुझसे?" उसकी सकपकाहट देख कर मधुरानी की हँसी छूट गयी "बाबू जी" वह मुस्कुराते हुए बोली "तोहार तो पसीने छूटे है" मुस्कुराना जारी रखते हुए उसने आगे कहा " घबडाऔं ना बाबूजी , हमार कोई ऐसा वैसा इरादा ना है , एक औरत का घर बार उजाड़ कर हम अपना घर ना बसाना चाहे . आपने का सोचा ?? " "न..न.. नहीं" खिसियानी हँसी हंसते हुए गणेश बोला , अब भी रुमाल से उसका पसीना पोंछना जारी था. गणेश की इस हालत के मज़े लेती हुई मधुरानी ठहाका मार कर हँसने लगी " आईने में खुद की सकल देखों बाबूजी , का चेहरा होई गवा है " आख़िर क्या चाहती है यह औरत ? ....इस पिछड़े हुए गाँव में रहने के बावजूद कितने आज़ाद ख्यालात क़ी है यह .... गणेश मन ही मन विचार करने लगा "बाबू जी" मधुरानी आगे बोली " आप एही सोचत रहोगे कि कैसी कलमुंही औरत होवे है , इसके ख़सम को उ पाटिल ने अपनी गाड़ी से कुचला , ई की माँग उजाड़ दि फिर भी उ पाटिल की तरफ़दारी करती है" हद हो गयी यह तो.... गणेश चौंक गया ....इसे कैसे पता मैं क्या सोच रहा हूँ ?.... कहीं यह कोई टोना टोटका तो नहीं करती?.... शायद नहीं , हो- न- हो यह मेरे मन की बात ताड़ गयी , या शायद यह महज एक इत्तेफ़ाक हो.... "मेरा ख़सम बेवड़ा था , दिन-रात सराब के नसे में धुत्त रहता था उ ही हालत में उ ससुरा उ पाटिल जी की गाड़ी के नीचे आया रहा , ई बात में उ पाटिल जी का क्या कसूर ? और ई बात को लेकर हम काहे पाटिल जी से दुस्मनि मोल ले? अब ई तो एही हुआ के पानी में रहकर मगरमच्छ से पंगा लेना" मधुरानी ने कहा . गणेश टकटकी लगाए उसकी ओर देख रहा था ....इसकी सोच सही है... अगर इसने पाटिल साहब से पंगा लिया होता तो वह इसका इस गाँव में जीना हराम कर देता.... गणेश वापिस सोच में डूब गया . "बाबूजी" अबकी बार उसकी बाँहों को पकड़ कर ज़ोर ज़ोर से उसे हिलाते हुए मधुरानी बोल उठी "आपको ई बीच बीच में खोने की न जाने कैसी अजीब बीमारी होवे है" उसके नर्म , मुलायम हाथों की छुअन से उसके सारे बदन में रोंगटे खड़े हो गये वह फिर अपनी सोच में डूब गया. अब इसकी बातें कुछ कुछ समझ में आने लगी है , शायद यह भी मेरे जसबातों को समझती है.... वह उसकी खूबसूरती को अपनी आँखों से निहार रहा था , उसे ताक रहा था मानों उसके चेहरे का नूर अपनी आँखों से पी जाना चाहता हो.

आज बृहस्पतिवार था , बृहस्पतिवार को गाँव में साप्ताहिक हाट - बाजार लगा करती थी . सुबह सवेरे ही गणेश आफ़िस जा कर आया , आज कुछ खास काम भी नहीं था, लिहाज़ा उकता कर वह बाजार की तरफ चल दिया . सब्ज़ी तरकारी वालों की दुकानों के सामने घूमते हुए वह कपड़े वालों की कतार में चला आया. कपड़े वालों की दुकानों में छोटे बच्चों से ले कर बड़े बूढ़े और महिलाओं के धोती साड़ियाँ कुर्ते करीने से सजाए गये थे . उन्हीं के बीच उसे बंजारा लोगों की वह खास पोशाक भी नज़र आई , एक तरफ चोगा और टोपी लटके हुए थे , उस अजीब सी रंग बिरंगी पोशाक को

देख कर उसे बड़ा मज़ा आ रहा था . दुपहर का वक्त हो चला था , बाजार में आस पास के गाँवों से आने वाले ग्राहकों की भीड़ धीरे धीरे बढ़ने लगी थी , दुकानों के बीचों बीच रास्ते पर भीड़ इतनी बढ़ गयी थी की पाँव रखने की जगह न थी, फिर भी उन सबके बीच किसी प्रकार गणेश अपने रास्ते चल रहा था , अब वह पूरी तरह उकता चुका था . उसने सोचा एक बार गाँव की तरफ घूम आए ... उसके पाँव बरबस ही मधुरानी की दुकान की तरफ बढ़ चले , बाजार की भीड़ भाड़ से बचते बचाते वह पानी की टंकी की ओर बढ़ चला जहाँ बड के पेड़ की अच्छी ख़ासी ठंडी छाँव थी. एकपल उसने इस पेड़ तले सुसताने की सोची लेकिन दूसरे ही पल उसने वह विचार त्याग दिया और उसने मधु रानी की दुकान की ओर अपने कदम बढ़ाए . दूर से ही उसकी दुकान के इर्द गिर्द लोगों का जमावड़ा देख उसे हैरत हुई. वह मन मसोस कर रह गया, अब इस भीड़ के रहते उससे बातचीत मुमकिन न थी. उसने दो चार मिनट वहीं चहलकदमी कर गुज़ारे, वह सोच रहा था कि वापिस बाजार जाया जाए या थोड़ी देर कमरे में सुस्ताया जाए. लेकिन उसे मधु रानी से मिलने की प्रबल इच्छा हुई, लिहाज़ा उन लोगों की भीड़ में रास्ता निकालते हुए वह गल्ले के करीब जा पंहुचा . " ओ शामू ज़रा देख तो उ औरत धोती में गुड का डला छिपायात रही , जा जा जल्दी जा उ भिखमंगी चोरनी को पकड़ ला " मधु रानी की तेज नज़रों से वह चोरनी बच न पाई थी. " ई करम जले गाँव वाले चोरी चकारि से बाज न आवे है" वह गुस्से से गाँववालों को कोसते हुए बड़बड़ा रही थी. " अरे जल्दी जा नास्पीटे , तोरा सत्यानाश जाए कलमुंहे जा जल्दी जा उसको पकड़" वह चीखी. उस नौकर ने इधर उधर नज़रे दौड़ाई और वह चोरनी उसकी नज़रों से न बच पाई , नौकर को अपनी तरफ आता देख वह भीड़ से निकल दूसरी ओर भागने लगी . गणेश मधुरानी के करीब खड़ा हो तमाशा देख रहा था . उधर मधुरानी थी जो सुध बुध खो बैठी थी, उसका सारा ध्यान उस चोरनी पर लगा था " अरे जल्दी जा कलमुंहें पकड़ उ कर्मजली को देख देख कैसन भाग रही है उ कुतिया" मधुरानी उत्तेजित हो कर चिल्लाए जा रही थी . " ए री ज़रा ई बोतल में तेल तो डाल " उस भीड़ में किसी ने बोतल उठा कर उसका ध्यान अपनी ओर खींचा. " ए री मधुरानी ज़रा नोन की थैली निकाल तो " एक औरत उससे बोली. गणेश ने १० रु. का नोट निकाल कर कहा "मुझे एक गोल्ड फ्लेक " "अरे तनिक ठहरो , इधर ई चोर लोग पूरा दुकान पे हाथ साफ करत रहे और आप लोगन को थोडा वक्त रुकने की फ़ुर्सत नाही" मधुरानी गणेश पर झुंझला कर जैसे फट पड़ी . उसको जब अहसास हुआ कि वह गणेश है तो आवाज़ में नर्मी लाते हुए बोली " बाबूजी ए आप हैं हम समझे कोई और आवे है" " न.. न.. कोई बात नहीं पहले तुम अपना काम देख लो , कोई जल्दी नहीं है " गणेश ने जवाब दिया. " अरे बाबू तोके जल्दी ना है पर हमको तो है ना " एक औरत भीड़ में बोल उठी . उस औरत की ओर गुस्से से देखती हुई मधुरानी तेज आवाज़ में बोल उठी " ए री बड़ी जल्दी है ना तुझे ? जा किसी और दुकान पर चली जा , हमर दुकान का नौकर उ चोरनी के पीछे गया है , हम जो गल्ले से उठ कर तुझे जो समान दिए रहे तो उ चोर लोग पूरा दुकान पर हाथ साफ कर लिए" वह औरत चुप हो गयी . मधुरानी की बात अपनी जगह सही थी. " बाबू जी तनिक ठहरिए उ शाम के आते ही आपको सिगरेट दिए रहे " मधुरानी गणेश की ओर मुखातिब हुई. इतने में शाम उस चोरनी को पकड़ कर मधुरानी के सामने ले आया. "हरामजादे" वह औरत शाम से अपना हाथ छुड़ाते हुए बोली "हमरा हाथ जोड़ बेसरम , कीड़े पड़े तोहार हाथ में , तेरा सत्यानास जाए" "मैं न छोड़ूं तोहार हाथ , म्हारी दीदी ने तुमको गुड चुराते देखा होवे है" लड़का बोला. "ए कलमुंही , हम ई गुड के पैसे दिए हैं" चोरनी उल्टा मधुरानी पर बरसी .

"पैसे दिए रहे तूने ? हैं ? बड़ी आई पैसे देने वाली कुतिया " अपनी साडी कमर में खोंस कर मधुरानी आगे बढ़ी . " ए शामू ज़रा ग्राहकों को देख तो , हम अभी इसको ठीक किए देते हैं" " जी दीदी जी" कह कर शामू ग्राहकों को समान तौलने लगा . इतने में चोरनी कह उठी "हराम की जनी ग़ाली मत दे कहे देती हूँ" "चटाक!!!" मधुरानी एक झन्नाटेदार तमाचा उस चोरनी के मुँह पर रसीद दिया "गुड चोरनी , रंडी! " मधुरानी उसके बालों का झोंटा पकड़ कर उसे तमाचे पर तमाचे मारे जा रही थी "पैसे दिए तूने कमिनि ? हाँ? हमर से ज़बान लड़ाती है ? हैं? कितने का गुड तूने मोल लिया, बता कमिनि ... बोल हरामजादि हम तोहार चमडी निकाल लूँगी " इतना कह कर उसने और एक तमाचा उसको जड़ा . "आ " मार से वह औरत कराह उठी फिर आवाज़ में नर्मी लाते हुए बोली "ए री मार मत" "अच्छा ? तो बताए दे कितने का गुड खरीदा तूने ? " इतना कह कर उसके झोंटे को उसने ज़ोरदर झटका दिया . वह औरत अपने बॉल छुड़ाते हुए नीचे गिर पड़ी फिर सम्हल कर उठती हुई बोली " बताती हूँ" "चार आने का आधा किलो" " चार आने का आधा किलो? हैं?" उसकी बात को दोहराते हुए मधु रानी बोली " चार आने का आधा किलो गुड कब से मिलत रहा ? हैं? कलमुंही झूठ बोलती है , कीड़े पड़ें तेरे मुँह में रंडी , हराम जादि चोरनी " उसे गलियाते हुए उसने उसके मुँह पर एक घूँसा जड़ दिया , फिर उसकी साडी से गुड की दल्ली निकल कर शामू को बोली " ओ सामू बेटा ज़रा ई गुड की दल्ली को तोलना तो और बता ई रंडी को कितना होवे है? " उससे गुड की दल्ली ले कर तौलने के बाद कहा " डेढ़ किलो बनता है दीदी जी" " ए देखो गाँववालों ई औरत कहे है इसने हमार से आधा किलो गुड लिया रहा चार आने में , और फिर तौलने पर इसका वजन डेढ़ किलो कैसे हुआ रहा ? और ई रंडी हमसे कहत रही इसने गुड हमसे मोल लिया है , क्योंरी कुतिया ? " इतना कह कर उसने नीचे बैठी औरत की कमर में एक जोरदार लात जमाई . वह औरत ज़मीन पर धराशायी हो गयी " ठहर रंडी की जनि छीनाल औरत , तुझे छठी का दूध याद न दिलाया रहा तो हमरा नाम भी मधुरानी नहीं , कहे देती हूँ , ए रे सामू ज़रा रस्सी तो ला रे इसको बाँध कर थाने लिए चलते हैं" मधु रानी कड़क कर बोल उठी. वह औरत दर्द से कराहते हुए अपने कान पकड़ कर गिडगिडाई " ना दीदी , रहम करो हमार छोटे छोटे बच्चे हैं , हमका पुलिस में ना दो" वह मधुरानी के पाँवों को छू कर बोली . " नौटंकी ना कर , धन्दे का टाइम खराब करती है रंडी , चल उठ और दफ़ा हो यहाँ से और कहे देते हैं आइन्दा इहा अपनी मनहूस सकल न दिखाना वरना ओ हाल करूँगी तेरा तोरे बच्चे भी तुझे न पहचानेंगे चल भाग बुरचोदि रंडी हरामजादि " पलट कर गल्ले पर वापिस जाते हुए मधुरानी गुस्से से बड़बड़ा रही थी. गणेश सांस रोक कर यह हाई वोल्टेज ड्रामा देखे जा रहा था उसके मुँह से एक लफ्ज़ नहीं निकल रहा था , दूसरी दफे वह मधुरानी का यह रूप देख रहा था. लेकिन जो भी हो ऐसे मुश्किल हालात से दो चार हाथ करना इसे खूब आता है , कोई और होती तो घबरा जाती. उसे याद आया एक बार वह अपनी पत्नी को पीछे स्कूटर पर बिठा कर कहीं जा रहा था एक गुंडा दिन दहाड़े उसकी बीवी के हाथों से पर्स छीन कर भाग खड़ा हुआ , यह देख कर उसकी बीवी को वो सदमा लगा की उसको समझ ही नहीं आया कि आख़िर क्या हुआ , वह मानों काठ की हो गयी , कितनी देर बाद वह होश में आई तब तक गुंडा दूर भाग चुका था. उसकी जगह यह मधु रानी होती तो गाड़ी से कूद कर उस गुंडे का पीछा करती और न सिर्फ़ अपना पर्स उससे लेती बल्कि उसकी गर्दन पकड़ कर २-४ लातें उसको लगाए बिना वापस न आती. आज उसके दिल में मधुरानी के प्रति इज़्ज़त कई गुना बढ़ गयी थी. उसने सोचा, भारतीय नारी को इसी तरह हिम्मती बनना पड़ेगा

, अगर इसी तरह महिलाएँ खुद को मजबूत बनाएँ और हिम्मत से काम लें तो कोई भी इन महिलाओं का शोषण न कर पाएगा , वाकई औरत अबला नहीं होती....आज बृहस्पतिवार था , बृहस्पतिवार को गाँव में साप्ताहिक हाट - बाजार लगा करती थी . सुबह सवेरे ही गणेश आफ़िस जा कर आया , आज कुछ खास काम भी नहीं था, लिहाज़ा उकता कर वह बाजार की तरफ चल दिया . सब्ज़ी तरकारी वालों की दुकानों के सामने घूमते हुए वह कपड़े वालों की कतार में चला आया. कपड़े वालों की दुकानों में छोटे बच्चों से ले कर बड़े बूढ़े और महिलाओं के धोती साड़ियाँ कुर्ते करीने से सजाए गये थे . उन्हीं के बीच उसे बंजारा लोगों की वह खास पोशाक भी नज़र आई , एक तरफ चोगा और टोपी लटके हुए थे , उस अजीब सी रंग बिरंगी पोशाक को देख कर उसे बड़ा मज़ा आ रहा था . दुपहर का वक्त हो चला था , बाजार में आस पास के गाँवों से आने वाले ग्राहकों की भीड़ धीरे धीरे बढ़ने लगी थी , दुकानों के बीचों बीच रास्ते पर भीड़ इतनी बढ़ गयी थी की पाँव रखने की जगह न थी, फिर भी उन सबके बीच किसी प्रकार गणेश अपने रास्ते चल रहा था , अब वह पूरी तरह उकता चुका था . उसने सोचा एक बार गाँव की तरफ घूम आए ... उसके पाँव बरबस ही मधुरानी की दुकान की तरफ बढ़ चले , बाजार की भीड़ भाड़ से बचते बचाते वह पानी की टंकी की ओर बढ़ चला जहाँ बड के पेड़ की अच्छी ख़ासी ठंडी छाँव थी. एकपल उसने इस पेड़ तले सुसताने की सोची लेकिन दूसरे ही पल उसने वह विचार त्याग दिया और उसने मधु रानी की दुकान की ओर अपने कदम बढ़ाए . दूर से ही उसकी दुकान के इर्द गिर्द लोगों का जमावड़ा देख उसे हैरत हुई. वह मन मसोस कर रह गया, अब इस भीड़ के रहते उससे बातचीत मुमकिन न थी. उसने दो चार मिनट वहीं चहलकदमी कर गुज़ारे, वह सोच रहा था कि वापिस बाजार जाया जाए या थोड़ी देर कमरे में सुस्ताया जाए. लेकिन उसे मधु रानी से मिलने की प्रबल इच्छा हुई, लिहाज़ा उन लोगों की भीड़ में रास्ता निकालते हुए वह गल्ले के करीब जा पंहुचा . " ओ शामू ज़रा देख तो उ औरत धोती में गुड का डला छिपायात रही , जा जा जल्दी जा उ भिखमंगी चोरनी को पकड़ ला " मधु रानी की तेज नज़रों से वह चोरनी बच न पाई थी. " ई करम जले गाँव वाले चोरी चकारि से बाज न आवे है" वह गुस्से से गाँववालों को कोसते हुए बड़बड़ा रही थी. " अरे जल्दी जा नास्पीटे , तोरा सत्यानाश जाए कलमुंहे जा जल्दी जा उसको पकड़" वह चीखी. उस नौकर ने इधर उधर नज़रे दौड़ाई और वह चोरनी उसकी नज़रों से न बच पाई , नौकर को अपनी तरफ आता देख वह भीड़ से निकल दूसरी ओर भागने लगी . गणेश मधुरानी के करीब खड़ा हो तमाशा देख रहा था . उधर मधुरानी थी जो सुध बुध खो बैठी थी, उसका सारा ध्यान उस चोरनी पर लगा था " अरे जल्दी जा कलमुंहें पकड़ उ कर्मजली को देख देख कैसन भाग रही है उ कुतिया" मधुरानी उत्तेजित हो कर चिल्लाए जा रही थी . " ए री ज़रा ई बोतल में तेल तो डाल " उस भीड़ में किसी ने बोतल उठा कर उसका ध्यान अपनी ओर खींचा. " ए री मधुरानी ज़रा नोन की थैली निकाल तो " एक औरत उससे बोली. गणेश ने १० रु. का नोट निकाल कर कहा "मुझे एक गोल्ड फ्लेक " "अरे तनिक ठहरो , इधर ई चोर लोग पूरा दुकान पे हाथ साफ करत रहे और आप लोगन को थोडा वक्त रुकने की फ़ुर्सत नाही" मधुरानी गणेश पर झुंझला कर जैसे फट पड़ी . उसको जब अहसास हुआ कि वह गणेश है तो आवाज़ में नर्मी लाते हुए बोली " बाबूजी ए आप हैं हम समझे कोई और आवे है" " न.. न.. कोई बात नहीं पहले तुम अपना काम देख लो , कोई जल्दी नहीं है " गणेश ने जवाब दिया. " अरे बाबू तोके जल्दी ना है पर हमको तो है ना " एक औरत भीड़ में बोल उठी . उस औरत की ओर गुस्से से देखती हुई मधुरानी तेज आवाज़ में बोल उठी " ए

री बड़ी जल्दी है ना तुझे ? जा किसी और दुकान पर चली जा , हमर दुकान का नौकर उ चोरनी के पीछे गया है , हम जो गल्ले से उठ कर तुझे जो समान दिए रहे तो उ चोर लोग पूरा दुकान पर हाथ साफ कर लिए" वह औरत चुप हो गयी . मधुरानी की बात अपनी जगह सही थी. " बाबू जी तनिक ठहरिए उ शाम के आते ही आपको सिगरेट दिए रहे " मधुरानी गणेश की ओर मुखातिब हुई. इतने में शाम उस चोरनी को पकड़ कर मधुरानी के सामने ले आया. "हरामजादे" वह औरत शाम से अपना हाथ छुड़ाते हुए बोली "हमरा हाथ जोड़ बेसरम , कीड़े पड़े तोहार हाथ में , तेरा सत्यानास जाए" "मैं न छोडूं तोहार हाथ , म्हारी दीदी ने तुमको गुड चुराते देखा होवे है" लड़का बोला. "ए कलमुंही , हम ई गुड के पैसे दिए हैं" चोरनी उल्टा मधुरानी पर बरसी . "पैसे दिए रहे तूने ? हैं ? बड़ी आई पैसे देने वाली कुतिया " अपनी साडी कमर में खोंस कर मधुरानी आगे बढ़ी . " ए शामू ज़रा ग्राहकों को देख तो , हम अभी इसको ठीक किए देते हैं" " जी दीदी जी" कह कर शामू ग्राहकों को समान तौलने लगा . इतने में चोरनी कह उठी "हराम की जनी ग़ाली मत दे कहे देती हूँ" "चटाक!!!" मधुरानी एक झन्नाटेदार तमाचा उस चोरनी के मुँह पर रसीद दिया "गुड चोरनी , रंडी! " मधुरानी उसके बालों का झोंटा पकड़ कर उसे तमाचे पर तमाचे मारे जा रही थी "पैसे दिए तूने कमिनि ? हाँ? हमर से ज़बान लड़ाती है ? हैं? कितने का गुड तूने मोल लिया, बता कमिनि ... बोल हरामजादि हम तोहार चमडी निकाल लूँगी " इतना कह कर उसने और एक तमाचा उसको जड़ा . "आ " मार से वह औरत कराह उठी फिर आवाज़ में नर्मी लाते हुए बोली "ए री मार मत" "अच्छा ? तो बताए दे कितने का गुड खरीदा तूने ? " इतना कह कर उसके झोंटे को उसने ज़ोरदर झटका दिया . वह औरत अपने बॉल छुड़ाते हुए नीचे गिर पड़ी फिर सम्हल कर उठती हुई बोली " बताती हूँ" "चार आने का आधा किलो" " चार आने का आधा किलो? हैं?" उसकी बात को दोहराते हुए मधु रानी बोली " चार आने का आधा किलो गुड कब से मिलत रहा ? हैं? कलमुंही झूठ बोलती है , कीड़े पड़ें तेरे मुँह में रंडी , हराम जादि चोरनी " उसे गलियाते हुए उसने उसके मुँह पर एक घूँसा जड़ दिया , फिर उसकी साडी से गुड की दल्ली निकल कर शामू को बोली " ओ सामू बेटा ज़रा ई गुड की दल्ली को तोलना तो और बता ई रंडी को कितना होवे है? " उससे गुड की दल्ली ले कर तौलने के बाद कहा " डेढ़ किलो बनता है दीदी जी" " ए देखो गाँववालों ई औरत कहे है इसने हमार से आधा किलो गुड लिया रहा चार आने में , और फिर तौलने पर इसका वजन डेढ़ किलो कैसे हुआ रहा ? और ई रंडी हमसे कहत रही इसने गुड हमसे मोल लिया है , क्योंरी कुतिया ? " इतना कह कर उसने नीचे बैठी औरत की कमर में एक जोरदार लात जमाई . वह औरत ज़मीन पर धराशायी हो गयी " ठहर रंडी की जनि छीनाल औरत , तुझे छठी का दूध याद न दिलाया रहा तो हमरा नाम भी मधुरानी नहीं , कहे देती हूँ , ए रे सामू ज़रा रस्सी तो ला रे इसको बाँध कर थाने लिए चलते हैं" मधु रानी कड़क कर बोल उठी. वह औरत दर्द से कराहते हुए अपने कान पकड़ कर गिडगिडाई " ना दीदी , रहम करो हमार छोटे छोटे बच्चे हैं , हमका पुलिस में ना दो" वह मधुरानी के पाँवों को छू कर बोली . " नौटंकी ना कर , धन्दे का टाइम खराब करती है रंडी , चल उठ और दफ़ा हो यहाँ से और कहे देते हैं आइन्दा इहा अपनी मनहूस सकल न दिखाना वरना ओ हाल करूँगी तेरा तोरे बच्चे भी तुझे न पहचानेंगे चल भाग बुरचोदि रंडी हरामजादि " पलट कर गल्ले पर वापिस जाते हुए मधुरानी गुस्से से बड़बड़ा रही थी. गणेश सांस रोक कर यह हाई वोल्टेज ड्रामा देखे जा रहा था उसके मुँह से एक लफ्ज़ नहीं निकल रहा था , दूसरी दफे वह मधुरानी का यह रूप देख रहा था. लेकिन जो भी हो ऐसे मुश्किल

हालात से दो चार हाथ करना इसे खूब आता है , कोई और होती तो घबरा जाती. उसे याद आया एक बार वह अपनी पत्नी को पीछे स्कूटर पर बिठा कर कहीं जा रहा था एक गुंडा दिन दहाड़े उसकी बीवी के हाथों से पर्स छीन कर भाग खड़ा हुआ , यह देख कर उसकी बीवी को वो सदमा लगा की उसको समझ ही नहीं आया कि आख़िर क्या हुआ , वह मानों काठ की हो गयी , कितनी देर बाद वह होश में आई तब तक गुंडा दूर भाग चुका था. उसकी जगह यह मधु रानी होती तो गाड़ी से कूद कर उस गुंडे का पीछा करती और न सिर्फ़ अपना पर्स उससे लेती बल्कि उसकी गर्दन पकड़ कर २-४ लातें उसको लगाए बिना वापस न आती. आज उसके दिल में मधुरानी के प्रति इज़्ज़त कई गुना बढ़ गयी थी. उसने सोचा, भारतीय नारी को इसी तरह हिम्मती बनना पड़ेगा , अगर इसी तरह महिलाएँ खुद को मजबूत बनाएँ और हिम्मत से काम लें तो कोई भी इन महिलाओं का शोषण न कर पाएगा , वाकई औरत अबला नहीं होती....आज बृहस्पतिवार था , बृहस्पतिवार को गाँव में साप्ताहिक हाट - बाजार लगा करती थी . सुबह सवेरे ही गणेश आफ़िस जा कर आया , आज कुछ खास काम भी नहीं था, लिहाज़ा उकता कर वह बाजार की तरफ चल दिया . सब्ज़ी तरकारी वालों की दुकानों के सामने घूमते हुए वह कपड़े वालों की कतार में चला आया. कपड़े वालों की दुकानों में छोटे बच्चों से ले कर बड़े बूढ़े और महिलाओं के धोती साड़ियाँ कुर्ते करीने से सजाए गये थे . उन्हीं के बीच उसे बंजारा लोगों की वह खास पोशाक भी नज़र आई , एक तरफ चोगा और टोपी लटके हुए थे , उस अजीब सी रंग बिरंगी पोशाक को देख कर उसे बड़ा मज़ा आ रहा था . दुपहर का वक्त हो चला था , बाजार में आस पास के गाँवों से आने वाले ग्राहकों की भीड़ धीरे धीरे बढ़ने लगी थी , दुकानों के बीचों बीच रास्ते पर भीड़ इतनी बढ़ गयी थी की पाँव रखने की जगह न थी, फिर भी उन सबके बीच किसी प्रकार गणेश अपने रास्ते चल रहा था , अब वह पूरी तरह उकता चुका था . उसने सोचा एक बार गाँव की तरफ घूम आए ... उसके पाँव बरबस ही मधुरानी की दुकान की तरफ बढ़ चले , बाजार की भीड़ भाड़ से बचते बचाते वह पानी की टंकी की ओर बढ़ चला जहाँ बड के पेड़ की अच्छी ख़ासी ठंडी छाँव थी. एकपल उसने इस पेड़ तले सुसताने की सोची लेकिन दूसरे ही पल उसने वह विचार त्याग दिया और उसने मधु रानी की दुकान की ओर अपने कदम बढ़ाए . दूर से ही उसकी दुकान के इर्द गिर्द लोगों का जमावड़ा देख उसे हैरत हुई. वह मन मसोस कर रह गया, अब इस भीड़ के रहते उससे बातचीत मुमकिन न थी. उसने दो चार मिनट वहीं चहलकदमी कर गुज़ारे, वह सोच रहा था कि वापिस बाजार जाया जाए या थोड़ी देर कमरे में सुस्ताया जाए. लेकिन उसे मधु रानी से मिलने की प्रबल इच्छा हुई, लिहाज़ा उन लोगों की भीड़ में रास्ता निकालते हुए वह गल्ले के करीब जा पंहुचा . " ओ शामू ज़रा देख तो उ औरत धोती में गुड का डला छिपायात रही , जा जा जल्दी जा उ भिखमंगी चोरनी को पकड़ ला " मधु रानी की तेज नज़रों से वह चोरनी बच न पाई थी. " ई करम जले गाँव वाले चोरी चकारि से बाज न आवे है" वह गुस्से से गाँववालों को कोसते हुए बड़बड़ा रही थी. " अरे जल्दी जा नास्पीटे , तोरा सत्यानाश जाए कलमुंहे जा जल्दी जा उसको पकड़" वह चीखी. उस नौकर ने इधर उधर नज़रे दौड़ाई और वह चोरनी उसकी नज़रों से न बच पाई , नौकर को अपनी तरफ आता देख वह भीड़ से निकल दूसरी ओर भागने लगी . गणेश मधुरानी के करीब खड़ा हो तमाशा देख रहा था . उधर मधुरानी थी जो सुध बुध खो बैठी थी, उसका सारा ध्यान उस चोरनी पर लगा था " अरे जल्दी जा कलमुंहें पकड़ उ कर्मजली को देख देख कैसन भाग रही है उ कुतिया" मधुरानी उत्तेजित हो कर चिल्लाए जा रही थी . " ए री ज़रा ई बोतल में तेल तो डाल " उस भीड़

में किसी ने बोतल उठा कर उसका ध्यान अपनी ओर खींचा. " ए री मधुरानी ज़रा नोन की थैली निकाल तो " एक औरत उससे बोली. गणेश ने १० रु. का नोट निकाल कर कहा "मुझे एक गोल्ड फ्लेक " "अरे तनिक ठहरो , इधर ई चोर लोग पूरा दुकान पे हाथ साफ करत रहे और आप लोगन को थोडा वक्त रुकने की फ़ुर्सत नाही" मधुरानी गणेश पर झुंझला कर जैसे फट पड़ी . उसको जब अहसास हुआ कि वह गणेश है तो आवाज़ में नर्मी लाते हुए बोली " बाबूजी ए आप हैं हम समझे कोई और आवे है" " न.. न.. कोई बात नहीं पहले तुम अपना काम देख लो , कोई जल्दी नहीं है " गणेश ने जवाब दिया. " अरे बाबू तोके जल्दी ना है पर हमको तो है ना " एक औरत भीड़ में बोल उठी . उस औरत की ओर गुस्से से देखती हुई मधुरानी तेज आवाज़ में बोल उठी " ए री बड़ी जल्दी है ना तुझे ? जा किसी और दुकान पर चली जा , हमर दुकान का नौकर उ चोरनी के पीछे गया है , हम जो गल्ले से उठ कर तुझे जो समान दिए रहे तो उ चोर लोग पूरा दुकान पर हाथ साफ कर लिए" वह औरत चुप हो गयी . मधुरानी की बात अपनी जगह सही थी. " बाबू जी तनिक ठहरिए उ शाम के आते ही आपको सिगरेट दिए रहे " मधुरानी गणेश की ओर मुखातिब हुई. इतने में शाम उस चोरनी को पकड़ कर मधुरानी के सामने ले आया. "हरामजादे" वह औरत शाम से अपना हाथ छुड़ाते हुए बोली "हमरा हाथ जोड़ बेसरम , कीड़े पड़े तोहार हाथ में , तेरा सत्यानास जाए" "मैं न छोड़ूं तोहार हाथ , म्हारी दीदी ने तुमको गुड चुराते देखा होवे है" लड़का बोला. "ए कलमुंही , हम ई गुड के पैसे दिए हैं" चोरनी उल्टा मधुरानी पर बरसी . "पैसे दिए रहे तूने ? हैं ? बड़ी आई पैसे देने वाली कुतिया " अपनी साडी कमर में खोंस कर मधुरानी आगे बढ़ी . " ए शामू ज़रा ग्राहकों को देख तो , हम अभी इसको ठीक किए देते हैं" " जी दीदी जी" कह कर शामू ग्राहकों को समान तौलने लगा . इतने में चोरनी कह उठी "हराम की जनी ग़ाली मत दे कहे देती हूँ" "चटाक!!!" मधुरानी एक झन्नाटेदार तमाचा उस चोरनी के मुँह पर रसीद दिया "गुड चोरनी , रंडी! " मधुरानी उसके बालों का झोंटा पकड़ कर उसे तमाचे पर तमाचे मारे जा रही थी "पैसे दिए तूने कमिनि ? हाँ? हमर से ज़बान लड़ाती है ? हैं? कितने का गुड तूने मोल लिया, बता कमिनि ... बोल हरामजादि हम तोहार चमडी निकाल लूँगी " इतना कह कर उसने और एक तमाचा उसको जड़ा . "आ " मार से वह औरत कराह उठी फिर आवाज़ में नर्मी लाते हुए बोली "ए री मार मत" "अच्छा ? तो बताए दे कितने का गुड खरीदा तूने ? " इतना कह कर उसके झोंटे को उसने ज़ोरदर झटका दिया . वह औरत अपने बॉल छुड़ाते हुए नीचे गिर पड़ी फिर सम्हल कर उठती हुई बोली " बताती हूँ" "चार आने का आधा किलो" " चार आने का आधा किलो? हैं?" उसकी बात को दोहराते हुए मधु रानी बोली " चार आने का आधा किलो गुड कब से मिलत रहा ? हैं? कलमुंही झूठ बोलती है , कीड़े पड़ें तेरे मुँह में रंडी , हराम जादि चोरनी " उसे गलियाते हुए उसने उसके मुँह पर एक घूँसा जड़ दिया , फिर उसकी साडी से गुड की दल्ली निकल कर शामू को बोली " ओ सामू बेटा ज़रा ई गुड की दल्ली को तोलना तो और बता ई रंडी को कितना होवे है? " उससे गुड की दल्ली ले कर तौलने के बाद कहा " डेढ़ किलो बनता है दीदी जी" " ए देखो गाँववालों ई औरत कहे है इसने हमार से आधा किलो गुड लिया रहा चार आने में , और फिर तौलने पर इसका वजन डेढ़ किलो कैसे हुआ रहा ? और ई रंडी हमसे कहत रही इसने गुड हमसे मोल लिया है , क्यौंरी कुतिया ? " इतना कह कर उसने नीचे बैठी औरत की कमर में एक जोरदार लात जमाई . वह औरत ज़मीन पर धराशायी हो गयी " ठहर रंडी की जनि छीनाल औरत , तुझे छठी का दूध याद न दिलाया रहा तो हमरा नाम भी मधुरानी नहीं , कहे देती हूँ , ए रे सामू ज़रा रस्सी तो

ला रे इसको बाँध कर थाने लिए चलते हैं" मधु रानी कड़क कर बोल उठी. वह औरत दर्द से कराहते हुए अपने कान पकड़ कर गिडगिडाई " ना दीदी , रहम करो हमार छोटे छोटे बच्चे हैं , हमका पुलिस में ना दो" वह मधुरानी के पाँवों को छू कर बोली . " नौटंकी ना कर , धन्दे का टाइम खराब करती है रंडी , चल उठ और दफ़ा हो यहाँ से और कहे देते हैं आइन्दा इहा अपनी मनहूस सकल न दिखाना वरना ओ हाल करूँगी तेरा तोरे बच्चे भी तुझे न पहचानेंगे चल भाग बुरचोदि रंडी हरामजादि " पलट कर गल्ले पर वापिस जाते हुए मधुरानी गुस्से से बड़बड़ा रही थी. गणेश सांस रोक कर यह हाई वोल्टेज ड्रामा देखे जा रहा था उसके मुँह से एक लफ्ज़ नहीं निकल रहा था , दूसरी दफे वह मधुरानी का यह रूप देख रहा था. लेकिन जो भी हो ऐसे मुश्किल हालात से दो चार हाथ करना इसे खूब आता है , कोई और होती तो घबरा जाती. उसे याद आया एक बार वह अपनी पत्नी को पीछे स्कूटर पर बिठा कर कहीं जा रहा था एक गुंडा दिन दहाड़े उसकी बीवी के हाथों से पर्स छीन कर भाग खड़ा हुआ , यह देख कर उसकी बीवी को वो सदमा लगा की उसको समझ ही नहीं आया कि आख़िर क्या हुआ , वह मानों काठ की हो गयी , कितनी देर बाद वह होश में आई तब तक गुंडा दूर भाग चुका था. उसकी जगह यह मधु रानी होती तो गाड़ी से कूद कर उस गुंडे का पीछा करती और न सिर्फ़ अपना पर्स उससे लेती बल्कि उसकी गर्दन पकड़ कर २-४ लातें उसको लगाए बिना वापस न आती. आज उसके दिल में मधुरानी के प्रति इज़्ज़त कई गुना बढ़ गयी थी. उसने सोचा, भारतीय नारी को इसी तरह हिम्मती बनना पड़ेगा , अगर इसी तरह महिलाएँ खुद को मजबूत बनाएँ और हिम्मत से काम लें तो कोई भी इन महिलाओं का शोषण न कर पाएगा , वाकई औरत अबला नहीं होती....

गणेश की अब गाँववालों से अच्छी ख़ासी जान-पहचान हो गयी थी और वह उनसे काफ़ी घुल -मिल गया था . गाँव के नौजवानों के मिलने जुलने का स्थान टेलर की दुकान हुआ करता था . मारुति टेलर की दुकान पर शाम को उसके कई हमउम्र लोगों का जमावड़ा सा लगता था , गाँव की खबरों का ताज़ा हाल वहाँ शाम में मिल जाया करता था . वहीं के कुछ लड़के शाम ५ से ७ के दरमियाँ आम के बगीचे में क्रिकेट खेला करते , शाम को खेल कर लौटने के बाद उनके मिलने, हँसी मज़ाक करने का अड्डा मारुति टेलर की दुकान पर हुआ करता था . बाद में गेंद बल्ला और स्टप्म्स इत्यादि चीज़ें उसी टेलर की दुकान में रखीं जातीं. सो सब लड़के खेलने से पहले और खेलने के बाद वहीं मिलते थे. गणेश को यह देख कर बड़ा अचरज हुआ के इतने पिछड़े गाँव के लड़कों को क्रिकेट खेलने का शौक है , उसने जब जानने की कोशिश की तो यह बात सामने आई कि गाँव के लड़के रेडियो पर क्रिकेट कमेंट्री सुना करते थे , गावसकर , वेंगसरकर , अमरनाथ जैसे खिलाड़ियों से वे वाकिफ़ थे . फिर क्या था बढ़ई के छोरे ने बल्ला , स्टंप बनाने की ज़िम्मेदारी ली और चमार के लौंडे ने गेंद बनाने की , तो यूँ कर गाँव के लड़के क्रिकेट खेलने में रम जाते. गणेश भी शाम को वहाँ उन लड़कों के साथ खेलने जाया करता . कुछ कुछ लड़कों का खेल देख कर वह हैरान हो जाता . महदा नाम का एक लड़का जब बॉलिंग करता था तो अच्छे अच्छों के छक्के छूट जाते ,उसकी उछाल खाती तेज गेंदों से डर कर बल्लेबाज़ एक तरफ हट जाते . कई लोग उसकी उछाल खाती गेंदों से ज़ख्मी हुए थे . फिर मारुति टेलर ने ऐसी दुर्घटनाओं से बचने के लिए पॅड्स बनाए . एक दूसरा लड़का लोहा सिंह बिना ग्लव्स के कीपिंग करने में माहिर था , गेंद चाहे कितनी ही तेज या उछाल भरी क्यों न हों उससे छूटती न थी . एक बार हैरत में गणेश ने उसके हाथ देखे थे, तो

उसने पाया था की वह लड़का मेहनत मज़दूरी किया करता था इसलिए हथेलियों की चमडी सख़्त हो गयी थी, यह उसके नॅचुरल ग्लव्स बन गये थे . जिस लड़के को सारे गाँव के लोग पगला कहते थे वह तो हरफ़नमौला था , जब उसको गेंद डालने के लिए कहा जाता तो अर्जुन के निशाने की तरह उसका निशाना केवल तीन स्टँप्स हुआ करते और जब वह बल्लेबाजी करता तो उसे सिर्फ़ गेंद ही दिखाई देती , वह खूब लंबी हिट लगाता . फीलडिंग में तो वह माहिर था ही. मोटर मेकेनिक और बबन एलेक्ट्रीशियन तो चालाक खिलाड़ी थे , हरदम नये स्ट्रोक्स खेलते और नयी गेंदे फेंकते थे , कहल की तकनीक के मामले में उनका कोई सानी न था . आफ़िस का पांडु क्रिकेट का समान मैदान में लाया करता इसके बदले में उसे एक दो ओवर बॅटिंग करने दी जाती लेकिन समान वापस रखने की जब बारी आती तो वह अक्सर नदारद होता. मारुति टेलर कभी कभार एक-दो गेंद खेल कर वापस अपनी दुकान पर जाया करता , उसे उसके काम से ही फ़ुर्सत न होती . जब यह साहब बॅटिंग करने आते थे तो उनका ध्यान गेंद के बजाए धोती संभालने में जादा होता था . "वाइड बॉल" को वे लड़के " वाईट बॉल " कहते थे और आउट की अपील " आउट है" कह कर करते थे , ऐसे ही मज़ाक मज़ाक में कई बातें होतीं थी जिनको देख सुन कर गणेश को बड़ी हँसी आती थी . छः- छः लड़के दोनो टीमों में होते थे इसलिए कामन फीलडिंग होती थी , और ऐसे में अंपायर बॉलिंग करने वाली टीम के किसी खिलाड़ी को बनाया जाता , बोलर जब गेंद डालता था और वह गेंद जब बल्लेबाज के पॅड्स से टकराती थी तो सबसे पहली अपील अंपायर बना लड़का ही करता था , वह यह भूल जाता की वह अंपायरिंग कर रहा है ऐसे में सब लोग हंस हंस कर लोट पोट हो जाते . शाम में लोटा ले कर खेतों में शौच के लिए जाने वाले लोग भी आम के बगीचे में थोड़ी देर रुक कर क्रिकेट का मज़ा लेते और भूल जाते कि वह क्या करने निकले थे . जब से गणेश ने इन लड़कों के बीच खेलना चालू किया था तब से मधुरानी भी कई बार शाम में आया करती और गणेश की हौसला अफज़ाई किया करती . कभी कभी तो पाटिल साहब और सरपंच जैसे रसूख्दार लोग भी वहाँ आया करते . पाटिल जी तो सीधे मैदान में घुस जाया करते और बल्ला छीन कर खुद बल्लेबाजी करने लगते " ए लड़के ज़रा बता तो कौन लौंडा अच्छी गेंद डाले है ? " "पाटिल जी ओ महदू अच्छी तेज गेंद डाले है " " ओ मेरा मतलब वो ना था लड़के , उसका नाम बता जिसकी गेंद पीटी जा सके है" फिर बबन बहुत ही धीमी धीमी गेंद पाटिल जी को डाला करता , पाटिल जो वह बल्ला घुमाते की गेंद सीधे मैदान के बाहर हो जाती. एक दो ओवर खेल कर पाटिल जी बल्ला फेंक देते और कहते ," हद है साला , क्या मरी मरी गेंद डालते हो अरे लड़कों इस विलायती खेल से तो अपना गिल्ली डंडा बेहतर है" लड़के मुँह छिपा कर हंसा करते. यह देख पाटिल जी बड़बड़ाया करते "बर्बाद है आजकल के लड़के .. हमारे वक्त हम लोग तो कबड्डी , गिल्ली डंडा , खो खो खेलते फिर रात को छुपान छुपैया खेलते थे" लड़के अपना खेल जारी रखते.

यूँ ही एक दिन गणेश गणेश उन लड़कों के साथ क्रिकेट खेल रहा था . उस दिन मधुरानी भी उनका खेल देखने बगीचे में आम के पेड़ की नीचे बैठी थी . गणेश का पूरा ध्यान पेड़ के नीचे बैठी हुई मधुरानी पर था. वह अब स्ट्राइक पर था, उधर दूसरे छोर से महादू ने दौड़ते हुए एक तेज गेंद डाली , गणेश गेंद भाँपने में ज़रा चूक गया और बचने की कोशिश में उसे अहसास ही नहीं हुआ कि कब गेंद उसके सिर से रगड़ कर चली गयी . गणेश बाल-बाल बच गया, ज़रा एक दो इंच गेंद इधर उधर होती तो सीधा सिर पर चोट लगती . गणेश बदहवास सा नीचे गिर पड़ा, यह देख लड़कों ने शोर मचा

दिया , सब दौड़े-दौड़े उसके पास आए . दूसरे छोर से मधुरानी भी बदहवास सी दौड़ती आई और झुक कर जब उसके माथे को छुआ तो हथेलियाँ खून से सन गयीं . " हाय राम ! कोई झटपट जा कर डाक्टर बुलवाए द्यो ... जाओ कलमुहो ... खड़े खड़े मुँह का देखत हो" मधुरानी घायल गणेश की देखभाल में जुट गयी और आस-पास के लड़कों को निर्देश देने लगी . उधर गणेश अपने दोनो हाथों से सिर को पकड़े , दर्द से कराह रहा था . मधुरानी डर सी गयी " गनेस बाबू .. बाबू जी.. बहुत दर्द हो रहा है का ?" उसने तसल्ली करना चाही कि कहीं वह दर्द से बेहोश न हो गया हो. गणेश ने बड़ी मुश्किल से मिचमिचाते हुए अपनी आँखें खोलीं ...... उसकी आखों के सामने हल्के हल्के अंधेरा सा छा रहा था.... बेचारे को दर्द के मारे कुछ सूझ नहीं रहा था. " ओ लड़के ... कहीं से पानी लिवा लाओ जा भाग ससुरे" मधुरानी ने एक लड़के को पानी लाने भेजा. " बाबू जी अब जी कैसा है ? " पास खड़े लड़के ने गणेश से पूछा . " परे.हट मरे ... तेरा सत्यानाश जाए बाबू जी को कहे सता रहा है ????" मधुरानी उस पर चिल्लाई... "ना.. ना हम तो बस हाल-चाल जानना चाहता हूँ" लड़का सकपकाया . " ई लो दीदी जी ई पानी लो , ज़रा बाबूजी को पानी पिलाए द्यो" इतने में दूसरा लड़का भागा भागा पानी ले आया.मधुरानी ने गणेश को थोडा पानी पिलाया " ज़रा बाबूजी का चेहरा में पानी छिड़क द्यो .....जान में जान आवेगी" किसी ने सलाह दी. सब लोग गणेश को ज़ख्मी देखकर बड़े चिंतित थे. कोई उसका सिर सहला रहा था , कोई उसके हाथ पैर दबा रहा था . तभी बबन डॉक्टर साहब को ले आया . डॉक्टर की ब्रीफ़केस हाथ में पकड़े बबन ने भीड़ में रास्ता निकाला. " हटो परे डाक्टर साहब आवे हैं" भीड़ छट गयी . एक लड़के ने मधुरानी को गणेश की फ़िक्र में घबराते देख ताना मारा " ए री अब का तू ही उसे इंजेक्सन देवेगी ? हट परे उ देख डाक्टर साहेब आई गवा है" तभी डॉक्टर साहब करीब पंहुचे " हुम्म.... कहाँ लगी है ? ज़रा चोट दिखाइए" "माथे मे गेंद लगी रही" किसी ने भीड़ में जवाब दिया. "उ तो रामजी की किरपा रही डाक्टर साहब जो गनेस बाबू को अधिक चोट न आई , जो गेंद ज़रा इधर उधर होती तो भैया खुपडिया की खैर ना थी" दूसरे ने कहा . मधुरानी ने उसकी ओर गुस्से से देखा , वह बंदा यह देख अधिक कुछ न बोला और चुप हो गया . " क्या आपको चक्कर आ रहे हैं गणेश बाबू ? मितलि आ रही है ?" डॉक्टर ने गणेश से जानना चाहा किंतु गणेश ने 'ना' में सिर हिलाया. डॉक्टर ने स्तेथॉस्कोप कानों में लगाया और दूसरा सिरा उसके सिने पर रखा . "चोट उ के सिर में लगा है और ई बुडबक उसका सीना जाँच रहा है" एक ने ताना कसा. " कही और तो चोट नहीं लगी गणेश बाबू ? कहाँ दर्द हो रहा है ? " डाक्टर ने गणेश से सवाल किया. गणेश ने ना में दोबारा सिर हिलाया . डॉक्टर साहब गणेश की नब्ज़ टटोलने लगे , मधुरानी बड़े परेशान थी. "चिंता की कोई बात नहीं , मैं कुछ दवाइयाँ लिख देता हूँ उन्हें दो वक्त लीजिएगा , आपकी तबीयत ठीक रहेगी" डॉक्टर स्टेथेस्कोप अपने ब्रीफ़केस में रखते हुए बोले. इसके बाद उन्होने दवाइयों की शीशी निकालीं , हर शीशी से तीन तीन गोलियाँ निकालीं उन्हें आधा तोड़ कर कागज की पुडीया बनाईं और वह पुडीया मधुरानी को थमातेहुए बोले "यह दवाई इन्हें सुबह शाम खिलाइए , भूलिएगा नहीं" फिर गणेश की ओर मुड़ कर बोले "अच्छा गणेश बाबू अब आज्ञा दीजिए और अपना ख्याल रखिए" डाक्टर वहाँ से चले गये. रात हो गयी थी गणेश अपने कमरे में बिस्तर पर लेटा था , बुखार से उसका बदन तप रहा था शाम से ही उससे मिलने कई लोग आए थे . पड़ोस की सारजाबई उसके लिए खिचड़ी बना लाई थी , उन्होने चम्मच से उसे खिलाई थी . वह थोड़ी देर उसके पास बैठकर जा चुकी थी. आधी रात होने को थी , कमरे में अब उसके साथ केवल मधु रानी थी, वह गणेश को

सहला रही थी . गणेश को उसकी नर्म मुलायम छुअन भा रही थी . उसका मन किया कि वह भी मधुरानी को अपनी बाहों में भरकर खूब प्यार लुटाए , लेकिन वह चोट से बदहाल और बेदम पड़ा कराह रहा था. डॉक्टर ने जख्म पर पट्टी बाँधी थी. " आह... तुम अब जाओ मधुरानी.. आह" गणेश कराहते हुए किसी प्रकार बोला। "ना .. ना बाबूजी तोहे ई हाल में छोड़ कर हम कहीं ना जा सकत है" मधुरानी ने मना करते हुए कहा . मधुरानी ने अपनी हथेलियों से उसके गालों को सहलाया , उसके बदन में झुरझुरी सी दौड़ गयी और उसके रोंगटे खड़े हो गये. उसने उसका हाथ अपने हाथों में लिया और उसे अपने सीने से लगा लिया . मधुरानी अपना हाथ छुडाते हुए बोली " आप आराम करो बाबूजी " फिर उसे पैरों के पास पड़ी चादर ओढाते हुए बोली "आप सो जाओ बाबू जी हम यहीं है" गणेश उधर दर्द से कराहते हुए अपनी फूटी किस्मत को कोस रहा था , धत्त तेरे की , इतना अच्छा मौका हाथ लगा और मैं इस हाल में ? .... सच है किस्मत हो... तो क्या करेगा पांडु....

आज सुबह से गाँव में चहु ओर चहल-पहल थी . आज गुँगे का ब्याह जो था . गुँगे के बापू और मामा ने जी जान लगा कर उसके लिए कोई दूसरी लड़की ढूँढ ली थी . लड़की पड़ोस के ही गाँव की एक ग़रीब घर से थी . लड़की के बाप ने शायद गुँगे की जायदाद देख कर उसकी कमी को नज़रअंदाज़ कर यह सोच हामी भर दी थी कि ऐसे भरे - पूरे खाते-पीते घर में उसकी बेटी सुख चैन से रहेगी. लड़की के माँ-बाप इतने ग़रीब थे कि ब्याह का खर्च भी नहीं उठा सकते थे, लिहाज़ा ब्याह कि पूरी तैयारी और खर्चा गुँगे के घरवाले ही करेंगे ऐसा तय हुवा था. ब्याह भी शायद इसलिए गुँगे के गाँव में करना तय हुआ . लड़की तय होने से पूर्व गुँगे को घर में ही एक कमरे में क़ैद किया गया था, और एक कारींदा उस पर पहरे पर लगाया गया था. दूसरी ओर गूंगीके पिता ने भी उसे यूँ ही एक कमरे में बंद कर रखा था. ब्याह का मुहूरत सुबह ११ बजे का था , आज तड़के से ही मेहमानों का मजमा सा लगा था , गाँव के कच्चे पक्के रास्तों से मेहमानों से भरी बैलगाड़ियाँ आ-जा रहीं थी. उनके ठहरने और रुकने का इंतेजाम गाँव की पाठशाला में हो रखा था . गाँववाले इस शादी को ले कर यूँ खुश थे मानों उनके अपने ही घर के किसी सदस्य का ब्याह हो , सब नये कपड़े पहनकर और सजधज कर तैयार हो रहे थे. गाँव में जब भी कोई शादी-ब्याह होता तो लाउड स्पीकर पर गाने बजाने का काम भीखू को दिया जाता , हलवाई का काम और खाने-पीने का इंतेजाम किसन के पास होता. उनके अपने अपने सहायक होते थे. पाटिल और सरपंच जी जैसे अनुभवी लोगों से ऐसे मौकों पर सलाह - मशविरा किया जाता. गाँव के नाई के पास बारातियों - घरातीयों और ब्याह में सम्मिलित होने आए मेहमानों की दाढ़ी बनाने , बाल काटने तेल मालिश की ज़िम्मेवारी होती, इसके अतिरिक्त वह ब्याह का निमंत्रण देने का और विवाह मंडप में आए लोगों को टीका लगाने का काम करता , इन सब कामों के बदले नाई को साल भर का अनाज और पूरे परिवार को दो जोड़ी नये कपड़े मिला करते . शादी ब्याह की तैयारी में हफ़्ता दस दिन नाई का परिवार फिर शादी वाले घर के सदस्यों की भाँति ही पूरे मनोयोग से करता. सुबह के दस बज रहे थे , गुँगे के यहाँ चहल पहल अपने चरम पर पंहुच चुकी थी . लाउड स्पीकर पर भीखू ने गाने बजाने चालू कर दिए थे , लिहाज़ा पूरा वातावरण फिल्मी गानों के शोर से भर गया था. उधर बँड बाजे

वाले भी चालू हो गये थे , चारों और चिल्लपो मची हुई थी. गणेश के यहाँ गाँव का नाई सुबह ही आ कर उसको निमंत्रित कर चुका था. गणेश भी ब्याह में जाने के लिए अपने कपड़े इस्त्री कर रहा था. वह नये कपड़े पहन कर और तैयार हो कर बाहर आया और कमरे में ताला डालते हुए उसकी नज़र मधुरानी के घर की ओर गयी . आज दुकान बंद थी फिर उसने उसके घर की ओर नज़रें घुमाई कि तभी उसे मधुरानी के ससुर और दुकान के नौकर को नये कपड़े पहन कर घर से बाहर निकलते देखा. आज गाँवमें शादी थी लिहाज़ा उसने सोचा शायद यह लोग भी शादी में शामिल होने जा रहे हैं . उनके दूर जाने तक वह वहीं खड़ा रहा , मधुरानी के घर का दरवाज़ा अभी भी खुला हुआ ही था जिसका सीधा मतलब था की मधुरानी घर में मौजूद थी. गणेश सोचने लगा , गाँव के लोग बाग शादी में जा रहे हैं .. और मधुरानी घर पर अकेली है ... यह अच्छा मौका है .. उससे मिलने का ... वह भी मुझसे मिलने को लालायित रहती है .. और इसका इशारा वह कई बार दे चुकी है ... आज इज़हार करने का इससे अच्छा मौका शायद फिर कभी न मिले.... गणेश के कदम मधुरानी के घर की तरफ बढ़ चले . जाते जाते उसे उस रात की याद हो आई जब मधुरानी अपने नर्म-मुलायम हाथों से उसे सहला रही थी , उसकी मदहोश करने वाली नज़रें, उसकी शरारती मुस्कान उसे आँखों के सामने दिखाई देने लगी . उसने सोचा, मैं उसके यहाँ जा तो रहा हूँ .. लेकिन कही मेरी फ़ज़ीहत तो न होगी ? क्या मैं उससे अपने मनकी बात कह पाऊँगा ? ... चलते चलते वह ठिठक गया उसने सोचा, कहीं कोई मुझे देख तो नही रहा ?... उसने आस पास देख कर तसल्ली कर ली फिर सोचा , लेकिन उसके यहाँ जाने का क्या बहाना करूँ...? यूँ बेवजह जाना ठीक न दिखेगा... चलते चलते उसे याद आया कि नौकर आज उसके लिए पानी भरना भूल गया है.... हाँ .. यही ठीक रहेगा .. यूँ भी गर्मी के दिन हैं .. मैं कहूँगा कि गला सूख रहा है ... और पानी पीने के बहाने उसके घर चला जाऊँगा.... वह अब उसके घर के दरवाज़े पर पहुँच चुका था . उसने एक बार फिर चारों और नज़रें दौड़ाई कि कोई उसे देख न रहा हो .... चारों और शादी ब्याह के नाच गाने का शोर गुल मचा हुआ था .

उसके दिल की धड़कने अब तेज हो चुकीं थी उसने हौले से दरवाज़े की सांकल से दरवाज़ा खटखटाया . अंदर से कोई आवाज़ न आई ..उसे तोड़ा अचंभा हुआ उसने दोबारा दरवाज़ा खटखटाया... "कौन आया रहा ?" अंदर से मधुर आवाज़ आई . गणेश के हलक से आवाज़ न आई. बोलने की उसने लाख कोशिश की लेकिन चाह कर भी आवाज़ न निकल सकी. अभी से यह हाल है तो बाद में न जाने क्या होगा ?.... गणेश ने सोचा .... ऐसे ही वापस चला चलता हूँ ... नहीं यूँ इस तरह पीठ दिखा कर भागना उचित न होगा.. थोडा धीरज से काम लेना होगा... भागना मर्दानगी की निशानी नही... औरत चाहे जितनी भी बिंदास हो साहस तो मर्द को ही करना चाहिए .... " कौन है" अंदर से दोबारा आवाज़ आई . इस बार आवाज़ में ज़रा परेशानी झलक रही थी. "म..म..म..मैं ग.. गग.. गणेश" गणेश ने हकलाते हुए किसी तरह जवाब दिया. वह अब हल्का महसूस कर रहा था. उसे खुद पर ही फख्र महसूस हो रहा था. इसी तरह हिम्मत करनी होगी ... " गनेस बाबू... अरे आप उधर बाहेर काहे खड़े हो बाबू जी अंदर आइए . हम इहा कपड़े बदलत रहे " अंदर से आवाज़ आई. गणेश की आँखों के सामने मधुरानी कपड़े बदलती हुई तस्वीर आ गई. आज तक मैं सिर्फ़ उसके खूबसूरत जिस्म को

निहारना चाहता था..... शायद अनायास ही वह मौका आज हाथ लगा है ... वह जोरों से सांस लेने लगा और उसके मन में विचार आ रहे थे. वह कपड़े बदल रही है भला यह बतलाने की क्या ज़रूरत थी ?.. या शायद वह यही चाहती थी कि मैं यह बात जान लूँ ... क्या वह मुझे करीब आने का इशारा कर रही है ? .. हाँ , बिल्कुल .. इतने दिन से वह झे इसी का तो इशारा दे रही है ... अब इससे अधिक खुलकर वह भला क्या बताएगी? .... गणेश हौले से अंदर आया और जाते वक्त उसने दरवाज़े पर काँपते हाथों से सांकल चढ़ाई . सांकल चढ़ा कर वह काँपते कदमों से अंदर आया . एक लंबी सांस ले कर मानों उसने हिम्मत जुटाई . "उ हाँ चबूतरे पर बिछी खाट पर बैठ जाइए बाबू जी" अंदर से दोबारा आवाज़ आई. उसने सोचा. वह केवल चबूतरे पर बैठने के लिए कह सकती थी .. भला उसने खाट पर ही बैठने को क्यों कहा ? आख़िर क्या चाहती है यह .. शायद वह कोई गुप्त संदेश देना चाहती हो ... या वह मुझे अपने करीब बुला रही है ? ... हाँ ज़रूर .. मुझे यूँ ही उसके पास जाना चाहिए .. ऐसा मौका दोबारा हाथ नहीं आएगा .... उसके दिमाग़ में नग्न मधुरानी की तस्वीर झलकी. अब तो जाना ही पड़ेगा.... वह चबूतरे की खाट तक चल कर आया. उसने मधुरानी के कमरे में जाने की लाख कोशिश कि लेकिन उसके मानों पाँव ही उठ नही रहे थे. पूरा जिस्म पसीने से तर था . अगर मधुरानी मुझे यूँ इस हाल में देख लेगी तो न जाने क्या सोचेगी.... उसने मन ही मन कहा और वहीं धम्म से खाट पर बैठ गया . बैठ कर उसके थोड़ी जान में जान आई , जेब से रुमाल निकाल कर वह चेहरे पर आए पसीने को पोंछने लगा . "म.. मधुरानी म..मैं प..प्यासा हूँ ... थोड़ा पानी मिलेगा? दर असल आ..आज नौकर प..प..पानी भ.. भरना भू.. भूल गया" उसके मुँह से यह लफ्ज़ कब निकले खुद उसे अहसास नहीं हुआ. उसने सोचा चलो अच्छा ही हुआ यूँ ही चुप रहने में क्या लाभ?.... इतने में मधुरानी ने जवाब दिया " पानी चाहे हो ... लाती हूँ पर उ पानी के लिए इत्ति तकल्लुफ काहे करे हो बाबूजी ? ई हाँ आने जाने में आप पर कोई पाबंदी तो न है.. बाबूजी" मधुरानी की यह बातें उसके सिर में हथौड़े की तरह बजने लगीं मतलब यह भी एक इशारा है... और वह भी खुल्लम खुल्ला ..अब तो कुछ करना ही पड़ेगा ... वह तड से उठ कर खड़ा हो गया और खिसीयानी हँसी हंसते हुए बोला "न.. नही मेरा व..वह मत...मतलब नहीं था" उसने धीरे धीरे मधुरानी के कमरे की तरफ कदम बढ़ाए. इसी दौरान खुद मधुरानी ही कमरे के बाहर आई. "देती हूँ बाबूजी ई ज़रा बाल संवार लूँ " गणेश फट से पीछे हो गया. धत्त तेरे की...फिर चूक हो गयी.. इन बातों में टाइमिंग का ख़याल रखना पड़ता है.... उसने मन ही मन कहा. जाने कितनी बार यूँ ही ग़लती होगी .....कहीं उसने मेरी यह हालत देख ली तो कहेगी कैसे लल्लू से पाला पड़ा है.... उसने नज़र भर मधुरानी को देखा . हरी साड़ी में लिपटी हुई वह और भी खूबसूरत नज़र आ रही थी. उसने माधुरानी की आँखों में देखा . उसे उसकी आँखें शरारत से भरी नज़र आई, मानों वह उसे इशारा कर पास बुला रहीं हो . उसके हौसलें अब और बढ़ गये थे. कुछ पल पहले वह खुद को कोस रहा था. गणेश जहाँ बैठा था वहाँ उसके पीछे ही दीवार में एक खांचा बना हुआ था . मधुरानी अपने खुले बालों को उंगलियों से सांवरते हुए, और दाँतों में बालों की क्लिप दबाए , उसके करीब आई और खाँचे से कोई चीज़ लेने के लिए झुकी ... अचानक ही उसके पैर गणेश के पैरों से छू गये और उसके खुले बाल उसके गालों से थोड़ा छू गये. गणेश के मानों पूरे बदन में बिजली सी दौड़ गयी, उसका जी किया कि वही उसकी कमर को पकड़ कर अपनी बाँहों में भींच ले. उसने अपने हाथ आगे बढ़ाए भी , लेकिन इतने में वह वापस पीछे सरक गयी , उसे दीवार में बने खाने से जो चीज़ चाहिए थी वह मिल गयी थी ..गणेश अपनी नाकामी

पर दोबारा मायूस हो गया . गणेश ने अंदर जाती मधुरानी को देखा. बड़े गले के ब्लाऊज में उसकी सुराहीदार गोरी गर्दन और बाहें देख कर वह मचल उठा . अंदर जाते समय अचानक ही वह रुकी और गणेश की ओर नज़रें उठा कर देखा. गणेश उसे निहारते हुए पकड़ा गया था .वह अंदर चली गयी. गणेश खाट से उठ बैठा. अब तो अंदर जाना ही पड़ेगा .. इससे अच्छा मौका अब हाथ न आएगा... उसने उस कमरे की तरफ कदम बढ़ाए. उसकी साँसे तेज चलने लगी थी . अब उसमें आत्मविश्वास झलक रहा था . वह उस कमरे के दरवाज़े की चौखट पर खड़ा हो गया और उसने मधुरानी को आईने में अपने बाल संवारते हुए देखा. वह उसकी ओर पीठ कर खड़ी थी . वह अपने बाल बनाने में मग्न थी उसने सोचा. वह शायद यूँ ही बेख़बर रहने का नाटक कर रही है.... उसने उसकी तरफ कदम बढ़ाए. उसकी धड़कने तेज हो गयीं, कनपटी भी गर्म हो गयी. वह दबे पाँव उसके पीछे पंहुचा ओर एक झटके से उसने उसका हाथ पकड़ लिया। उसके मन में लड्डू फुट रहे थे, आख़िर वह जो करना चाह रहा था वह हो ही गया. अब उसे मधुरानी क्या करती है यह देखना था . मधुरानी अपना हाथ छुड़ाते हुए दस कदम पीछे हट गयी. उसे ऐसी उम्मीद न थी . वह मधुरानी की आँखों में झाँक कर उसके मन की बात जानना चाहता था लेकिन नाकामी हाथ लगी . कहीं वह नाराज़ तो नहीं हो गयी?.... उसने सोचा. उसने हिम्मत जुटा कर दुबारा उसका हाथ पकड़ने की चेष्टा की. "बा..बाबूजी .. क्या हुई गवा है आपको?" मधुरानी कमरे के बाहर तेज कदमों से चलते हुए निकल गयी. एक पल तो उसे समझ ही नही आया कि हुआ क्या? लेकिन उसे अहसास हो गया. मतलब... उसने मुझे ठुकरा दिया.... उसका सारा शरीर ढीला पड़ गया था . जाते जाते मधुरानी ने मुड़ कर उस पर एक नज़र डाली उसमें उसकी जलती निगाहों का सामना कर सकने का साहस न था. आख़िर औरत के मन की बात तो स्वयं शिव जी भी न समझ सके. वह मायूस हो उठा और उसका मन खुद के प्रति गुस्से से भर गया . कमरे से निकलते हुए उसने दरवाज़ा ज़ोर से खोला और तेज कदमों से चलते हुए बाहर आ गया. उसने पीछे मुड़ कर मधुरानी को देखना तक मुनासिब न समझा . वह बाहर खुले में आ गया . गर्मी और उमस के दिन होने के बावजूद उसके शरीर को छू कर एक ठंडी हवा का झोंका निकल गया . उसको थोड़ा चैन आया. चलो अच्छा ही हुआ कम से कम फ़ैसला तो हो गया, नहीं तो जाने कितने दिन में इस बात को लेकर बेचैन रहता... चलते चलते वह अपने कमरे के बाहर ठिठक कर रुक गया. अब कहाँ जाऊं .. कमरे में वही अकेलापन .. शादी की भीड़ भाड़ में जाने को उसका जी न किया. फिर न जाने कितनी देर, इन सबसे दूर वह न जाने कितनी देर वह सिर्फ चलता रहा . पूरा गाँव गुँगे की शादी में शामिल होने गया था इसलिए रास्तों पर कोई चहल पहल न थी. फिर अचानक ही एक घर के सामने किसी आवाज़ को सुन कर वह ठिठक गया. अंदर से कोई चीख रहा था . उसे अहसास हुआ यह गूंगी का घर था . घर पर बाहर से ताला लगा था . इस घर के लोग जाने कहाँ चले गये .. गुँगे की शादी में तो यक़ीनन नहीं गये होंगे फिर कहाँ गये हैं .. शायद खेतों में गये होंगें .... घर के अंदर से किसी के रोने चिल्लाने की आवाज़ अब भी आ रही थी. ऐसी आवाज़ सुन कर पत्थर दिल आदमी भी पसीज जाए . उस गूंगी का दिल टूट गया था और वह कलेजा फाड़ कर रो रही थी. उसका दिल भी इसी तरह रो रहा था फ़र्क सिर्फ़ इतना था कि उसकी आवाज़ किसी को सुनाई नहीं दे रही थी .

उस वाकये को हुए तकरीबन हफ़्ता भर हो गया . गणेश अब मधुरानी को जहाँ तक हो सका टालने लग गया था कभी भूले से उनका सामना हो जाता तो गणेश में नज़रें उठा कर उसे देखने की हिम्मत भी न थी. एक बार सामना होने पर उसने उसको देखा तो उसे अहसास हुआ मानों वह गुस्से में लाल पीली हो उसे घूर रही है . गणेश बेचैन हो उठा कहीं वह मुझसे उस दिन वाली बात को ले कर नाराज़ तो नहीं ? या फिर इसलिए नाराज़ है कि मैं उसको टालता हूँ ? ... कुछ पता नहीं चलता.... ग़लती मेरी ही थी मैं भावनावश हो कर उससे यह सब कर बैठा... लेकिन वह भी तो इशारे पर इशारे दिए जा रही थी... जो भी हो मुझे उससे माफी माँगनी चाहिए ... परंतु कैसे ? कहीं उसे कोई ग़लतफहमी न हो जाए और कहीं मेरी लोगों के सामने बेइज़्ज़ती न कर दे.... उससे माफी शायद अकेले में ही माँगना उचित होगा " आज सुबह गणेश की देर से आँखें खुलीं उसने घड़ी में देखा यह क्या .... सुबह के दस बज रहे हैं उसे कुछ शोर सुनाई दिया कहीं यह गूँगा - गूँगी वाला कांड तो नही हो गया तुरंत वह कपड़े बदल कर बाहर जाने को तैयार हुआ उसे लगा कि वह थोड़ा रुक कर मुँह हाथ धो कर कुल्ला कर बाहर जाए लेकिन बाहर का शोर बढ़ता ही जा रहा था " वापस आ कर ही मुँह हाथ धोता हूँ" सोच कर वह निकला " बात कुछ ज़्यादा ही गंभीर है" वह ताला लगाए बगैर ही बाहर चला आया.

वह शोर की दिशा में चलता हुआ आगे बढ़ा उसने देखा आगे किसी के घर के बाहर लोगों की भीड़ लगी है . उसने वहीं से आते एक गाँववाले को रोक कर पूछा "भाई साहब .. बात क्या है" " का मालूम बबुआ .. सायद उ भीखू का तबीयत कुछ ठीक ना है" गणेश भीड़ के बीच से रास्ता बनाते हुए आगे पंहुचा और देखा बाहर चबूतरे पर बैठा भीखू जोरों जोरों से पागलों की भाँति चिल्ला रहा था . उसकी दोनो बाहें उसके लंबे तगड़े भाइयों ने पकड़ी हुईं थी लेकिन वह उनसे भी संभाला नहीं जा रहा था . गणेश ने वहीं खड़े एक गाँव वाले से पूछा "क्या हुआ इसे" "मका का मालूम बाबू...आज सुबह से ई ससुरा पागलों की तरह सोर मचाया रहा ... पानी देखते ही चीखने लगता है" गाँव वाले ने जवाब दिया. "का कहा पानी देख कर चिल्लाए है ...? हाँ फिर तो किसी पागल कुकुर ने इसको काटा रहा " दूसरा बंदा बोला. तभी वहाँ डॉक्टर साहब का आना हुआ डाक्टर साहब का बॅग हाथ में ले कर चलता हुआ बंदा कहने लगा " परे हटो सब लोग .. डाक्टर साहब आए हैं" डाक्टर साहब ने वहाँ आकर भीखू के भाइयों और घरवालों से पूछ ताछ की . भीखू की लुगाई और पाँच साल की बच्ची बहुत डर गये थे . उन्होने भीखू को इस हालत में पहले कभी न देखा था . भीखू की औरत साड़ी के पल्लू से उसका मुँह पोछ रही थी और बेटी बाबू जी के नाम की रट लगाए बिलख रही थी. तभी सरपंच जी वहाँ आए और तमाशबीन लोगों की भीड़ उनके एक शब्द सुनकर छट गयी .. इतनी देर से वह लोग भीड़ हटाने की कोशिश कर रहे थे, न कर पाए और सरपंच जी की सुनकर सब वहाँ से जाने लगे. सरपंच जी की गाँव में बहुत इज़्ज़त थी. अब वहाँ पाटिल साहब भी आए उसकी हालत देख कर उन्होने उसे अस्पताल में भर्ती कराने की बात कही . डॉक्टर ने सरपंच पाटिल ओर भीखू के घरवालों को एक तरफ बुलाया . "इसको पागल कुत्ते ने काटा है" डॉक्टर ने गंभीर आवाज़ में कहा. सरपंच ने भीखू के भाई से पूछा "कब काटा इसको पागल कुकुर ने " "किसका कुत्ता था" पाटिल जी ने कड़क कर पूछा मानों वह कुत्ते के मालिक को सूली पर चढ़ा देंगे . "न..ना.. काटा नही बाबूजी एक दिन चार पाँच कुकुर आपस में यूँ ही लड़

रहे थे और भैया इहा खाट बिछाए सोए रहे ...ओ कुकुर इसका उपर से कूद कर जाए रहे तभी किसी कुकुर ने काटा होगा " उसके भाई ने कहा. "फिर अब का करें?" " तब ही इंजेक्सन लिए रहते तो आज ए मुँह देखना ना पड़ता" एक बुज़ुर्ग गाँव वाला बोला . " हम कहे रहे इसको पर ई भैया राज़ी न हुआ " भाई ने जवाब दिया. सब लोग बगले झाँकने लगे. " अरे तो अब लगाए द्यो इंजेक्सन ई को , का हर्ज है इसमें ? " किसी ने कहा . कुछ पल यूँ ही चुप्पी में बीत गये . डॉक्टर साहब मुट्ठी भींच कर बोले "कोई फायदा नहीं" "का कह रहे हो डाक्टर साहब? ... हम ..हम भैया को बड़े हस्पताल ले जावेंगे सहर में" उसका भाई घबरा कर बोला . डॉक्टर ने उसको दिलासा देने के लिए कंधे पर हाथ रखते हुए दोहराया " कोई फायदा नहीं .. अब इस सब का वक्त बीत चुका है" " अरे डॉक्टर साहब आप भी कमाल करत हो ? अरे सहर में जाने को कितना ऐसा कितना वखत लगे है ?" पाटिल साहब बीच में ही बोले " अरे ओ किसना ज़रा जा तो हमरी जीप ले आ" " इससे कुछ हासिल नहीं होगा" निराश डॉक्टर साहब बोले. सरपंच जी डॉक्टर साहब की बात समझ गये और भीखू के भाई को ढाढ़स बाँधते हुए बोले "अब तू ही घर का बड़ा है... हिम्मत दिखा " भीखू का भाई रुआंसा हो गया वह दौड़ते हुए घर में घुस गया . गणेश को भीखू के बीवी बच्चों को देख कर बड़ा खराब लग रहा था . इधर डॉक्टर साहब ने अपना ब्रीफ़केस एक तरफ रख दिया था और वे भीखू की नब्ज़ टटोल रहे थे , सरपंच जी ने मौके की नज़ाकत को देखते हुए एक औरत को भीखू की बीवी और बच्ची को वहाँ से ले जाने का हुक्म सुनाया . इतने में ही भीखू का भाई आया और डॉक्टर से पूछा "कितना वखत है? " डॉक्टर ने जवाब दिया "ज़्यादा नहीं बस कुछ देर का मेहमान हैं" यह सुन कर उसका भाई एक तरफ दौड़ने लगा. पीछे से सरपंच जी आवाज़ लगाते रहे " अरे कहाँ जाईत हो?" "जल्दी ..आता हूँ" दौड़ते हुए उसने कहा और नज़रों से ओझल हो गया . इतने में कई गाँव वाले भीखू से आख़िरी बार मिलने जमा हो गये. बड़ी मुश्किल से सरपंच जी ने उनको समझा बुझा कर वापस भेजा . भीखू की अम्मा मुँह में पल्लू ठूंस कर रो रही थी, किसी तरह उसने अपनी पोती को वहाँ से हटाया ... लेकिन भीखू की बीवी किसी कीमत पर वहाँ से जाने को तैयार न थी, वह दहाड़ें मार मार कर रो रही थी. शायद उसे भी यह अहसास हो गया था कि उसकी माँग उजड़ने वाली है. गणेश मुड़ कर वहाँ खड़े लोगों से बातें कर रहा था . कुछ पल बीते तभी सीना फाड़ देने वाली चीख सुनाई दी . घर की औरतों ने दहाड़ें मार कर रोना शुरू किया . भीखू की अम्मा ने भीखू की बीवी का सिंदूर पोंछ दिया . गणेश ने भीखू की ओर देखा उसका शरीर उसकी बीवी की गोद में था, और उसकी गर्दन एक तरफ लुढ़क गयी थी . भीखू के प्राण पखेरू उड़ चुके थे. अब सब लोग एक दूसरे को धकियाते रोते चिल्लाते अंदर घुस गये . अन्य गाँव वाले अपने प्यारे भीखू का अंतिम दर्शन कर सकें यह सोच कर डॉक्टर साहब , सरपंच जी , पाटिल साहब और गणेश वहाँ से जाने लगे. इतने में उन्हें भीखू का भाई जल्दी जल्दी अंदर आता हुवा दिखाई दिया. अपने साथ वह एक ओझा को ले आया था. शायद उसने अपने भाई को बचानेकी एक आखरी उम्मीद उस ओझा में ढुँढनेकी कोशिश की थी.

भारी कदमों से गणेश अपने कमरे की ओर चलने लगा . रास्ते में उसने देखा मधुरानी भीखू के घर से लौट कर अभी अभी अंदर गयी है , वह भी उसके पीछे पीछे जाने लगा . यही मौका है उससे माफी माँगने का.... उसने सोचा और उसके

घर का दरवाज़ा खटखटाया . उसने चारों ओर देखा लोग बाग भीखू के घर के सामने जमे थे .इतने में मधुरानी की मीठी आवाज़ अंदर से सुनाई दी. " कौन है" "मैं हूँ" गणेश ने जवाब दिया " मैं कौन.?.. कछु नाम वाम न दिया रहा तोरे अम्मा बापू ने ?" मधुरानी दरवाज़े के करीब आती हुई बोली. यह क्या मेरी आवाज़ तो यह पहचानती है... गणेश सन्न रह गया . इतने में किवाड़ खोलती हुई मधुरानी दरवाज़ें पर खड़े गणेश को देखा और बोली " अरे आप आए रहे बाबूजी आइए आइए ... आज कई दिन बाद इधर का रास्ता भूल गए रहे" मधुरानी गणेश को यूँ दरवाज़े पर खड़ा देख कर हड़बड़ा उठी थी या शायद वह गणेश को ऐसा महसूस करवा रही थी ? गणेश भी सकपका कर एक दो मिनट यह सोच कर चौखट पर खड़ा रहा कि अंदर जाए अथवा नहीं . "का हुआ बाबू जी?" मधुरानी ने जानना चाहा . " न... नहीं... एक बात कहनी थी त.. त.. तुमसे ... म ... मेरा मतलब आ.. आपसे " गणेश हकलाते हुए किसी तरह बोला उसे समज नहीं आ रहा था कि उसे कैसे संबोधित करे. " बोलो बाबू जी का बात होई?" मधुरानीने उसकी आँखों में आँखें डाल कर पूछा. "उ..उस.. द..दिन" मधुरानी अब भी उसकी ओर ताक रही थी . " उस दिन मैने आपका हाथ पकड़ा था.. उसकी माफी चाहता हूँ " गणेश थूक गटक कर एक सांस में बोल पड़ा . मधुरानी जो इतने वक्त उसकी ओर टकटकी लगाए थी यह सुन कर उसने शर्म से अपनी गर्दन झुकाई "ई बात में माफी काहे माँगें हो बाबूजी , ई कौनो बात हुई? " मधुरानी ने धारधर आवाज़ में पूछा फिर मीठी आवाज़ में कहा "हमरा मतलब रहा ... कौनो बात नाही" . पहली बार में गणेश को उसकी आवाज़ गुस्साई जान पड़ी और दूसरी बार में विनम्रता . "भीतर आओ बाबू जी...बैठो ... आपको चाय पिल्वाती हूँ" मधुरानी ने कहा. "हैं?? न.. नहीं म.. मेरा मतलब फ.. फिर कभी" गणेश हड़बड़ा कर बोला और मुड़ कर तेज कदमों से चलने लगा , उसने पीछे मुड़ कर दरवाज़े पर खड़ी मधुरानी की ओर देखा. वह लजा कर मुस्कुराई फिर भीतर भाग गयी . गणेश वापिस सोच में डूब गया . अब इसका क्या मतलब लगाऊं ?.... शायद पिछली बार मैने उसका हाथ पकड़ने में ज़रा ज़्यादा ही जल्दबाज़ी की.. शायद इस सब के लिए थोड़ा रुकना बेहतर होता.... उसके दिल की धड़कन तेज हो रही थी. " मैं तो यह सोच कर आया था कि आज किस्सा ही ख़त्म कर दूँगा , लेकिन शायद इसके कोई आसार नज़र नहीं आते " गणेश के होंठों पर मुस्कान बिखर गयी और प्रफुल्लित मन से उसने अपने कमरे की ओर कदम बढ़ाए. गणेश और मधुरानी का मिलना जुलना दोबारा शुरू हो गया था , गणेश का उसकी दुकान पर जाना बराबर बना रहा . उसकी दुकान पर जाने का वह कोई मौका न छोड़ता था . वहाँ समान खरीद कर पैसे देते वक्त जब उसका हाथ मधुरानी के हाथों से छूता तो मानों उसके पूरे बदन में करेंट दौड़ जाता .. उसके हाथों की छुअन में मानों कोई जादू सा था , पल भर में सारी थकान दूर हो जाती, और फिर वह नये जोश में अपने काम में लग जाता . उसे याद आया उसने यह शायद किसी किताब में पढ़ा था. "माशूका आशिक की बाहों में आने से पहले हज़ार नखरा करती है .... लेकिन आख़िरकार जब आती है तो इश्क की गर्मी में वह पिघल जाती है"

रोज़ाना की तरह इस रोज़ भी गणेश शिवालय गया लेकिन आज मंदिर सुनसान देख उसे हैरत हुई. हमेशा की तरह आज वहाँ जुआरियों की टोली नज़र न आई. शायद आज गाँव में पुलिस आई होगी.... उसने सोचा . गाँव में जब भी पुलिस का आना होता तो जुआरी कहीं छुप जाते थे. भूले भटके यदि कोई पुलिस के हाथ लगता तो या तो उसको थाने ले जाते या घूस ले कर छोड़ते. नागपंचमी के दिन तो मानों पुलिसवालों के हाथों में सोने की बटेर लग जाती. इस दिन

गाँववाले जुआ खेलते ही खेलते थे, लिहाज़ा पुलिस वालों की भी ख़ासी कमाई होती थी. गणेश को हमेशा अचरज होता था क़ि गाँव में इतनी ग़रीबी होने के बावजूद जुए में लगाने के लिए इन लोगों के पास पैसा आख़िर आता कहाँ से है. उसने सुन रखा था कि गाँव में मटके के अड्डे भी चला करते. हालाँकि गणेश इन जगहों पर कभी न जाता था. आज मंदिर भी सूना था . दोपहर में मधुरानी की दुकान भी बंद रहा करती, क्योंकि मधुरानी उस वक्त घर के बाकी काम काज किया करती। फिर कहाँ वक्त काटा जाए..... इस सोच में गणेश डूबा था उसे याद आया, एक बार मधुरानी ने उसे बताया था , दुपहरी के वक्त गाँव की महिलाएँ नाले पर कपड़े धोने जाया करतीं . यों भी नाला शिवालय के इतने पास था कि बरसात के दिनों में बाढ़ आने पर पानी शिवालय तक पहुच जया करता . नाले पर ही चला चलता हूँ ,.... लेकिन वहाँ तो औरते ही औरते होंगी .. अगर कहीं उनको शक हो गया कि मैं मधुरानी से मिलने आया हूँ तो बेकार ही बात पूरे गाँव में फैला देंगी... कुछ रास्ता निकलना चाहिए जिससे साँप भी मर जाए और लाठी भी ना टूटे.... उसने सोचा. वहा ... शौच का बहाना कर वहाँ जाता हूँ किसी को कोई शक न होगा.... वह वापस आफ़िस आया, जो वहाँ से नज़दीक ही था. वहाँ पांडु चपरासी को उसने लोटा भर कर लाने को कहा. पांडु ने भरा लोटा उसके हाथ में पकड़ाते हुए कहा. " बाबू जी शौच के लिए नाले पर जात हों उ हाँ लोटा की का ज़रूरत ?" गणेश ने सोचा अब इसका क्या जवाब दूं.... चुपचाप वह नाले की दिशा में तेज कदमों से चल पड़ा . पुल की ओर जाते हुए उसके रास्ते कीचड़ से सनी हुई एक भैंस आड़े आ गयी , उससे सुरक्षित अंतर रख कर वह वहाँ से गुज़रने लगा . उसे वह पुरानी मजेदार घटना याद आ गयी . एक बार सुबह उठने में उसे ज़रा देरी हो गयी थी . जल्दी जल्दी नहा धो कर कड़क इस्त्री किए हुए साफ सुथरे कपड़े पहनकर आफ़िस जाने के लिए निकला था. यों भी उसे आफ़िस जाने के लिए देरी हो रही थी, लिहाज़ा वह तेज कदमों से अपने रास्ते चला जा रहा था , रास्ते में कीचड़ सनी भैंसो का झुंड उसके आड़े आया , चरवाहे उन्हें गाँव के बाहर चराने ले जा रहे थे , लेकिन भैंसो की संख्या इतनी अधिक थी कि उन्होने पूरा रास्ता अड़ा रखा था . गणेश उस झुंड के बीच किसी प्रकार रास्ता निकालते हुए आगे बढ़ रहा था कि एक पास से गुजरती हुई भैंस ने मक्खियाँ उड़ाने के लिए अपनी कीचड़ से सनी पूंछ हिलाई, जो सटाक से पूरे हिन्दुस्तान का नक्शा उसकी शर्ट पर छप गया . उस कीचड़ के धब्बे को अपनी शर्ट पर देख वह मानों आग बबूला हो उठा . गुस्से से कभी वह अपनी शर्ट को देखता तो कभी उस भैंस को . चरवाहे और दूसरे राहगीर उसकी हालत देख हंस हंस कर लोटपोट हुए जा रहे थे . गणेश यूँ ही वापस अपने कमरे की ओर चलता बना , नयी शर्ट पहनने के लिए.

गणेश चलते हुए पुल पर पहुँचा .. पुल की दाईं जगह काफ़ी चट्टानी थी और बीच में शायद गहरी खाई थी, इसलिए दाईं तरफ कपड़े धोतीं हुई महिलाएँ दिखाईं नहीं दे रहीं थी . दाईं ओर ही लड़कों का जत्था पानी में खेल रहा था . लड़के उँची चट्टान पर चढ़ कर पानी में छलाँग लगा रहे थे. लड़के अपने खेल में सुध बुध खो बैठे थे. पुल के बाईं तरफ नाला ज़रा उथला और सपाट था , उसी जगह कपड़े धोतीं हुईं महिलाओं का झुंड दिखाई पड़ा . उस उथले पानी में चट्टानों पर औरतें पटक पटक कर कपड़े धो रहीं थी . फट फटाक की आवाज़ पूरे वातावरण में गूँज रही थी , पास ही उन औरतों के बच्चे

पानी में खेल रहे थे . कभी कोई बच्चा पानी में पत्थर फेंकता तो छपाक की आवाज़ से पास खड़े बाकी बच्चों का मनोरंजन होता और वो ताली बजा कर खिलखिला कर हंसते . गणेश पुल से बाईं तरफ नीचे आ कर कर नाले के पानी में उतरा . उन औरतों के बीच उसकी नज़रें मधुरानी को खोज रहीं थी . उसे पीली साडी पहनी हुई मधुरानी दूसरे किनारे पर कपड़े धोती हुई दिखाई दी. उथले नाले में रास्ते बनाते हुई किसी प्रकार दोनों हाथों से अपनी पतलून और लोटा समहालते हुए वह दूसरे किनारे की ओर आगे बढ़ रहा था . पानी ज़रा गहरा होता जा रहा था, इसलिए बीच में एक जगह वह रुका , लोटा वहीं उसने एक सपाट पत्थर पर रखा और अपनी पतलून को उपर खोंस लिया ताकि वह पानी में भीगने से बची रहे . इसके बाद उसने सावधानी से पानी में कदम रखा . एक जगह नाले में यों ही गुज़रते हुए उसे छोटी छोटी मछलियों का झुंड नज़र आया जो उसके पानी में पैर रखते ही इधर उधर बिखर गया . पानी अब घुटनों तक पंहुच चुका था और उसकी लाख कोशिश के बावजूद उसकी पतलून के किनारे गीले हो गये थे . आख़िरकार वह दूसरे किनारे पर पंहुच ही गया . वहाँ पंहूचते ही उसने लोटा एक चट्टान पर रखा और अपनी खोंसी हुई पतलून ढीली छोड़ दी . उसने किनारे पर नज़रें घुमाई , पास ही मधुरानी कपड़े धोने में मग्न थी . गणेश लोटा ले कर उसकी ओर बढ़ने लगा . उसने वापस मधुरानी को देखा वह सुध बुध खो कर कपड़े धो रही थी. कपड़े धोते समय साड़ी न भीगे इसलिए उसने अपनी साड़ी घुटनों के उपर खोंस रखी थी जिससे उसकी गोरी गोरी टाँगों के दर्शन गणेश को हो रहे थे . गणेश को उसकी मांसल गोरी टाँगें लुभा रहीं थी . कपड़े घुमा कर चट्टान पर पटकते हुए उसके उरोजो की हलचल मानों गणेश को दीवाना बना रहीं थी वह उसको ताके जा रहा था . वह उसके एकदम करीब पंहुच गया था . उसकी पद्चाप सुनकर उसने पलट कर देखा , गणेश को देख कर वह लजा कर हंस पड़ी फिर सम्हल कर अपनी खोंसि हुई साड़ी को नीचे किया, फिर पल्लू संभाल कर बगल में रखी बाल्टी से कपड़े निकल कर उन्हें निचोड़ने लगी. बीच बीच में वह चोर आँखों से गणेश की ओर देख रही थी. गला साफ करते गणेश ने उससे कहा " अच्छा तो रोजाना कपड़े धोने तुम इस तरफ आती हो" " का करे बाबूजी इधर गाँव में आपके सहर के जैसे नल ना है , इसलिए हमका ई हाँ नाले में कपड़े धोने आना पड़ता है" उसने जवाब दिया , गणेश अब भी उसे निहार रहा था , अचानक उसे अहसास हुआ यहाँ और भी लोग हैं और वह उसकी ओर देख रहे हैं , वह किसी को बातें बनाने का मौका देना नहीं चाहता था, इसलिए लोटा उठा कर वह आगे बढ़ा. पीछे मुड़ कर उसने देखा , मधुरानी ने कपड़े वहीं सूखने के चट्टान पर बिछाए थे, फिर भी वह अपनी चोर निगाहों से उसी को देखे जा रही थी. गणेश ने सोचा: किस्मत भी न जाने क्या गुल खिलाती है , मधुरानी जैसी बला की खूबसूरत और हिम्मती औरत यहाँ इस पिछड़े गाँव में पैदा होती है , अगर कहीं यह शहर में होती तो शायद फर्श से अर्श पर जा बैठती.... चलते चलते वह दूर आ गया था उसने वापस मुड़ कर देखा , मधुरानी ने अपनी साडी वापस घुटनों के उपर खोंस ली थी और वह चट्टानों पर पटक कर कपड़े धो रही थी , अब माधुरानी उतनी साफ नज़र नहीं आ रही थी , वह भी उसकी नज़रों से दूर आ चुका था.

यूँ ही नाले के किनारे चलते - चलते गणेश बहुत दूर निकल आया था . उसने यों ही पीछे मुड़ कर देखा किनारे से मधुरानी और अन्य महिलाएँ ओझल हो चुकीं थी . मोड़ पर किनारे बड़े बड़े वृक्ष थे . गणेश ने एक जगह लोटे से पानी उडेल दिया. मैं भी कितना बेवकूफ हूँ बिना वजह यह बोझ ले कर चल रहा था ... उसने सोचा , नाले के कल कल बहते पानी के संगीत का आनंद लेते हुए, लहलहाते खेतों को देखते हुए गणेश अपनी राह आगे बढ़ा जा रहा था. बस अब बहुत हुआ .. चलते चलते काफ़ी आगे निकल आया .. अब वापिस चलना चाहिए ... यूँ भी काफ़ी समय बीत गया सो वैसे भी किसी को शक नहीं होगा ... गणेश लौटनेकी सोच ही रहा था कि उसे थोड़ी दूर नाले के बहते उथले पानी में दो लोग कुछ करते हुए दिखाई दिए. क्या कर रहे हैं यह लोग ? चल कर देखता हूँ .. यूँ भी आज लौट कर आफ़िस में करने लायक कुछ खास काम नही है ... वह लौटने का विचार छोड़ कर उन लोगों की दिशा में आगे बढ़ने लगा . थोड़ा करीब जा कर उसने उन लोगों में से एक को पहचान लिया - यह तो महदू है...रोज क्रिकेट खेलने आम के बगीचे में आता है , इस दूसरे लड़के की शक्ल भी जानी पहचानी लग रही है... मधुरानी की दुकान के आस पास यह घूमता रहता है ... नीचे झुक कर वह लड़के रेत में कुछ कर रहे थे. आख़िर क्या कर रहे हैं यह लड़के? ... गणेश की जिज्ञासा जाग उठी , गणेश उनके करीब जाने लगा . गणेश को पास आते देख महदु ने पूछा, " बाबू जी रास्ता भूल गये रहे का?" फिर गणेश के हाथ में लोटा देख कर वह बोला " शौच के लिए ..? हैं? इतना दूर ?" गणेश ने उसके सवाल को नज़रअंदाज़ कर उनके साथ नीचे बालू में बैठते हुए पूछा, " तुम दोनो लड़के क्या कर रहे हो?" "मछली पकड़े हैं साहब जी और का करेंगे?" उसने जवाब दिया . "मछलियाँ? वह कैसे?" गणेश ने देखा बालू में पानी के बहाव को एक तरफ मोड़ा गया था. " ई देखो साहब जी ... ईहाँ हमने ई गड्ढे मा पानी का बहाव मोड़ा रहा .. ए नाली के ज़रिए गड्ढे में पानी आवत है.... उ पानी जब ई गड्ढे मा बह कर आवे है तो उ बहाव के संग मछली भी ई गड्ढे में आवे है ... जब कोई बड़ा मछली का झुंड आवे रहा तो हम ए नाली का मुहाना बंद कर देवे हैं और ई गड्ढे में मछली फँस जात है" गणेश ने देखा वाकई उस नाली के बहाव के साथ साथ कई मछलियाँ बह कर गड्ढे में आ गयीं थी और वहीं फँस गयीं थी. "समझा" गणेश बोला "लेकिन तुम इन मछलियों को पकडोगे कैसे ?" " बाबू जी उ नाली का मुँह जब बंद किए रहे तो ई गड्ढे का पानी , ई बालू सोख लेगी और बिन पानी के मछलियाँ तड़प तड़प कर मार जावेगी" " क्या बात है... बढ़िया तरकीब निकाली है" गणेश चहक कर बोला . गणेश वहीं एक चट्टान पर बैठ कर उनको मछलियाँ पकड़ते हुए देखने लगा. कुछ देर बाद उसकी नज़र दूसरे किनारे पर खड़े दो लोगों पर गयी जो पानी में उतार कुछ निकाल रहे थे . "वह लोग क्या कर रहे हैं? " गणेश ने पूछा " उ लोग बाबू जी ? उ लोग पटुआ निकाले रहे" महदू ने बहाव रोकते हुए कहा. फिर गणेश के साथ आ कर खड़ा हो गया , उधर दूसरा लड़का वहीं गड्ढे के पास खड़ा हो गया. "पटुआ??" गणेश ने पूछा "पटुआ ऐसे निकालते हैं?" "फिर.. आपको का लगा?" महदू ने पूछा. गणेश चलकर उन लोगों के करीब पहुँचा उसने देखा वह लोग नाले के एक जगह शांत पानी से कुछ टहनियाँ निकाल रहे थे. "कौन सी टहनियाँ है यह और यह इन्होने पानी में क्यों डुबो कर रखी है?" "साहब जी ई पटुए की टहनियाँ है आपके यहाँ इसको सायद पटसन बोले होंगे" उन्होने देखा वह लोग पानी में भीगी टहनियों को निकाल कर उस की छालों को अलग कर रहे थे . उन्हीं छालों से पटुआ बनता था. "इन टहनियों की छालें तो बड़ी आसानी से वह लोग निकाल रहे हैं" " उ लोग ई टहनियों को हफ़्ता भर पानी में डुबाए रहे " " अच्छा तो यह

लोग इन टहनियों को मुलायम करने के लिए पानी में रखते हैं" "पटुआ निकालने का ए ही तरीका है बाबू जी" महदू ने जवाब दिया . उन्होने देखा उन छालों को पानी से साफ करने के बाद कुछ रेशे निकाले गये थे. उनको उन्होने वहीं धूप में सूखने डाला था. गणेश बड़े गौर से उनको पटुआ निकालते हुए देख रहा था. उसे याद आया बचपन में उसने स्कूली किताब में पढ़ा था कि बंगाल और बिहार में पटुए की खेती अधिक होती है , लेकिन उसे मालूम न था कि पटुए की खेती इस प्रकार होती है . गणेश अपने विचारों में इतना खो गया था कि उसे अहसास ही न हुआ कि वह किसलिए आया है , फिर अचानक उसे होश आया: अरे बाप रे.. बड़ी देर हो गयी मुझे ...पता ही नहीं चला वक्त कैसे गुजर गया ...शायद मधुरानी अब तक वहीं हो ... वह लंबे लंबे डग भरता वापस चल पड़ा . चलते चलते वह उस जगह के करीब आ पंहुचा जहाँ मधुरानी को उसने कपड़े धोते देखा था किंतु मधुरानी अब वहाँ न थी. धत्त तेरे की ... शायद मुझे आने में ज़रा ज़्यादा ही देर हो गयी माधुरानी तो कब की लौट गयी ... उसने सोचा ... खैर...अभी नहीं तो थोड़े समय बाद दुकान पर आएगी .. लेकिन इस रूप में नहीं ... वह चलते हुए उस चट्टान के पास आया जहाँ मधुरानी कपड़े धो रही थी. उसने देखा उस चट्टान के आस पास बालू में मधुरानी के पदचिन्ह उभर आए थे उसने गौर किया बालू में किसी ने कोई चित्र बना रखा था. शायद यह चित्र मधुरानी ने ही बनाया होगा ... उसने देखा चित्र में एक स्त्री गालों पर हाथ रख दूर किसी की बाट जोह रही थी . उसने मन ही मन कहा ... ओह ... तो मधुरानी यहाँ मेरी राह देख रही थी ...

गणेश सुबह जब मधुरानी की दुकान पर आया तो उसे मधुरानी कहीं दिखाई न दी . गल्ले पर पड़ोस का लड़का विलास बैठा दिखाई दिया . मधुरानी अपने दुकान का हिसाब-किताब उसी से कराती. गणेश ने सोचा उसी से पूछ लिया जाए की आख़िर माधुरानी कहाँ गयी. लेकिन वह चाह कर भी कुछ पूछ न सका. पता नहीं वह क्या सोचे .. इतनी सुबह सुबह उससे पूछना ठीक न रहेगा .. वह शायद यहीं आस पास होगी आ जाएगी ... उसने सोचा और वहाँ से निकल गया. दोपहर में दुकान बंद होने से पहले वह वहाँ दोबारा गया. तो उसने देखा मधुरानी दुकान पर अब भी मौजूद न थी. और वहाँ विलास ही बैठा हुआ था . गणेश ने उसको कभी इतनी देर दुकान में यूँ बैठे न देखा था .. यूँ तो गणेश दुकान को अपने कमरे की खिड़की से भी देख सकता था लेकिन बिना वहाँ जाए उसको चैन कहाँ? वह कहीं गाँव तो नहीं चली गयी? लेकिन यूँ इस तरह बिना बताए ? ... गणेश ने दोबारा सोचा की वह विलास से उसके बारे में पूछे. लेकिन उसने अपनी इच्छा को दबा दिया . बाद में जब वह शाम को लौटा तो वहाँ मधुरानी को न देख उससे रहा न गया- " क्यों भाई आज तुम दुकान पर कैसे बैठे हो?" उसने विलास से पूछा , लेकिन वह सीधे थोड़े ही न बताने वाला था "का काम है बाबूजी?" " नहीं भाई यूँ ही पूछ लिया " चेहरे पर कोई शिकन न लाते हुए उसने कहा लेकिन वह भी बड़ा चालाक था. " सुबह से देखूं हूँ साहब जी ...आप दुकान के चक्कर लगवे जा रहे है" उसने गणेश की ओर घूरते हुए पूछा. अब गणेश ने सीधे सीधे पूछ ही लिया " हां भाई थोड़ा काम ही था .... कहाँ गयी वह?" हार कर उसे भी सीधा जवाब देना ही पड़ा " वह खेत गयी है" "खेत में ...? खेत में क्या फसल काटने गयी है?" गणेश ने जान बूझ कर मजाकिया लहज़े में कहा और हंस पड़ा. " ना ना साहबज़ी उसकी फसल का गाहना है आज के रोज... उसी काम के लिए गयी रही है वह " " गाहना? ... पर वह सब काम तो संभाजी देखते हैं.." " अब हमको ई बात की खबर कैसे होई ? हम अपना काम देखे या ई फालतू चीज़ें देखे?" लड़के ने तड से कह दिया और दुकान पर आए ग्राहक से बात करने लगा . गणेश ने उसके और मुँह लगना

ठीक न समझा और सोचने लगा ... अब ये फसल गाहने क्यों गयी होगी ? अब तक उसे आ जाना चाहिए ... चाहे जो हो उस की वजह से तो इस उबाऊ गाँव की नीरस नौकरी में टिका हुआ हूँ वरना कभी का चला जाता... देर रात उसके बारे में सोचते हुए जाने कब वह गहरी नींद में डूब गया उसे मालूम ही न चला . अचानक वह बिस्तर पर उठ बैठा , मधुरानी का ख्याल उसके मन में आया: क्या वह लौटी होगी ? चल कर देखता हूँ ... गणेश बिस्तर से उठ कर खिड़की के पास आया, वहाँ से झाँकते हुए उसने देखा माधुरानी के घर के बगल में एक कमरे के सामने सड़क पर बैलगाड़ी खड़ी थी . माधुरानी उस बगल के कमरे का उपयोग बतौर गोदाम करती थी , शायद उसके खेत से माल आ गया था और वह बोरियाँ गोदाम में रखवा रही थी. यूँ भी अब नींद आने से रही .. चल कर मधुरानी से बतिया लेता हूँ... तब ही चैन आएगा ... यह सोच कर वह उठा और बदन पर शर्ट पँट पहन लिया. गर्मी के दिन थे लिहाज़ा गणेश बनियान और कच्छा पहन कर सोता था . तैयार हो कर वह कमरे से बाहर आया और दरवाज़े पर सांकल चढ़ा कर वह माधुरानी के गोदाम की ओर चल पड़ा.

मधुरानी के गोदाम की तरफ जाते हुए उसने बैलगाड़ी की ओर एक नज़र देखा . बैल पास ही एक खूँटे से बँधे बैठ कर थके - हारे चारा चर रहे थे. गणेश को बैलगाड़ी में कुछ अनाज फैला हुआ दिखाई दिया. उसने पास जा कर देखा तो बैल गाड़ी खाली थी . शायद बोरियाँ अभी अभी ही गोदाम में रखी गयीं थी.... शायद बोरियाँ रखवाते समय हुई आवाज़ की वजह से ही मेरी नींद टूटी .... गणेश गोदाम के दरवाज़े की ओर बढ़ चला. दरवाज़े के पास जाते ही वह ठिठका भीतर संभाजी और मधुरानी बातें कर रहे थे . बाहर अंधेरे के कारण उनको दरवाज़े पर खड़ा गणेश दिखाई न दिया . गणेश ने और करीब जा कर उनकी बातें सुनने की कोशिश की. उसने देखा मधुरानी ने संभाजी के दोनो हाथ हाथों में लिए थे और बोली, "संभा जी एक आप ही हैं जो खुशी खुशी हमारे वास्ते इतना काम करे हैं ...वरना हम पर तो अपनी खेती गिरवीं रखने और भूखे प्यासे जीने की नौबत आ जाती" यहाँ गणेश के मानों पाँवो तले ज़मीन खिसक गयी थी , उसका दिमाग़ मानों फट रहा था. ऐसा लग रहा था मानों कोई अपनी बंदूक से तमाम गोलियाँ उसके सिर में बेरहमी दागे जा रहा था . मौके का लाभ उठा कर संभाजी ने उसको बाँहों में भरने की कोशिश की . "अरे हमने ताला जाने कहाँ रख दिया रहा ?" कहते हुए बड़ी सफाई से उसने खुद को उसकी बाँहों की पकड़ से छुड़ाया . "कहीं ईहाँ बोरियों के बीच तो ताला चाभी दब न गयी?" उसने कहा और कमरे में इधर - उधर घूम कर ताला ढूँढने लगी , इतने में उसके पैरों के पास से एक चूहा भागा उसने झपट कर उस चूहे को बड़ी बेदर्दी से अपने पाँवों तले कुचल कर मार डाला. कैसी पत्थर दिल औरत है यह... गणेश ने यह देख कर सोचा ... न कोई जजबात न कोई रहम ... उसे ऐसे लगा मानों वह खुद वही बदनसीब चूहा हो. गणेश सोच रहा था: मैं भी कैसा बेवकूफ़ हूँ जो इसके प्रेमजाल में फँस गया... अगर मैं खुद आ कर यह सब न देखता तो इसको चूहा मारते देख इसकी बहादुरी का कायल हो जाता.... "अरे हम बड़े भुलक्कड़ हो गये हैं , ताला चाभी तो ई हाँ रखी रही" ऐसा कहते हुए उसने एक खाने से ताला चाभी उठाते हुए कहा " संभाजी ...का टेम हुआ रहा?" उसने संभाजी से समय पूछा. "ग्यारह...बारह बजे होएंगे" संभाजी ने जवाब दिया. " बड़ी देर होई गयी रही" कहते हुए वह दरवाज़े के करीब आने लगी. उसको करीब आता देख गणेश वहाँ से फ़ौरन हट कर आड़ में खड़ा हो गया. वह सोचने लगा: तो इस औरत का चाल-चलन ठीक नहीं है... यह तो हर किसी पर डोरे डालती है , यूँ तो कई पंछी इसने अपने जाल में फँसाए

होंगे... गणेश लंबे लंबे डग भरता हुआ अपने कमरे की तरफ गया , दरवाज़े पर चढ़ि सांकल खोल कर वह भीतर गया और अंधेरे में खिड़की के सामने खड़े हो बाहर झाँकने लगा . मधुरानी ताला ले कर गोदाम के बाहर दरवाज़े के पास खड़ी हुई थी , धीरे धीरे संभाजी उसके पीछे पीछे चलता हुआ गोदाम से बाहर आया, .मधुरानी ने उसको ताला पकड़ाया और ताला पकड़ाते वक्त उसने जान बूझ कर अपने हाथों से उसके हाथों को छुआ. शायद उसने उसकी हथेलियाँ भी दबाई हों. गणेश की आँखों पर पड़ा मधुरानी के प्यार का पर्दा परत दर परत दूर हो रहा था. कभी उसे खुद पर गुस्सा आता तो कभी मधुरानी पर. फिर संभाजी ने गोदाम के दरवाज़े पर ताला लगाया और चाभी मधुरानी को पकडाई . चाभी देते समय उसने भी जान बूझ कर उसके हाथों को छुआ . मधुरानी चाभी लेकर अपने घर की ओर गयी और दरवाज़े पर खड़ी हो कर मुडी और उसने संभाजी की ओर देख एक मीठी मुस्कान दी. फिर घर के भीतर गयी और संभाजी की ओर देखते हुए धीरे धीरे किवाड़ बंद किए . इधर संभाजी खोए खोए से उन बंद किवाडो की तरफ ताक रहा था. गणेश के दिमाग़ की नसें मानों फट सी रहीं थी. उसे मधुरानी के साथ बिताया एक एक लम्हा याद आ रहा था.. उसकी वह चंचल शोख अदाएं ... उसकी वह घायल कर देने वाली नशीली नज़र ... उसकी नाज़ुक मदहोश करने वाली मीठी छुअन ... याने की मधुरानी ने उसे भी अपने जाल में फाँस रखा था... संभाजी को फँसा कर वह उससे अपनी खेती - बाड़ी के काम करवाती थी..लेकिन मुझे फँसा कर उसे आख़िर क्या हासिल हुआ? ... फिर उसे अहसास हुआ कि मधुरानी की दुकान का सारा हिसाब-किताब वही किया करता और तालुके से दुकान के लिए माल भी वही लाया करता . वह यह काम इतने अपनेपन से करता कि उसे इसका कभी अहसास ही न हुआ कि मधुरानी उससे अपना काम निकलवा रही है. हालाँकि उसने अपनी खुशी से यह ज़िम्मेदारी ली थी. क्योंकि इसके पीछे उसका छुपा मकसद यह था की उसे मधुरानी के आस पास रहने का मौका मिले . मधुरानी ने खुद हो कर उसे कभी कोई काम करने के लिए नहीं कहा था ... लेकिन हाँ उसने वैसा माहौल बनाया था. कैसी धूर्त और चालाक औरत है यह... कोई भी चीज़ मधुरानी की शख्सियत को बयान नहीं कर सकती थी ... अब कहीं जा कर वह मधुरानी के चरित्र को समझ पा रहा था वह एक रानी थी , जैसे मधु मक्खियों में रानी मक्खी होती है वैसी ... और मैं उसके झुंड की एक मामूली सी कार्यकर्ता मक्खी, मैं बेवकूफ़ था जो उसके आस पास मंडराने के लिए उसके छोटे मोटे काम किया करता था ... उसने सोचा लेकिन मधु मक्खियों के इस झुंड में नर मक्खी कौन है? ... उसे यह सवाल अब सताने लगा ... ... पाटिल साहब , सरपंच जी ? संभाजी ?? या उसकी दुकान में काम करने वाला वह लड़का? या फिर कोई और???.. कोई भी ... हो सकता है . अब तक मैं इस ग़लतफहमी में जी रहा था की वह सिर्फ़ मेरी है ... उसकी इन हरकतों ने मेरे दिल को तोड़ दिया और टूटे शीशे के टुकड़ों की तरह मेरा दिल हज़ार टुकड़ों में टूट कर बिखर गया... मैं बेवकूफ़ था जो उसकी चिकनी चुपड़ी बातों में आ गया ... गणेश से यह बर्दाश्त नहीं हो रहा था की उसे मधुरानी ने बेवकूफ़ बनाया

रात भर मधुरानी के बारे में सोच सोच कर वह बैचैन रहा. उसे ऐसा लग रहा था मानों अभी के अभी वह उठ कर जाए और उसका गला घोंट कर उसे जान से मार डाले और उसका कच्चा चिट्ठा गाँव वालों के सामने खोल दे . उसने सोचा - कितने लोग ऐसे होंगे जिन्हें मधुरानी ने यूँ बेवकूफ़ बना कर अपने जाल में फँसाया होगा ?... लोगों की छोड़ो क्या मुझमे यह कहने की हिम्मत है कि मधुरानी ने मेरे जज्बादों के साथ खेल खेला ?... और यूँ भी कह कर क्या हासिल

होगा ?.... उल्टे जग हंसाई होगी सो अलग ... शायद चुप रहना ही बेहतर है .. क्या इसके अलावा मेरे पास कोई चारा नहीं?.... क्या मुझे उसके पास जा कर उसे समझाना चाहिए कि लोगों के जज्बादों के साथ यूँ खेल खेलना बंद करो ?... क्या वह मेरी बात वाकई सुनेगी ?.... मुझे नहीं लगता कि वह बदजात औरत कुछ समझेगी ..... जो औरत अपने पति के हत्यारे से हाथ मिला सकती है वह किसी भी हद तक गिर सकती है .. उसे समझने में मुझसे बड़ी भूल हो गयी..... रह रह कर गणेश के मन में यह ख्याल आते . अब उसका सिर दर्द से मानों फट रहा था लेकिन ख्याल तो फिर ख्याल थे जो आते थे, फिर जाने का नाम न लेते थे. वह बैचेनी में मानों पागल हो उठा. .दो दिन हो गये गणेश का कहीं मन नहीं लग रहा था. दो दिन से उसने खुद को कमरे में क़ैद कर रखा था . दो दिन से न उसने नहाया था , न दाढ़ी बनाई थी , वह पूरी तरह निराश हो गया था. उसका भ्रम जो टूट गया था, अब उसे समझ आया की इश्क़ में पागल होना क्या होता है. उसने कापी पेन लिया, क्योकि उसके दिमाग़ में शायरी पनप रही थी. उसने दो लाइन लिखीं और अपने दिल के ज़ज्बात काग़ज़ पर उतार दिए: वाह .. क्या शायरी है मानों किसी फिल्मी गाने के बोल हों.. हाँ यह तो किसी पुरानी फिल्म का गीत है.. वह दुबारा कुछ लिखने लगा. दो तीन लाइन लिख कर उसने काग़ज़ फाड़ कर फेंक दिया. उसकी शायरी के बोल किसी फिल्म के गीत से मेल खा रहे थे. सोचा था जी लेंगे तेरे प्यार के सहारे लेकिन अब हम प्यार में हारे तो जी लेंगे नफ़रत के ही सहारे मरेंगे नहीं जी लेंगे. छोड़ेंगे सब लेकिन जीना न छोड़ेंगे वह बड़ा जज्बाती हो कर कुछ लिखने की कोशिश कर रहा था. लेकिन लफ़्ज़ों के बजाए उसने अपने ज़ज्बात काग़ज़ पर उतार दिए थे . उसके दिलो दिमाग़ पर छाया बोझ कुछ हल्का हुआ . उसे इस बात की खुशी हुई की वह शायरी भी कर सकता है.... शायद इंसान यूँ ही दर्द में खुशी ढूँढना पसंद करता है. दो दिन शनिवार और इतवार थे. शायद इसलिए किसी को गणेश का ख्याल न रहा . लोगों को लगा कि दो दिन वह अपने घर गया होगा. लेकिन आज सोमवार को भी जब गणेश आफ़िस न आया तो सरपंच जी खुद उसका हाल जानने उसके घर पधारे. "क्यों गणेश बाबू .... जी ठीक ना है का ? आज ऑफिस में दिखे नहीं " " हाँ ज़रा लेटा हुआ था .. कुछ तबीयत ठीक नही है" "का ज्वर चढ़ आया है ?" कहते हुए सरपंच जी ने उस पर हाथ रखा और कहा. "ज्वर तो न है..... कई दिन होई गये हैं अपनों को साथ न पा कर शायद आप उदास हैं" सरपंच जी मुस्कुराते बोले " हुम्म...." गणेश ने कहा. "यह सरपंच जी ने अच्छा सुझाव दिया घर जाने का ... थोड़ी आबो हवा बदलेगी.. यूँ कितने दिन अकेले रहूँगा मैं?.... गणेश ने सोचा. फिर उस दिन कई लोग उससे आ कर मिले. लेकिन मधुरानी न आई. गणेश को अब भी उम्मीद थी की मधुरानी उससे मिलने ज़रूर आएगी. उसे याद आई.... वह शरारती नज़र , .... उसके हाथों की वह नर्म नर्म छुअन. नहीं अब यह सब नहीं होगा.... उसने अपने मन में आए ख्याल को झटक दिया. गणेश ने फ़ैसला कर लिया की वह अब मधुरानी से कोई रिश्ता नहीं रखेगा. वह उठा और अपने घर जाने के लिए बॅग भरने लगा. लेकिन उसे अहसास हुआ की घर जाने की बात को लेकर वह उतना उत्साहित न था. वह समझ न पा रहा था की ऐसा क्यों था. आख़िर इतने दिनों बाद वह बीवी से मिलने जा रहा था फिर भी उससे मिलने को लेकर वह उत्साहित न था. शायद इस मधुरानी के चक्कर में वह इतना उलझ चुका था की उसे बीवी बच्चों का ख्याल न रहा . लेकिन अब ऐसा कभी नहीं होगा अब इस मधुरानी का किस्सा ख़त्म .... बिल्कुल ही ख़त्म.... गणेश ने मन ही मन दोहराया.

पिछली दो रातों से गणेश की आँख न लग पाई थी सोमवार रात भी उसने उसी बेचैनी में काटी . अच्छा हुआ जो समय रहते मुझे माधुरानी का सच पता चल गया... लेकिन मैं अब भी न जाने क्यों बैचें हूँ? ... गणेश परेशन हो उठा . सुबह उठ कर गणेश नहाया धोया , दाढ़ी बनाई . बैग में से धुले हुए इस्त्री किए हुए कपड़े निकाल कर पहने और बैग बंद करी. सारजा बाई को उसने कल ही इत्तला कर दी थी . बैग ले कर वह घर से बाहर निकला और दरवाज़ा बंद कर ताला लगाया . ताला लगाते समय उसने यह सोच लिया की वह दुकान की ओर न देख कर सीधे बस स्टाप जाएगा. ताला चढ़ा कर वह मुड़ा और बोझिल कदमों से चलने लगा लेकिन उसके कदम बरबस ही उसे माधुरानी की दुकान की ओर ले जाने लगे . "कैसे हो गणेश बाबू.. दो रोज हो गये आपको देखे बगैर" मधुरानी उसे दुकान की ओर आते देख बोल उठी " कुछ जी ठीक ना था का?" " हाँ ज़रा तबीयत ठीक न थी..." "और ए बॅग उठाए तालुका जा रहे हो का?" गणेश को अब अहसास हुआ की इसने मज़ाक में ही सही उसकी बीवी के बारे में अब तक कभी कोई पूछताछ न की थी. " हाँ वहीं जा रहा था" " ए अच्छा हुआ .... हमरी दुकान का भी काफ़ी समान ख़त्म हुई गवा है और आप तालुका जा रहे हो" गणेश मौन खड़ा रहा. " ए लीस्ट लीजियो हमने विलास से बनवाई रही ..." उसने लिस्ट उसे थमाते हुए कहा , उसने लिस्ट अपनी जेब में रखी और चलने के लिए मुडा. " ओ गणेश बाबू रुकिये तो ज़रा समान कैसे लावेंगे ? ए बड़ी थैली रखिए " गणेश ने वह थैली लेने के लिए हाथ बढ़ाया . हाथों में थैली लेते हुए मधुरानी के नर्म मुलायम हाथों का स्पर्श पा कर वह रोमांचित हो उठा. यही वो नर्म अहसास ... यही वह नाज़ुक सी छुअन.... उसकी सारी उदासी मानों गायब से हो गयी थी एक नया जोश उसकी रगों में दौड़ रहा था. उसने दूसरा हाथ थैली पकड़ने के लिए आगे बढ़ाया और मौका पा कर उसे छू लिया , उसने मधुरानी की आँखों में आँखें डाल कर देखा: वही शोख नज़र... वही मीठी मुस्कान ... उसकी सारी उदासी दूर हो गयी. वह बड़े जोश में थैली उठाए बस स्टाप की ओर बढ़ा . गली में मुड़ते वक्त उसने मधुरानी की ओर देखा. वह अब भी उसकी ओर देख कर मुस्कुरा रही थी. वो गली में मूड गया और तेज कदमों से बस स्टाप को ओर चल पड़ा. उसे अब पूरी तरह अहसास हो गया था की वह भी अब मधुरानी की कार्यकर्ता मक्खियों के झुण्ड में में शामिल हो गया था.

गणेश बाबू जब अपने खयालोंसे होश मे आए .... उन्होने इर्द गिर्द देखा , हॉल लगभग खाली हो गया था. यानी कई लोग सरकार से मिल कर लौट चुके थे . गणेश बाबू का बेटा वीनू भी कहीं दिखाई न पड़ा. गणेश बाबू ने हॉल से बाहर आ कर देखा वीनू वहाँ भी न था शायद उकता कर घर चला गया होगा.. आजकल लड़कों में कोई सब्र नहीं .. नौकरी पाने के लिए न जाने कैसे- कैसे पापड़ बेलने पड़ते हैं , द्वारे द्वारे घूमना पड़ता है तब कहीं जा कर नौकरी मिलती है... उन्होने सोचा इतने में किसी ने पुकारा "गणेश बाबू गावंडे" गणेश बाबू का चेहरा खुशी से चमक उठा. खुशी में अपने सामान की थैली लेने के लिए गणेश बाबू अपनी कुर्सी की ओर जाने लगे. "गणेश बाबू गावंडे.. कौन हैं?" उनका नाम दोबारा पुकारा गया. "मैं.. मैं.... गणेश बाबू गावंडे .." गणेश बाबू ने अपनी थैली संभालते हुए जल्दबाज़ी में दरवाज़े की ओर आते हुए कहा. " अरे तो जवाब देने का क्या लेंगे जनाब..यहाँ आपका शुभ नाम चिल्ला चिल्ला कर मेरा हलक सूखा जा रहा है.." वह आदमी गणेश बाबू पर बरस उठा . गणेश बाबू उसकी ओर देख कर एक खिसियानी हँसी हँसे. " जाने कैसे

कैसे नमूने मुँह उठा कर चले आते हैं यहाँ ... अब इन्ही को देखिए .. मुँह में दही जमा हुआ है इनके .. जवाब देना ज़रूरी नही समझते .. इन्हें लगता है मानों इन्हे सब पहचानते हैं ... खुद को न जाने क्या फिल्मी हीरो समझते हैं.." वह आदमी भुनभुनाते हुए दूसरे आदमी से कहने लगा. गणेश बाबू ने डरते डरते अंदर जाने के लिए दरवाज़ा धकेला. उन्होने भीतर झाँक कर देखा . सामने ही एक मुलायम सोफे पर बैठी मधुरानी उन्हें दिखाई दी. जिसे लोग अदब से सरकार कहते थे वह मधुरानी ही थी . गाँव की एक मामूली दुकानदार से ... ग्राम पंचायत का चुनाव जीत कर सरपंच बनी ... फिर पंचायत समिति का चुनाव जीतते हुए ....आख़िरकार वह विधायक के पद तक आ पंहुची थी. उसके बगल में ही पाटिल बैठे थे . उसकी इस उड़ान में यक़ीनन इन पाटिल साहब का ही हाथ होगा ... गणेश बाबू ने सोचा . गणेश बाबु दरवाजे पर खड़े थे. लेकिन मधुरानी का ध्यान दरवाज़े की ओर न था. वह पाटिल जी से किसी मसले पर बातें कर रही थी . गणेश बाबू ने दरवाज़े को ज़रा और खोला और भीतर आ गये. लेकिन वह अंदर आए इसका ख्याल भी किसी को न था . वह दोनो अभी भी अपनी चर्चा में मग्न थे. गणेश बाबू पास ही एक कुर्सी के सामने जा कर उहापोह की स्थिति में खड़े रहे. खुद से कैसे बैठूं किसी ने बैठने के लिए कहना चाहिए... यूँ भी अबतक जो बेइज़्ज़ती हुई है वह कोई कम थोड़े ही है ?... अंदर चिट्ठी भिजवाने के बावजूद भी मधुरानी ने इतनी देर इंतेजार करवाया... गणेश बाबू ने सोचा. मधुरानी ने हालत के मुताबिक खुद को ढाला था , इसका सबसे बड़ा सुबूत यानी उसकी भाषा जो शहर में रह कर साफ़ हो गयी थी. वहीं उनकी अपनी भाषा सुदूर गाँवों में काम कर गँवई हो गयी थी . उनका रहन सहन भी बदल गया था पँट शर्ट पहनना छोड़ अब वह शर्ट और पायजामा पहनने लगे थे. इंसान को हमेशा तरक्की की राह चलना चाहिए .. जैसे मधुरानी चली ...मेरी तरह उल्टी दिशा में नहीं... उन्होने सोचा उसके हाव भाव में यूँ तो कोई ख़ास फ़र्क नज़र नहीं आया. यूँ भी उसकी अदाएँ किसी रानी से कम न थी. धीरे - धीरे पाटिल साहब और मधुरानी की चर्चा गर्म होते- होते फिर बहस में बदल गयी. मधुरानी अपनी बात ज़ोर दे कर मनवाना चाहती थी. लेकिन पाटिल जी थे की समझने को तैयार ही न थे , बहस गर्म होती जा रही थी. गणेश बाबू को महसूस हुआ की कहीं वे ग़लत समय पर तो न आ गये ? शायद थोड़ी देर और राह देख सकते थे. गणेश बाबू बाहर जाने को जैसे ही मुड़े तभी मधुरानी का ध्यान उनकी ओर गया. "आइए गणेश बाबू विराजिये" मधुरानी ने थोड़ी देर अपनी चर्चासे बहार आते हुए कहा. गणेश बाबू को मानो उसके साथ बिताए हुए पुराने दिन याद आने लगे - उसकी वही चंचल शोख आँखें , वही शरारती मुस्कुराहट. उन्होने उसकी ओर देखा. यही चीज़ें आज भी कायम थी केवल समय के साथ चेहरे पर थोड़ी गंभीरता आ गयी थी. उसने एक पल भी एहसास होने न दिया की कुछ देर पहले वह ताव ताव में बहस कर रही थी, यूँ तो अपने चेहरे के हाव भाव एक पल में बदलने की उसे महारत हासिल थी और गणेश बाबू इस बात से खूब वाकिफ़ थे. गणेश बाबू सकुचाते हुए मधुरानी के सामने सोफे पर बैठ गये. "बड़े दिनों बाद मिलना हुआ.." मधुरानी ने उलाहना देते हुए कहा. गणेश बाबू हौले से मुस्कुराए. "कहिए कैसे आना हुआ..?" मधुरानी ने पूछा पाटिल जी ने पहचान दिखाना भी ज़रूरी न समझा. पाटिल जी गुस्से में तड़ से उठ बैठे और पैर पटकते हुए वहाँ से चले गये. मधुरानी चोर निगाहों से उनको जाते हुए देख रही थी. " मधुरानी... मॅडम" सिर्फ़ मधुरानी कहना उचित न होगा ऐसा जानकार गणेश बाबू ने उनके नाम के आगे मॅडम जोड़ा. 'मॅडम' कहते हुए गणेश बाबू थोडा रुके . मधुरानी ने कोई ऐतराज़ न जताया "हाँ··· हाँ .. कहिए रुक क्यों

गये?" "मॅडम वह मेरे तबादले के बारे में कुछ कहना था.." "याने तबादला कराना है या रुकवाना है..?" "रुकवाना है.." "ठीक है ... ठीक है...एक काग़ज़ पर आप अपना पद , वरिष्ठ का नाम और इलाक़ा इत्यादि बातें ज़रा विस्तार में लिखिए...बाकी हम देखते हैं.." गणेश बाबू ने तुरंत अपनी जेब से एक काग़ज़ निकाला और मधुरानी के सामने रखते हुए बोला " यह रही अर्ज़ी मैने इसमे सब कुछ लिखा है" "नहीं मेरे पास नहीं .. बाहर दरवाज़े के करीब हमारे सेक्रेटरी साहब बैठे हैं उन्हीं को दीजिए.." "आपका बहुत बहुत धन्यवाद मॅडम.." "अरे गणेश बाबू आप तो हमें शर्मिंदा कर रहे हैं" मधुरानी ने कहा. "लेकिन काम तो हो जाएगा न मॅडम.." "होगा होगा यक़ीनन होगा...फ़िक्र न करें.." मधुरानी ने जवाब दिया. मधुरानी का इशारा समझ कर गणेशबाबू वहाँ से चलने को हुए.

गणेश बाबू कमरे से बाहर आए. गणेश बाबू के मन में मधुरानी के प्रति कृतज्ञता थी. उन्होंने महसूस किया की भीतर का गलिचा तो बाहर बिछे गलीचे से भी उम्दा और मुलायम है..उस.... पर चलते हुए उन्हें ऐसा अहसास हो रहा था मानों बादलों पर उड़ रहें हों. गणेश बाबू को उस बंगले में रखी कीमती चीज़ों और उम्दा गालीचे को देख कर मधुरानी की अमीरी का अहसास हो रहा था. गणेश बाबू के मन में एक ही पल जलन और दुसरे पल मधुरानी के प्रति अभिमान उमड़ आने का अहसास हुआ. वाकई मधुरानी ने कम समय में काफ़ी तरक्की की है.... उसका मुझसे व्यवहार चाहे जैसा हो लेकिन उसने जो हासिल किया है उसके लिए उसे श्रेय देना ही होगा... उन्होने अपने आप से कहा. इतने में सामने का दरवाज़ा खोल कर भरे पूरे शरीर का एक लंबा चौड़ा आदमी - सफेद लिबास में.. किसी नेता की भाँति चलते हुए अंदर आया. अरे यह तो मधुकररावजी हैं ... मधुकर बाबू गणेश बाबू के बगल से गुज़रने लगे लेकिन शायद उनका ध्यान कहीं और था या शायद उन्होने उनको देख कर भी अनदेखा कर दिया . बाहर जो आदमी कह रहा था वह सब सच ही था. वाकई मधुरानी का आदमी भीड़ से अलग नज़र आता है. तभी मधुकर बाबू मधुरानी के कमरे का दरवाज़ा खोल बेधड़क भीतर चले गये. यक़ीनन यह मधुरानी का ही आदमी होगा वरना यूँ बेख़टके अंदर कैसे चला गया?... गणेश बाबू सामने दरवाज़े की तरफ चलने लगे . अचानक उन्हें कुछ याद आया और उनके पैरों मीं मानों ब्रेक लग गये. अरे वीनू की नौकरी के बारे में कहना तो भूल ही गया .. अब क्या करूँ?... अभी मैं बाहर थोड़े ही न गया हूँ .. वापस लौटता हूँ .. लेकिन मैं बाहर निकला ही क्यों?... अब क्या वापस हॉल में सारा दिन इंतेजार करना होगा ?... वह वीनू पूरा घर सिर पर उठा लेगा.. गणेश बाबू तुरंत ही वापस मुड़े और मधुरानी के कमरे के बंद दरवाज़े के करीब आ कर रुक गये. अब जाऊं या थोड़ी देर राह देखूं?.. दरवाज़ा थोड़ा खोल कर देखता हूँ... गणेश बाबू ने हौले से ही दरवाज़े को धकेल कर थोडा टेढ़ा किया और भीतर झाँका . भीतर का दृश्य देख कर उनके तो होशो हवास ही उड़ गये . अभी-अभी अंदर आए मधुकर बाबू मधुरानी से सट कर बैठे थे और उसके माथे पर झूलते हुए बालों की लटों में अपनी उंगलियाँ फँसाए खेल रहे थे. गणेश बाबू ने तुरंत ही दरवाज़ा बंद करना चाहा, लेकिन शायद दरवाज़े में कुछ अटक सा गया था सो बंद न हुआ. दरवाज़े से अंदरूनी दृश्य साफ दिख रहा था और अंदर की आवाज़ें भी साफ साफ सुनाई दे रहीं थी. "मधु ये यहाँ पर" मधुकर बाबू ने एक काग़ज़ और स्टंप पॅड मधुरानी के सामने रखते हुए कहा. "यह क्या है..?" "क्या तुम्हें मुझ पर भरोसा नहीं?.. क्या मैं तुम्हें धोखा दूँगा..? उस दिन जिस कारखाने को खरीदा था यह उसके काग़ज़ात हैं.." "मेरा वह मतलब न था.. मेरे जानू" उसके गालों को अपने हाथों से खींचते वह बोली. गणेश बाबू के पाँव काँपने लगे. "नहीं .. नहीं

अब मेरा यहाँ खड़े रहना ठीक नही......कहीं उन्होने मुझे यहाँ खड़ा देख लिया तो" लेकिन उनके पैर थे की वहाँ जम से गये थे. मधुरानी ने मधुकर बाबू से स्टँप पॅड लिया और उसमें अपना अंगूठा दबा कर सामने रखे किसी काग़ज़ पर निशान लगाया. गणेश बाबू को देख कर यकीन न हुआ , उन्हें आज यह पहली बार पता चला की मधुरानी अनपढ़ थी उसके लिए काला अक्षर भैंस बराबर था. हद हो गयी...मधुरानी तो अपने राज़ को बनाए रखना खूब जानती है... " उस पाटिल के पर निकल आए हैं.." मधुरानी ने मधुकर बाबू से कहा " शायद उसे हमारे बारे में सब पता चल गया.." मधुकर बाबू आँखें मिचका कर हंसते हुए बोले. " के मतलब ?.. पता चले तो पता चले कल मुए को .. हम का डरे हैं उससे ... का हम उसकी रखैल लागे हैं..? उसका जल्दी ही कोई इलाज करना पड़ेगा" " उसकी परवाह मत करो.. मैने उसका इन्तेजाम कर लिया है" "बात कुछ ज़्यादा ही बिगड़ गयी है...एक दो दिन में ही कोई कदम उठना पड़ेगा" "एक दो दिन कहाँ?...कल का सूरज वह देख नहीं पाएगा" " ... मेरा जानू" मधुरानी ने दोबारा उसके गाल मसले. " तुम्हारी इसी मर्दानगी पर मैं फिदा हो गयी...पता है?" मधुरानी उसे सहलाते हुए बोली. "जानती हो मुझे तुम्हारी कौन सी अदा बड़ी भाती है...?" मधुरानी उसकी आँखों में देखती हुई धीरे से मुस्कुरा दी. "तुम्हारी इन क़ातिल मतवाली नज़रों पर हम दिल लुटा बैठे हैं ... हाय! " गणेश बाबू अब सम्हल गये थे वह घूम कर जाने के लिए मुड़े. "कौन हैं वहाँ ?" पीछे से मधुरानी की आवाज़ आई गणेश बाबू के मानों पैरों पर ब्रेक से लग गये. क्या करूँ..वापस जाऊं?... उनका दिल धड़कने लगा. वह वापस चलकर मधुरानी के दरवाज़े की ओर आए . दरवाज़ा अब भी थोड़ा खुला हुआ था वह खोल कर गणेश बाबू अंदर आए उन्हें हैरत हुई कि वक्त आने पर वह ऐसी हिम्मत भी दिखा सकते हैं. "मैं हूँ..." गणेश बाबू ने हौले से अंदर आते हुए कहा. मधुरानी और मधुकर बाबू अब दूर दूर बैठे हुए थे. मधुकर बाबू अपने हाथों में काग़ज़ धरे उस काग़ज़ को पढ़ने का ढोंग कर अपने हाव भाव छिपा रहे थे तो मधुरानी के चेहरे पर वापिस वही शरारती मुस्कान खेल रही थी. "क्या कुछ भूल गये..बाबूजी?" उसने अंजान बनते हुए कहा शायद वह गणेश बाबू के चेहरे के हाव भाव को पढ़ने की कोशिश कर रही थी. गणेश बाबू इस सबसे अंजान बनते हुए बोले " वह.. म.. मेरे बेटे की नौकरी के ब..बारे में ब.. बतलाना तो मैं भूल ही गया" "अच्छा .. अच्छा.. आइए बैठिए.." उसने गणेश बाबू को बैठने का इशारा किया. उसने करीब बैठे मधुकर बाबू को नज़रों से न जाने कौन सा इशारा किया वह वहाँ से उठ कर चलते बने. मधुरानी सोफे पर आराम से बैठती हुई बोली "गणेश ... यहाँ मेरे बगल में आ कर बैठिए" गणेश बाबू मानों किसी कठपुतली की तरह उठे और उसके बगल में थोड़ा अंतर रख बैठ गये. "आजकल वह पहले वाली बात नहीं रही... शायद बढ़ती उम्र का असर है तबीयत कुछ नासाज़ है" मधुरानी बोली. गणेश बाबू कुछ न बोले "देखो तो मेरी नब्ज़ टटोलो तो.." उसने अपना हाथ उनके आगे करते हुए कहा , ".. आज कल ब्लड प्रेशर की दिक्कत हो गयी मुझे" गणेश बाबू ने काँपते हाथों से उसका हाथ अपने हाथों में लिया और उसकी नब्ज़ टटोलने लगे. मधुरानी का हाथ अब भी वैसा ही मुलायम था. उसके हाथों का स्पर्श वह भूले न थे. "क्या पढ़ा -लिखा है आपका बेटा?" "बी.कॉम. किया है" "एक ही बेटा है" "जी हाँ.." "एक ही बेटा है...बढ़िया है...मुझे तो मालूम ही न था.." गणेश बाबू नब्ज़ टटोल रहे थे. लेकिन बीच बीच में मधुरानी के बोलने से उन्हें वापस टटोलना पड़ रहा था. "बेटे ने कहीं अर्ज़ी दी है?" "हाँ .. नगर निगम में एक जगह खाली है.. क्लार्क की.. वहीं अप्लाइ किया है.." "उसका नाम , जिस पद के लिए अर्ज़ी दी इत्यादि बातें विस्तार से एक काग़ज़ पर लिख दें"

मधुरानी ने गणेश बाबू के हाथों से अपना हाथ छुड़ाते हुए कहा. "हाँ मैं सब लिख कर लाया हूँ" गणेश बाबू जेब से काग़ज़ निकालते हुए बोले. "मेरे सेक्रेटरी के पास अर्ज़ी दे दीजिए" मधुरानी फ़ोन के पास जाती बोली. गणेश बाबू चलने की इजाज़त पाते हुए खड़े हो गये . मधुरानी फ़ोन का एक बटन दबाते हुए बोली. "नारायण बाबू को फ़ोन लगाइए" उसने फ़ोन रख दिया. "ठीक है... आता हूँ" गणेश बाबू बोले. मधुरानी गणेश बाबू का हाथ हाथों में लेती हुई बोली "यूँ ही आते रहिएगा ....पुरानी यादें ताज़ा हो जाएँगी" "हाँ हाँ .. क्यों नहीं? क्यों नहीं?" गणेश बाबू किसी तरह बोले. "जिंदगी की इस दौड़ में इंसान पीछे छूट गयी बातों को जब याद कर रोता है तो गुज़रे ज़माने की कुछ मीठी यादें ही उसके जीने का एक मात्र सहारा होती हैं .." मधुरानी एकदम दार्शनिक अंदाज़ में बोली, उसने गणेश बाबू का हाथ छोड़ा. गणेश बाबू मुड़ कर दरवाज़े की दिशा में चलने लगे. वह गणेश बाबू को दरवाज़े तक छोड़ने चल कर आई . "ठीक है..." गणेश बाबू जाते जाते उसकी ओर देख मुस्कुरा कर बोले. वह गर्दन हिला कर मुस्कुरा उठी और दरवाज़ा बंद हो गया.

आज रात गणेश बाबू की मानों नींद उड़ सी गयी थी. वह करवट पे करवट बदले जा रहे थे. एक ओर जहाँ मधुरानी के नर्म मुलायम हाथों की छुअन से उनकी पुरानी यादें ताज़ा हो गयीं थी वहीं दूसरी ओर दरवाज़े की आड़ से देखे गयी मधुकर बाबू और मधुरानी की रंगरैलियाँ याद आ रहीं थी. उनकी बीच कुछ बातें हुईं थी.. उनके बीच हुई बातों का एक एक लफ्ज़ उनके दिमाग़ में घूमने लगा " उस पाटिल के पर निकल आए हैं.." " शायद उसे हमारे बारे में सब पता चल गया.." " के मतलब ?.. पता चले तो पता चले कलमुए को .. हम का डरे हैं उससे ... का हम उसकी रखैल लागे हैं..? उसका जल्दी ही कोई इलाज करना पड़ेगा" यानी की पाटिल जी से भी मधुरानी के रिश्ते होंगे..? गणेश बाबू ने वह बातें याद कर सोचा. फिर दोबारा उनके संवाद उनके दिमाग़ में घूमने लगे. " उसकी परवाह मत करो.. मैने उसका इन्तेजाम कर लिया है" "बात कुछ ज़्यादा ही बिगड़ गयी है...एक दो दिन में ही कोई कदम उठना पड़ेगा" "एक दो दिन कहाँ?...कल का सूरज वह देख नहीं पाएगा" गणेश बाबू सोच में पड गये··· मतलब वह पाटिल जी का कत्ल करेगा? नहीं नहीं... मधुरानी चाहे जैसी भी हो वह इस हद तक नहीं गिर सकती··· गणेश को मधुरानी की कही वह बातें याद आईं "गणेश ... यहाँ मेरे बगल में आ कर बैठिए..." उन्होने सोचा: मधुरानी ने भले ही मुझे अपने फायदे के लिए इस्तेमाल किया हो लेकिन आज भी शायद उस के दिल के किसी कोने में आज भी मेरे लिए कुछ जज्बाद होंगे.... ..... या शायद वह अभी भी मुझे अपने जाल में फँसाना चाहती है? लेकिन अब मुझे अपने जाल में फँसा कर भी वह क्या हासिल कर लेगी.. और अब मैं जवान थोड़े ही न रह गया हूँ ... लेकिन प्यार की कोई उम्र नहीं होती .. और मेरी उम्र हो गयी तो क्या? वह भी कौन सी जवान है?.. "आजकल वह पहले वाली बात नहीं रही... शायद बढ़ती उम्र का असर है तबीयत कुछ नासाज़ है" कहीं इन लफ़्ज़ों में मधुरानी की बेबसी तो नज़र नहीं आती? ऐसे हालत में उसको भी किसी की कमी खलती होगी.. कहीं वो मुझमे अपने प्रेमी को तो नही खोजती?... "देखो तो मेरी नब्ज़ टटोलो तो.." गणेश के कानों में मधुरानी की बातें गूंजने लगी और उसके रोंगटे खड़े हो गये उसके वह मुलायम हाथ और नर्म छुअन. "यूँ ही आते रहिएगा ....पुरानी यादें ताज़ा हो जाएँगी" गणेश बाबू को वहाँ से लौटते समय मधुरानी के कहे वह लफ्ज़ याद

आए. उसने ऐसा कह कर कहीं मुझे कोई इशारा तो न किया ?..वरना वह ऐसे बिना किसी वजह से अपनेपन से तो पेश आने से रही.... फिर यह कम्बख़्त मधुकरबाबू कहाँ से बीच में टपक पड़े?.... वह भी तो मधुरानी के साथ इश्क़ लड़ा रहा था और मधुरानी भी उसको रोक नहीं रही थी.. शायद वह उसके जिस्म से खेलता होगा या फिर उससे किसी राजनैतिक लाभ के लिए मधुरानी उसको अपने जाल में फँसा रही होगी... लेकिन मेरे प्रति उसका मन साफ है ... सच्चा प्रेम. है .. ऐसे दो मुंहें लोगों के बीच इंसान को सच्चे प्रेम की कमी खलती है " करवट बदलते हुए कब सुबह हो गयी गणेश बाबू को पता ही न चला. उनकी बीवी की सुबह किचन में उठा पटक चालू हो गयी थी. लिहाज़ा अब नींद आने का सवाल न था. वह बिस्तर से उठे और कमरे में चहल-कदमी करने लगे. दरवाज़े पर दस्तक हुई तो वह चहल-कदमी बंद कर सामने के कमरे में आए. वहाँ उनका बेटा वीनू घोड़े बेच कर सो रहा था. गणेश बाबू ने उसको जलती निगाहों से देखा और किवाड़ खोल दिए , नीचे आज का अख़बार पड़ा था. गणेश बाबू ने वह अख़बार उठाया और दरवाज़ा बंद कर पन्ने पलटते हुए अंदर आ गए अख़बार की हेड लाइन पढ़ कर उनके तोते उड़ गये. "संपत राव पाटिल की सड़क दुर्घटना में दर्दनाक मौत!!" हे भगवान ..कल ही तो वह मधुरानी के यहाँ दिखाई दिए थे.... अचानक गणेश बाबू को याद आया कि उनकी मधुरानी से किसी बात को ले कर गर्मागर्म बहस हुई थी फिर उन्हें मधुकर बाबू और मधुरानी के बीच हुई बातें याद आने लगीं " उस पाटिल के पर निकल आए हैं.." " शायद उसे हमारे बारे में सब पता चल गया.." " के मतलब ?.. पता चले तो पता चले कलमुए को .. हम का डरे हैं उससे ... का हम उसकी रखैल लागे हैं..? उसका जल्दी ही कोई इलाज करना पड़ेगा" " उसकी परवाह मत करो.. मैने उसका इन्तेजाम कर लिया है" "बात कुछ ज़्यादा ही बिगड़ गयी है...एक दो दिन में ही कोई कदम उठना पड़ेगा" "एक दो दिन कहाँ?...कल का सूरज वह देख नहीं पाएगा" उनकी कही एक- एक बात मानों गणेश के सिर में हथौड़े की तरह बजने लगी. हे.. भगवान...यानी मधुरानी ने ही पाटिल जी को मरवाया..या यह महज़ एक इत्तेफ़ाक था..... नही यह इत्तेफ़ाक तो हरगिज़ नही हो सकता .. शायद इसलिए मधुरानी मुझसे बड़ी नरमी से पेश आ रही थी ... उसने यह जान लिया था की मैने उसकी बातें सुन ली हैं ... गणेश बाबू धम्म से बिस्तर पर बैठ गए. उनके दिमाग़ में तरह तरह की बातें आ रही थी , उन्हें मधुरानी का इतिहास याद आने लगा. मधुरानी का पति पाटिल के हाथों दुर्घटना का शिकार हो गया था.. या शायद मधुरानी ने ही उसको पाटिल के हाथों मरवाया होगा.. फिर पाटिल का इस्तेमाल कर मधुरानी ने अपनी राजनैतिक महत्वकांक्षाएँ पूरी कीं और फिर जब उसके पर निकल आए तो उसने पाटिल को भी मरवाया.. यानी उसका पति , पाटिल और अब मधुकर बाबू की उसने बलि चढ़ाई..? हाँ.... बलि ही चढ़ाई .. जैसे मधुमक्खियों में रानी मक्खी , नर मक्खी के साथ संभोग के बाद उन्हें जान से मार डालती है वैसे ही उसने अपने पति और पाटिल जी को मार डाला.. और अब शायद मधुकर बाबू की बारी है.. और यह बात केवल मुझे मालूम है.. उनकी सारी बातें मैने सुनी है , क्या मुझे पुलिस को इत्तला करनी चाहिए? ... लेकिन मेरी कही बातों पर कौन यकीन करेगा और मधुरानी की ऊँची पंहुच है.. उससे पंगा लेना याने ख़ुदकुशी करने जैसा ही है" गणेश बाबू दोबारा अख़बार में छपी खबर को बड़े गौर से पढ़ रहे थे. "आज शाम सात बजे के आस पास संदीप राव पाटिल मधुरानी सावंत जी के बंगले से एक ज़रूरी बैठक में हिस्सा ले कर अपने गाँव लौट रहे थे. सफ़र के दौरान भोजन के लिए रात करीब आठ बजे वे रास्ते में एक ढाबे पर रुके .वहाँ उन्होने शराब पीकर भोजन

किया और आगे बढ़े. सूत्रों के अनुसार सफ़र के दौरान नशे की हालत में गाड़ी चलाते हुए उनकी गाड़ी की टक्कर किसी ट्रक जैसे भारी गाड़ी से हुई, जिसमें उनकी घटनास्थल पर ही दर्दनाक मौत हो गयी. ट्रक ड्राइवर अपने ट्रक के साथ मौका-ए-वारदात से फरार है. पुलिस मामले की तहकीकात कर रही है" गणेश बाबू दोबारा सोच में पड़ गये: यक़ीनन यह एक बहुत बड़ी साज़िश है.... गणेश बाबू का दिमाग़ सोच सोच कर सुन्न हो गया था.

रात के करीब बारह बजे होंगे लेकिन गणेश बाबू छत पर चहल कदमी कर रहे थे. अचानक एक विचार उनके मन में आया. पाटिल जी का कत्ल मधुरानी ने ही करवाया है और यह बात मधुरानी और मधुकर बाबू के अलावा सिर्फ़ मुझे मालूम है... क्या इस बात का लाभ उठाया जा सकता है?.... क्यों नहीं?... यक़ीनन इस बात का फायदा उठाया जा सकता है... मैं यह बात जानता हूँ ऐसा मान कर ही तो मधुरानी के व्यवहार में अचानक परिवर्तन आया.. बिना कुछ करे धरे मधुरानी ने नब्ज़ टटोलने के बहाने अपना हाथ मेरे हाथों मे दे दिया.... अगर मैं उसको ब्लॅकमेल करूँ तो?... तो...तो... वह मेरी खातिर कुछ भी करने के लिए तैयार हो जाएगी... गणेश बाबू के चेहरे पर एक शैतानी मुस्कान खेलने लगी थी. यूँ भी उसने मुझे वहाँ दोबारा आने का न्योता दिया है.. यानी की इतने दिन मैं उसकी कार्यकर्ता मक्खी था और अब उसकी नर मधुमक्खी बनने का मौका हाथ लगा है.. ले..लेकिन.. इसमे ख़तरा है... इसमें जान भी गँवानी पड़ सकती है.. मधुरानी के मर्द की और पाटिल जी भी अपनी हवस के एवज़ में अपनी जान से हाथ धो बैठे .. उन्हें मधुरानी की अदाएँ याद आने लगीं उसकी वह चंचल शोख नज़र... उसकी वह मदहोश कर देने वाली मुस्कुराहट... उसका वह नर्म मुलायम स्पर्श. जी करता है उसकी बाँहों में मर जाऊं.... जब एक नर मक्खी रानी मक्खी से संभोग करती है तो उसे बख़ूबी मालूम होता है की इसकी कीमत अपनी जान दे कर चुकानी है... क्योंकि यूँ भी कई नर मधुमक्खियाँ इसी तरह मौत के घाट उतर चुकी होती हैं... लेकिन केवल उस एक पल की खुशी पाने के लिए वह नर मक्खी रानी मक्खी से संभोग करने के लिए तैयार हो जाती है... पूरी ज़िंदगी का मज़ा यदि उस एक पल में मिलता हो... तो पूरी ज़िंदगी यूँ घुट घुट के जीने में क्या मतलब?... यूँ भी मेरी ज़िंदगी में रखा क्या है?... वह बेरोज़गार, बद दिमाग़ , बद तमीज़ कपूत जो मुफ़्त की रोटियाँ तोड़ता है ?... और वह अनाड़ी झगड़ालू औरत जिसने जीना हराम कर रखा है..? उनके लिए अपनी ज़िंदगी बर्बाद करने से तो अच्छा है की मैं अपनी जिंदगी मधुरानी के नाम कुर्बान कर दूं...

गणेश बाबू आज तड़के ही पाँच बजे उठ कर बड़े जोश में सैर पर निकल पड़े. रास्ते से गुज़रते वक्त उन्हें बगीचे में कसरत करते लोग दिखाई पड़े. वे भी बगीचे में गये और खुद भी कसरत करने लगे. अब थोड़ा चुस्त तंदुरुस्त बनना पड़ेगा.. तोंद भी निकल आई है उसे भी कम करना पड़ेगा.. कसरत करते हुए वह जल्दी ही थक गये. आदत नहीं हो तो ऐसा ही होगा... कोई बात नहीं धीरे धीरे आदत हो जाएगी... उन्होने सोचा. कसरत करते हुए उन्हें पसीना आ गया था और इसलिए सुबह की ठंडी हवा उन्हे और भी ठंडी लग रही थी. कितना अच्छा लग रहा है ... तमाम बंधनों से आज़ाद... लेकिन मैं कहीं ग़लत राह पर तो नही जा रहा?... इतने साल जिसने मेरा साथ निभाया आख़िर उस बीवी को मैं कैसे छोड़ दूं?... चाहे अब मुझे वो ज़रा भी पसंद नहीं लेकिन मैने कभी उससे प्यार किया है..... लेकिन यह प्यार भी

बड़ी अजीब चीज़ है... जैसे किसी रेशम के कीड़े ने अपने इर्द गिर्द बनाया हुआ कवच ... जहाँ वह सुरक्षित रहे... लेकिन एक दिन ....जब वह रेशमी कीड़ा बाहर आता है... तो उस कवच की दाज्जियाँ उड़ा कर और फिर सारे बंधनों से आज़ाद.... इस फूल की पंखुड़ी से उस पंखुड़ी पर तितली बन उड़ता है.... उस सुबह दाढ़ी बना कर गणेश बाबू ने अपने बेटे वीनू को हुक्म सुनाया - "जाओ जा कर अंदर से एक कटोरी ले आओ" वीनू फटी फटी आँखों से अपने बाप को देख रहा था.. यूँ इस प्रकार उसके बाप ने कभी उसको कोई हुक्म न सुनाया था. उसने हैरत भरी निगाहों से उन पर नज़र डाली और उन्हें अनदेखा कर वह अपने काम में लग गया.लड़के ने हुक्म की तामील न की देखकर फिर उन्होने बीवी को हुक्म सुनाया - "अरी भागवान अंदर से एक कटोरी लाओ" थोड़ी देर गुज़र जाने पर भी जब कोई आवाज़ न हुई तो गणेश बाबू गुस्से से आग बबूला हो गये " चीख चीख कर मेरा गला सूख गया के एक कटोरी भेज दो , बहरे हो गये क्या सब के सब?" इसके साथ ही हुक्म की तामील हुई उनकी बीवी रसोई से भागी भागी स्टील की कटोरी लेकर आई और उनके सामने रखती हुई बड़बड़ा कर वापस जाने लगी. " घर में कोई पुराना ब्रश है क्या" उन्होने बीवी से मुखातिब हो कर पूछा. "ब्रश? कैसा ब्रश?" "दाँतों का ब्रश और किसका" "क्यों?" "ज़्यादा सवाल मत पूछो , जो बात पूछी है उसका जवाब दो" गणेश बाबू दोबारा चिल्लाए. "देखती हूँ मिलेगा तो ला कर दूँगी" रसोई से उनकी बीवी चीखी. वीनू अपने बाप के सामने आ कर खड़ा हो गया और बरसा "फिर शुरू हो गयी तुम्हारी चिल्ला चोट?" "खामोश! बदतमीज़" गणेश बाबू उस पर बरस पड़े "बड़ों की इज़्ज़त कैसे की जाती है तेरी अम्मा ने न सिखाया तुझको ??? नालयक बड़ों से ज़बान लड़ता है?" वीनू अपने पिता का यह रूप देख कर भौचक्का रह गया और वहाँ से चला गया "ब्रश मिला क्या???" गणेश बाबू दुबारा चीखे "नही मैं घर में पुरानी टूटी फूटी चीज़ें नही रखती" बीवी ने अंदर से चिल्ला कर जवाब दिया. " फिर मैं जो ब्रश अभी इस्तेमाल करता हूँ वही ले कर आओ" गणेश बाबू ने फरमान सुनाया. गणेश बाबू की बीवी न कुछ न कहते हुए उनका ब्रश उनके सामने ला पटका और उल्टे पाँव चली गयी. थोड़ी देर बाद वीनू वापस अपने बाप के सामने आ पंहुचा और अपनी अम्मा को आवाज़ लगाई "अम्मा अरी ओ अम्मा " "क्या हुआ रे नास्पीटे.. पहले तेरा बाप चिल्ला रहा था अब तू चिल्ला" अंदर से उसकी अम्मा चिल्ला कर बोली. "अरी अम्मा जल्दी आओ ऐसे ही ... देखो देखो बापू क्या कर रहे हैं" उसकी अम्मा तेज कदमों से चलती हुई आ कर उसके बगल में खड़ी हो गयी और जो गणेश को बाबू को देखा तो देखती ही रह गयी. गणेश बाबू कटोरी में खिजाब लिए ब्रश से अपने सफेद बालों को रंग रहे थे. " वाह ....क्या नज़ारा है" वीनू अपने बाप का मज़ाक उड़ाते हुए बोला. "बुढऊ सठिया गया है....सच कहते हैं लोग , साठ साल का खूंसठ बुड्ढा खुद को जवान ही समझता है" कहते हुए उनकी बीवी जाने को मुडी और पाँव पटकते हुए रसोई में गयी. "अरी भागवान ...अभी तो सिर्फ पचास का ही हुआ हूँ ....साठ साल में अभी 10 साल बाकी हैं" गणेश बाबू अपनी मूछों को ताव देते हुए बोले.

बंगले के आगे गेट के सामने एक रिक्शा आ कर रुका. बालों में खिजाब लगाए गणेश बाबू खादी का कुर्ता - पयज़ामा पहने हुए नीचे उतरे. उन्होने कुर्ते की दाई जेब से पाँच का नोट निकाल कर रिक्शा वाले के हवाले किया और तेज़ कदमों से बंगले की तरफ बढ़ चले. इतने में पीछे से आवाज़ आई "साहब" उन्होने पलट कर देखा. "साहब ए लीजिए एक रुपये ... किराया चार रुपये ही बनता है" रिक्शा वाले ने एक रुपये का सिक्का देने के लिए हाथ आगे बढ़ाया. "रहने दो" गणेश

बाबू मना करते हुए बोले और बंगले के फाटक की दिशा में चल पड़े. आज वे आत्मविश्वास से लबरेज नज़र आ रहे थे . बंगले के बरामदे में दाखिल होते हुए, आस पास जमी भीड़ को अनदेखा कर, वे सीधे बंगले में घुसे. हमेशा की तरह आज भी मधुरानी से मिलने कई लोग आए थे . बेधड़क काग़ज़ की पर्ची पर अपना नाम लिख वह पर्ची उन्होने दरवाज़े के पास बैठे चपरासी के हवाले की और अपनी बारी का इंतेजार करने लगे . हालाँकि आज एक भी कुर्सी खाली न थी लेकिन वहाँ बैठे 2-4 गाँव वालों ने उन्हें अपनी कुर्सी दे दी. गाँववाले उन्हें पहचानते न थे लेकिन शायद यह खादी के कपड़ों का ही जादू था जो आज लोग उन्हें इतनी इज़्ज़त दे रहे थे. उन्हें हर चीज़ काफ़ी बदली बदली सी लग रही थी. जल्दी ही उनका नाम पुकारा गया . अपना नाम सुनते ही वे बड़े आत्मविश्वास से दरवाज़े के अंदर दाखिल हुए . भीतर कॅबिन का दरवाज़ा धकेल कर वे अंदर आए . भीतर मधुरानी मानों उनकी ही राह देख रही थी. "आइए गणेश" उसने मुस्कुराकर उनका स्वागत करते हुए कहा. वे भी मुस्कुराते हुए उसके बगल में जा कर बेहिचक बैठ गये. अपने अंदर आए इस बदलाव से वह खुद हैरत में थे.. क्या एक चीज़ इंसान को इतना बदल सकती है?... हां यक़ीनन आज वह मधुरानी के राज़ से वाकिफ़ थे ... और यही उनमें आए बदलाव की वजह थी. कुछ पल यूँ ही चुप्पी में गुज़र गये. दोनो एकदुसरे का चेहरा पढ़ने में व्यस्त थे. आख़िरकार गणेश बाबू ने अपना मुँह खोला: " पाटिल जी के बारे में जान कर बड़ा अफ़सोस हुआ..." मधुरानी अपनी नज़रें चुराती हुई बोली " हाँ .. बहुत बुरा हुआ उनके साथ" गणेश बाबू ने महसूस किया की वह आज नज़रें चुरा रही है . "उनका लड़का भी सयाना है?" गणेश बाबू ने आगे कहा. "हाँ अब पिता के बाद उसी के कंधों पर ज़िम्मेदारी आ पड़ी है" मधुरानी बोली "सोचता हूँ उससे एक बार मिल लूँ" मधुरानी सुन कर चौंक उठी. "म..मेरा मतलब है..उस से मिल कर उसका ढाँढस बँधाऊं" गणेश बाबू का तीर ठीक निशाने पर जा लगा था... मधुरानी उनका मतलब जान गयी थी, बात बदलते हुए वह बोली "चलिए न गणेश ज़रा उपर चल कर आरामसे बैठ कर बतियाते हैं.. सुबह से कई लोगों से मिल कर उकता गयी हूँ" गणेश बाबू की बाँछें खिल गयी लेकिन इतमीनान से बोले: "चलिए" चलते चलते उन्होने मधुरानी की आँखों में देखा लेकिन शायद आज पहली बार वह बड़ी हिम्मत से उसकी आँखों में झाँक रहे थे. वह अब आगे आगे चलने लगी और गणेश बाबू उसके पीछे पीछे , वह सीधा दूसरी मंज़िल पर अपने शयनकक्ष में उनको ले गयी. उनके मन में लड्डू फुट रहे थे , इस पल का न जाने उन्हे कब से इंतेज़ार था. वह कमरे में दाखिल हुए. उन्होने देखा पूरा कमरा कीमती चीज़ों से सज़ा हुआ था . इतनी कीमती चीज़ें गणेश बाबू अपनी ज़िंदगी में पहली बार देख रहे थे . उन्होने मधुरानी का हाथ अपने हाथों में कस कर पकड़ लिया और अचानक ही उसे अपनी बाहों में भींच लिया . ना जाने आज उनमें इतना हौसला कहाँ से आ गया था. मधुरानी ने भी कोई विरोध नहीं किया मानों उनकी बाहों में आने के लिए वह मचल रही थी. और फिर दोनो एक दूसरे की बाँहों में खो गये.

धीरे धीरे गणेश बाबू का मधुरानी के बंगले पर आना जाना काफ़ी बढ़ गया था. उनका लिबास भी अब बदल गया था. वे हरदम खादी के कपड़ों में नज़र आते - ठीक किसी नेता के जैसे. रोज़ाना सुबह कसरत करने से वह चुस्त लगने लगे थे. घर पर भी उनकी पूछ बढ़ गयी थी. बेटा नौकरी दिलाने से खुश था तो बीवी इस बात से खुश थी की बुढ़ापे में ही सही पर

देर आए दुरुस्त आए. मधुरानी की पंहुच से उनका तबादला रुक गया था और तो और आफ़िस में उनके वरिष्ठ सहकर्मी भी उनसे आदर से पेश आने लगे. अपने काम कराने के लिए वे गणेश बाबू के ज़रिए जुगाड़ लगवाते. अब गणेश बाबू की गिनती मधुरानी के करीबी लोगों में होती थी. इसलिए रात दिन उनका उठना बैठना बंगले पर ही होता. कई कई दिन तो वह वहीं ठहर जाते. अब उन्हें उसकी बातें पता चलने लगी थी , काम के बहाने दौरे पर मधुरानी और मधुकर बाबू अक्सर शहर से बाहर जाया करते और रात किसी फार्म हाउस पर साथ बिताया करते. इस एक बात को छोड़ वह मधुरानी से बड़े प्रभावित थे. वे सोचा करते की उनके भी दिन आएँगे. उन्हें इसका ज़्यादा इंतेजार नहीं करना पड़ा. जल्दी ही वह वक्त भी आया कि जब मधुकर बाबू शहर से बाहर होते तो गणेश बाबू मधुरानी के साथ हम बिस्तर होते . कहावत है चपरासी के कान उपर के बयासी और नीचे के तिरासी.... और ऐसी बातें भला छुपती कहाँ हैं ? इस कान से उस कान होते हुए आख़िरकार इस बात की भनक मधुकर बाबू को हो ही गयी ... एक दिन बिना किसी बात के मधुकर बाबू ने गणेश बाबू से झगड़ा मोल लिया और बात बढ़ते बढ़ते अच्छे खासे बखेडे में तब्दील हो गयी. अपने गणेश बाबू डरने वालों में से न थे उन्होने भी मधुकर बाबू को खूब हड़काया और उनके हर हमले का मुँहतोड़ जवाब दिया. हार कर मधुकर बाबू को पीछे हटना पड़ा. लेकिन इस खेल में गणेश बाबू अनाड़ी न थे. वे इस बात से अंजान न थे कि राजनीति में बंदा चार कदम आगे बढ़ने के लिए ही दो कदम पीछे हटता है . इन्ही मधुकर बाबू ने पाटिल जी के साथ जो किया उसके मद्देनज़र गणेश बाबू पर ख़तरा बढ़ गया था. अब गणेश बाबू को अहसास हुआ की नर मक्खी की ज़िंदगी कितनी कठिन होती है. उन्हें कदम कदम पर ख़तरे का अहसास होने लगा था. लेकिन वह इस सब से बिल्कुल न घबराते थे. डर को उन्होने तभी मात दे दी थी जब उन्होने मधुरानी का उस दिन शयनकक्ष में हाथ पकड़ा था. एक दिन गणेश बाबू की मुलाकात बंगले पर किसी पुराने परिचित से हुई , हालाँकि गणेश बाबू ने उन्हें पहचाना न था. वहीं आदमी उनको पहचान कर करीब आया . उसने कहा "नमस्ते गणेश बाबू...पहचाना?" "जी ज़रूर ज़रूर.." गणेश बाबू अपनी याददाश्त पर ज़ोर डालते बोले . बीते सालों में नौकरी के चलते कई लोगों से उनकी पहचान हुई थी सबका नाम थोड़े ही न याद रखते ? और अब तो बतौर कार्यकर्ता कई लोगों से रोज़ाना मिलना होता ऐसे में उनसे हंस बोल कर न मिलना भारी अशिष्टता होती. वह आदमी हंस कर बोला " क्या गणेश बाबू आप तो छुपे रुस्तम निकले .....क्या उड़ान भरी है आपने यहाँ ... हमारी जिंदगी बतौर ग्रामसेवक गाँव के गाँव में गुज़र गयी" अब कहीं जा कर गणेश बाबू के दिमाग़ की बत्ती जली . यह खराडे साहब थे जिन्होने उजनी गाँव का चार्ज गणेश बाबू को दिया था . " मैने सोचा समाजसेवा में भी हाथ आज़मा लिए जाए" गणेश बाबू झेंप कर बोले. " अरे बाबू जी वह बातें भी सबके किस्मत में कहाँ लिखी रहती है... वहाँ आफ़िस में मुझे पता चला आजकल आपके बड़े ठाठ हैं ....आफिसर लोग भी आपके नाम से ख़ौफ़ खाते हैं" "आप जैसों की दुआ है बस" गणेश बाबू बोले. "गणेश बाबू एक काम था आपसे" खराडे साहब बोले. गणेश बाबू सावधान हो गये. अच्छा तो जनाब इसलिए इधर का रास्ता भूले हैं... "अजी बोलिए हमारे बस में होगा तो हम ज़रूर करेंगे" गणेश बाबू बोले. " वह मामला ज़रा तबादले का था" खराडे साहब बोले. "उसके अलावा कुछ और कहिए आजकल जिसे देखो वही तालुके के आस पास की जगह तबादले की सिफारिश करने आता है..सब लोग आएँगे तो फिर बात कैसे बनेगी..?" गणेश बाबू बोले. "नही साहब मुझे तालुके के पास नहीं गाँव में तबादला चाहिए" खराडे साहब

बोले. गणेश बाबू चौंक कर बोले "गाँव में?" "सब तहसील या तालुके में तबादला चाहते हैं आप पहले आदमी होंगें जिसे गाँवमें तबादला चाहिए" " हाँ साहब मुझे उजनी गाँवमें तबादला चाहिए.. वह मेरे गांवके करीब पड़ता है न" खराडे साहब समझाते बोले. "अच्छा.. अच्छा... आजकल वहाँ कौन हैं" गणेश बाबू ने पूछा. " हैं कोई साहब..देशमुख नाम है उनका" खराडे साहब बोले. "क्या उन्हें वहाँ से तबादला चाहिए" गणेश बाबू ने सवाल किया. "पता नही?" "क्या साहब...पहले पता तो कर लीजिए , आपसी समझ से काम बनता हो तो यहाँ आपको एडीया घिसनी न पड़ेगी" गणेश बाबू बोले. "मुझे खबर लगी थी कि देशमुख साहब का गाँव भी उजनी के करीब ही है.. लिहाज़ा वह वहाँ से हटने को तैयार न होंगे" खराडे साहब बोल पड़े. "आख़िर बात बाहर आ ही गयी न... वह कहते हैं न की बैद्य और नेता से कोई बात छुपाना न चाहिए" गणेश बाबू उलाहना देते बोले. " नही साहब वह बात नहीं...मैने सुना था उन्होने भी पाटिल साहब के ज़रिए जुगाड़ लगाई थी" "पाटिल जी की जुगाड़?....उनकी जुगाड़ तो उपर लग गयी" गणेश ने मज़ाक में कहा. "लेकिन वे मंत्री जी के ख़ास आदमी थे" "उसकी आप परवाह मत करो.." गणेश बाबू बोले " और पूरी जानकारी एक काग़ज़ पर लिखकर मुझे दे दें ... मैं आपका काम करवाता हूँ" "मतलब..? मंत्री जी से मिलने की ज़रूरत नहीं?" खराडे साहब बोले. "आपको मुझ पर भरोसा नही तो उनसे जा कर मिलिए" गणेश बाबू सख्ती से बोले. "न.. नहीं बाबू जी वह बात ना है..." खराडे साहब किसी पालतू कुत्ते की तरह पुंछ हिलाते गणेश बाबू के पीछे पीछे चलने लगे.

शाम के सात बजे थे . मधुरानी बालकनी में बैठ कर आराम फर्मा रही थी. तभी एक कार्यकर्ता उसके करीब आ खड़ा हुआ. "क्या बात है" उसने पूछा. "जी नीचे एक आदमी आपसे मिलना चाहता है " जवाब आया. "मिलने का वक्त ख़त्म हो गया है.. और इस वक्त मैं किसी से नहीं मिलती" मधुरानी बोली. "लेकिन वह जाने को तैयार नही है ...बहस कर रहा है...और तो और हाथा-पाई पर उतर आया है... माफ़ करिएगा बीबीजी लेकिन बस आपके नाम की रट लगाए हुए है .. मुझे मधी से मिलना है..मधी से मिलना है..." कार्यकर्ता ने कहा. "मधी" यह नाम सुनकर वह मानो बीते दिनो में चली गयी. बहुत पहले उसे इस नाम से एक ही आदमी पुकारा करता था ...जब उसने जवानी में कदम रखा ही था. उसका अतीत उसकी आँखों के सामने किसी फिल्म की तरह सरकता चला गया. ... मधुरानी को अपने आप में खोया देख , कार्यकर्ता वहाँ से जाने को हुआ तभी उसे पीछे से मधुरानी की आवाज़ सुनाई दी. "ठहरो" वह रुक गया. "उसे उपर भेज दो" उसने हुक्म सुनाया. "जी अच्छा" कार्यकर्ता ने जवाब दिया और वह सीढ़ियाँ उतरने लगा. मधुरानी को कुछ देर बाद पदचाप सुनाई दी, उसकी पीठ दरवाजे तरफ भले ही थी, वह अपना ध्यान दरवाज़े के तरफ ही लगाए थी . आने वाला उसके एकदम करीब आ खड़ा हुआ उसके सारे बदन पर मानो रोंगटे खड़े हो गये . "मधी.." उसे आवाज़ सुनाई दी. वही आवाज़ और वही कशिश.... उसने पलट कर देखा . उसके सामने उसका पहला और आखरी प्यार शंकर खड़ा था. समय के साथ उसका चेहरा- मोहरा बदल गया था ..कमज़ोर लग रहा था. इतनी देर खड़े होने से शायद वह थक गया था इसलिए कुर्सी पर बैठ गया . "शंकर.." मधुरानी के होंठ बोल पड़े " और उसका अतीत उसकी आँखों के सामने आता गया. ....उनका वह कच्ची उमर का पहला प्यार... ....उसे याद आया वह वाक़या जब उसने शंकर को यह बताया की वह

उसके बच्चे की माँ बनने वाली है... ....इसके बाद उसका गाँव से गायब हो जाना ...और उसका टकटकी लगाए उसकी राह देखना ... .... जब उसके बापू को यह बात पता चली तो उसने उसके बालों का झोंटा पकड़ कर बेदर्दी से पीटना ... ...बापू ने कहीं से पैसों का इंतेजाम कर उसे शहर ले जा कर उसका गर्भपात कराया.. ...गर्भपात कराने के खबर समाज में पता चलते ही लोगों का उससे नज़रें चुराना और पीठ पीछे बुराई करना. ....हार कर बापू ने उसका ब्याह उजनी गाँव के किसी दुकानदार से तय कर दिया. .... उसकी वह पहली रात .. सुहागरात पति के साथ अंधेरे में मनाई ...और दिन के उजाले में उसने देखा जिसके साथ उसने रात बिताई वह उसका पति न हो कर गाँव के पाटिल बाबू थे... ....और फिर कई बार पाटिल का उसके साथ उसी के घर पर रातें गुज़ारना... ....उसका पति उसे छूता भी न था , शायद इसकी उसे इजाज़त न थी और फिर उसने अपने पति को अपनी पहली नर मधुमक्खी बनाने का प्रसंग .. उसने अपने पति को अपनी मादक अदाओं से उकसाया.. फिर जब उसका पति उसके साथ संभोग कर रहा था तो पाटिल का वहाँ आना और आग-बबूला हो कर उसे जान से मार डालना... . ...बाद में पाटिल ने उसकी लाश गाँव से दूर ले जा कर बीच रास्ते में फेंक दी और पुलिस के सामने यह कहलवाया कि शराब के नशे में वह उसकी जीप के नीचे आ गया ,और फिर पाटिल का मामले से बाइज़्ज़त बरी होना. अतीत की भूली बिसरी यादें मानो किसी फिल्म के भाँति उसकी आँखों के सामने एक-एक कर गुज़र गयीं.

शंकर यूँ ही कुछ पल कुर्सी पर बैठा और एकदम उठ कर माधुरानी के पैरों में गिर पड़ा "हमका माफ़ कर दे मधु ....मधु हमका माफ़ कर द्यो ....हम इसी जनम में अपने कु-कर्मों का फल भुगत रहा हूँ ....जब से गाँव छोड़ा तब से हम दर - दर की ठोकरें खा बेघर आवारा इधर-उधर घूम रहा हूँ ....आज चार दिन हो गये पेट में एक दाना तक न गया" माधुरानी के मन में उसके प्रति सारी भावनाएँ बीती घटना के साथ ही मर गयीं थी , तब से ले कर आजतक उसने कभी भी अपने जज्बादोंके के आगे घुटने न टेके थे . शायद इस घटना से उसने यही सीख ली थी. मधुरानी ने उसके कंधो को सहारा दे कर उपर उठाया. उसने महसूस किया उसके कंधो पर हाथ रखते ही जसबादों को काबू कर पाना मुश्किल हो रहा था.. और फिर जज्बादोंका जो उफान आया, उसने उसे अपनी बाँहों में भर लिया.शायद वह उन अतीत के लम्हों को दोबारा जीना चाहती थी. जो उस घटना के बाद वह कभी जी न सकी थी. लेकिन उसे एहसास हुआ की यूँ भावनाओं में बहना ठीक नहीं . यह भावनाएँ ही थी जो उसे कमज़ोर बना रही थी. लेकिन तरक्की की सीढ़ी चढ़ती हुई वह अगर आज इस मकाम पर आ पंहुची थी तो इसकी सबसे बड़ी वजह यही थी की उसने अपनी भावनाओं को काबू में रखा और उन्हें कभी खुद पर हावी न होने दिया. यहाँ जजबादों में बहने की कोई गुंजाइश न थी और ना किसी कमज़ोरी की. उस से परे हट उसके कंधे को सहारा देते हुए वह उसे शयनकक्ष में ले जाने लगी. उसने फ़ैसला कर लिया था उसे कमज़ोरी का एहसास दिलाने वाले ज़स्बादों का आज वह गला ही घोंट देगी. पौ फटने में देर थी. तड़के अंधेरे में माधुरानी के बंगले के परिसर में पुलिस की जीप और एक एंबुलेंस आकर रुकी. पुलिस की जीप में से एक महिला इनस्पेक्टर और कुछ हवालदार उतरे और सीधे बंगले में प्रवेश कर गये. वह दूसरी मंज़िल तक आ पंहुचे. अंदर हाल में माधुरानी बैठी उनकी

राह देख रही थी. माधुरानी ने कीमती मखमली गाऊन पहना था. इनस्पेक्टर और हवलदार के आते ही वह उठ खड़ी हुई और उन्हें अपने शयनकक्ष में ले गयी. वहाँ का नज़ारा देख कर उन पुलिसवालों के रोंगटे खड़े हो गये. बिस्तर पर शंकर नग्न अवस्था में पेट के बल ऐसे लेटा था जैसे किसी हवस के भूखे वहशी दरिंदे ने उसके साथ पूरी रात ज़ोर ज़बरदस्ती की हो. हवालदार ने शंकर के पास जा कर उसकी नब्ज़ जाँची , साँसे चल रहीं थी . हवलदार ने उसे पकड़ कर बिस्तर पर सीधा करने की कोशिश की तो वह दर्द से चिल्ला पड़ा . "क्या हुआ इन्हें?" इनस्पेक्टर बोल पड़ी "कुछ नही..कुछ नही...इनसे हमारी पुरानी पहचान है..कल जब ये आए तो इनकी तबीयत अचानक बिगड़ गयी , हमने इनसे कहा कि आज की रात यहीं ठहर जाएँ ..लेकिन आज सुबह जब देखा तो यह यहाँ इस हाल में मिले" माधुरानी ने जवाब दिया. महिला इनस्पेक्टर माजरा समझ गयी और हवलदारों की मदद से उसे उठा कर अपने साथ नीचे ले जाने लगी. वह सीढ़ियों तक पंहुचे ही थे की माधुरानी ने आवाज़ दी "इनस्पेक्टर साहिबा..." महिला इनस्पेक्टर ने माधुरानी की ओर देखा और उनका इशारा समझ कर हवलदारों से कहा "आप आगे बढ़िए ..मैं पीछे से आती हूँ" उन लोगों के नज़रों से ओझल होते ही माधुरानी उससे बोली "बैठिए.." दोनो आमने -सामने सोफे पर बैठ गये. "सब ठीक तो है ना ?" माधुरानी ने उसकी आँखों में आँखें डाल कर पूछा. "जी मॅडम" महिला इनस्पेक्टर ने जवाब दिया. . "तुम्हारा प्रमोशन इस साल ड्यू है?" माधुराने ने यूँ ही पूछ लिया. "नहीं..अगले साल" उसने जवाब दिया. "अच्छा..." माधुरानी बोली. "ठीक है...इनको तुरंत किसी सरकारी हस्पताल में भर्ती करवाईए ...और इस बात का ख्याल रखिए क़ि मेरा नाम इसमे कहीं न आ पाए" माधुरानी ने हुक्म सुनाया. "जी मॅडम..." महिला इनस्पेक्टर ने जवाब दिया. "आप जानती हैं ..यह मीडीया वाले आज कल हम नेताओं के पीछे कैसे हाथ धो कर पड़े रहते हैं...निजी बातों को भी खबरें बना कर चटखारे ले ले कर जनता के सामने परोसते हैं ...फिर चाहे उनकी बात सरासर झूठी क्यों न हो" माधुरानी बोली. "जी हाँ मॅडम...आपकी बात सही है " महिला इनस्पेक्टर ने कहा. अब तक माधुरानी ने उससे बतियाते उसके हाव भाव से यह अंदाज़ा लगा लिया था कि वह राज़ कायम रख सकती है...वह उठ कर खड़ी हो गयी. उसके सामने बैठी महिला इनस्पेक्टर भी उठ कर खड़ी हो कर सीढ़ियों की तरफ जाते बोली "ठीक है मॅडम...आप फ़िक्र न करें..मैं संभाल लूँगी" उस दिन के बाद चार पाच दिन ही गुजर गए होंगे. मधुरानी अपनी पार्टी मीटिंग में व्यस्त थी . तभी मधूराणीका एक सहायक उसके कान में आकर खुस्फुसाया - '' मॅडम आपके लिए . सरकारी अस्पताल से शिंदेंमॅडम का फोन है ...'' '' किसलिए ?...'' मधूराणी.. '' वह उस दिन भरती किया हुवा आदमी ... अभी अभी गुजर गया ... वह बोल रही थी ... '' वह सहाय्यक फिरसे उसके कान के पास फिर से धीरेसे खुस्फुसाया. '' उसे कहना ...मै एक महत्वपूर्ण मीटिंग में हु ... और फिरसे इस सिलसिलेमे मुझे किसीकाभी फोन नहीं आना चाहिए ... ऐसे बता दो उसे '' मधूराणीने आदेश दिया . '' जी मॅडम'' उसका सहाय्यक वहासे हटकर फोनकी तरफ चला गया .

चुनावों की घोषणा हो गयी थी और अब चुनावों की तारीख अधिक दूर न थी. लिहाज़ा चुनाव प्रचार का दौर शुरू हो गया था. इसी के चलते आज माधुरानी की चुनावी सभा का शहर में आयोजन था. चार पाँच लाख के करीब जनता आने वाली थी . माधुरानी ने मंच की व्यवस्था और मेहमानों की सुरक्षा का जिम्मा अपने नज़दीकी सहकारियों को सौंप रखा था . माधुरानी का चुनावी मॅनेज्मेंट बढ़िया था .. गणेश बाबू ने भी इस बात को कई दफे महसूस किया. माधुरानी की

सुरक्षा की ज़िम्मेदारी गणेश बाबू के कंधो पर आन पड़ी थी. यूँ तो सुरक्षा में पुलिस लगी हुई थी लेकिन गणेश बाबू को उनके संपर्क में रह कर पूरी सुरक्षा व्यवस्था पर नज़र रखनी थी . मधुकर बाबू जनता को लाने ले जाने का जिम्मा निभा रहे थे. उन्होने आस पास के गाँवों से जनता को लाने के लिए बस - ट्रक लगा रखे थे. गाँववाले भी खुश थे की मुफ़्त में तालुके की सैर कर आएँ. सभा आमराई में रखी गयी थी असल में वहाँ एक बड़ा सा मैदान था . अभी वहा आम के बस दो चार पेड़ ही बचे होंगे , लेकिन किसी जमाने में वहाँ आम के पेड़ों का बगीचा था इसलिए लोग उस मैदान को आमराई के नाम से पुकारते थे. सभा का समय दोपहर का तय होने के कारण लाइटिंग करने का सवाल ही न था. मंच का काम जिन कार्यकर्ताओं को सौंपा गया था वे मंच खड़ा करते हुए देख रहे थे. धीरे-धीरे लोगों की भीड़ वहाँ इकट्ठा होनी शुरू हुई . आस पास के गाँवों से ट्रक और बस भर-भर के लोग लाये जा रहे थे. शहर के लोग भी आना शुरू हो गये लेकिन उनकी संख्या मामूली थी. मंच पर लाउड स्पीकर की टेस्टिंग चल रही थी वे लोग माइक पर कुछ बड़बड़ा रहे थे. गाँव वाले लोग चारों तरफ इस नज़ारे का लुत्फ़ उठा रहे थे. इतनेमे एक आलीशान कार आ कर रुकी उसमें से गणेश बाबू , मधुकर बाबू और माधुरानी के अन्य नज़दीकी कार्यकर्ता उतरे. मधुकर बाबू ने इधर-उधर देखते हुए कार्यकर्ताओं से पूछा : "सब ठीक है न?" पूछ कर तसल्ली कर ली और कार में बैठ कर चले गये. शायद अगली बार वह माधुरानी को ले कर वहाँ आने वाले थे. पुलिस वालों की टुकड़ियाँ भीड़ में इधर उधर बिखर गयी . गणेश बाबू के ज़िम्मे अब बस एक ही काम बचा था - वह था उनके तले काम करने वाले लगभग सौ कार्यकर्ताओं को मंच के इर्द गिर्द फैलाना. जनता की सुरक्षा का जिम्मा पुलिस का था गणेश बाबू का नहीं . और माधुरानी की सुरक्षा में जो पुलिस वाले लगे थे उनके साथ साथ गणेश बाबू और उनके कार्यकर्ता तैनात थे. उजनी गाँव के लोग जब ट्रक से आने लगे तो गणेश बाबू का ध्यान उस तरफ गया. उनमें से कई लोग गणेश बाबू के जान पहचान वाले निकले. गणेश बाबू उनसे मिलने उस ओर गये. गणेश बाबू की मुलाकात सदा से हुई. सदा से मिल कर उन्हें पुरानी बात याद आ गयी, जब उसने नशे में धुत्त हो कर उन्हें माँ-बहन की गालियाँ दी थीं. वह हंस पड़े. सदा दुबला पतला और बूढ़ा हो गया था. यूँ तो वह गणेश बाबू से उम्र में एक दो साल ही बड़ा होगा. "क्यों सदा भाई क्या हाल चाल?" गणेश बाबू ने पूछा. वह गणेश बाबू की ओर अचंभे से देखने लगा. "गणेश बाबू?" वह खुशी से चहका. "क्या तबीयत नासाज़ है?" गणेश बाबू ने उसकी ओर देखते कहा. "आप भी बदल गये हैं बाबू जी...अच्छी सेहत बना ली है आपने...और ई का ? नेता-वेता बन गये हो का? " उसने कहा. "और..? शराब पीना छोड़ दिया क्या?" गणेश बाबू ने मज़ाक मज़ाक में पूछा. उसके चेहरे से सारी खुशी काफूर हो गयी. "अब तो ऐसा लागे है की ई जिंदगी के साथ ही शराब छूटेगी" वह निराश हो कर बोला. गणेश बाबू को यह सुनकर बुरा लगा. "और कौन कौन आया है गाँव से?" उन्होने ट्रक से उतरते लोगों को देखकर कहा. "कई लोग आए हैं बाबू जी.. हम सुने हैं और एक ट्रक आएगा लोगों को ले कर" "सरपंच जी आएँगे क्या?" गणेश बाबू ने पूछा. यह सुन उसके चेहरे की रंगत बदल गयी. "सरपंच जी पाँच-छः साल पहले गुज़र गये" उसने उदासी से कहा. "कैसे?" गणेश बाबू आश्चर्य से कह उठे. "उम्र हो चली थी...खैर चल बसे ई एक तरह से अच्छा ही हुआ....बहुत परेशानी में दिन काटे उन्होने...आँखों से उनको दिखता न था...पैरों ने साथ छोड़ दिया था...शौच इत्यादि भी वहीं के वहीं करते थे...बच्चों ने मुँह फेर लिया...अंतिम दिनो में हम ही उनकी देख रेख किए ...उ सरपंच जी ने हमका सीलिंग की ज़मीन बहाल की थी...उनके

बच्चे उनको भूल सकते हैं हम कभी न भूलेंगे... उ सरपंच किसी को भी ज़मीन दे सकता था लेकिन उनने हमको ही दी.." सदा रुआंसा हो गया था. गणेश बाबू को पहली बार उसकी शख्सियत के इस पहलू के दर्शन हो रहे थे. वे बड़े आदर से उसे देख रहे थे. तभी गणेश बाबू के पैरों में कोई गिर पड़ा. "राम.. राम साहब जी" यह उनके उजनी के दिनों में साथ काम करने वाला आफ़िस का पांडु चपरासी था. "अरे पांडु भैया... कैसे हो?" गणेश बाबू ने पूछा. भले ही पांडु समय के साथ बूढ़ा और कमज़ोर हो चला था लेकिन इसके बावजूद उसने अपनी चापलूसी करने का स्वभाव न छोड़ा था. "अब कौन ग्राम सेवक है?" गणेश बाबू ने पूछा "अब कुछ पता न है साहब जी...आप जब से गये तब से काम में मज़ा न आता था..नये साहब खुद ही सारा पैसा लेते थे फिर हमारी शादी हो गयी और मैने नौकरी छोड़ दी...अब मेरा बीजों का कारोबार है गार्ड साहब की मदद से. "बढ़िया है...मतलब हँसी खुशी से गुज़र रही है तुम्हारी ज़िंदगी" गणेश बाबू बोले. "हाँ वैसे बढ़िया ही है ....लेकिन आपके समय गाँव में जो बातें थी अब ना हैं"

पूरा मैदान लोगों से खचाखच भरा हुआ था , कहीं पैर रखने की जगह न थी. अब तो बस मधुरानी की राह देखी जा रही थी. तयशुदा समय से 1 घंटे से उपर हो चुके थे ...दो-तीन बार उसके आने की अफवाह उड़ती तो कार्यकर्ता सक्रियता दिखाते ...या अफवाह उड़ाने का काम शायद कोई जान बूझ कर करता था. जो नेता जितनी देर से चुनावी सभा में आएगा उतनी ही बेसब्री से उसकी राह देखी जाएगी..वरना वहाँ इकट्ठा हुए लोग बेवजह हल्ला न मचाएँ . तभी गणेश को दूसरे ट्रक से उतरते हुए उजनी गाँव के लोग दिखाई दिए. यह ट्रक देर से आया था क्योंकि अब तक सभा शुरू होने का वक्त हो चला था. वैसे भी गणेश बाबू का काम ख़त्म हो चला था . अब बस मधुरानी के आने का इंतेज़ार हो रहा था. वे उन लोगों के करीब गये. उनकी बबन मेकॅनिक से मुलाकात हुई जो उजनी में मोटर, पंखे और पंप सुधारा करता था. अब भी वह गाँव में वही काम कर रहा था . गाँव के लोग जिसे पगला कह कर बुलाता थे वह भी मिला . वाकई वह पगला ही था. सब लोग आपस में बैठ कर यही चर्चा कर रहे थे कि सभा कब शुरू होगी...उसी भीड़ में उन्हें माधुरानी के खेत संभालने वाले संभाज़िराव भी दिखाई दिए लेकिन वह वहाँ से खिसक गया . मारुति टेलर भी मिला लेकिन उससे कोई बात न हुई. गाँव के महडू , लोहा सिंह , भोला वग़ैरह दिखाई दिए जिनके साथ कभी वह क्रिकेट खेला करता था . उनसे मिल कर पता चला अब उनके बाल-बच्चे क्रिकेट खेला करते है . गाँव के नौजवान पहले ही सभा में आ चुके थे. उनका माधुरानी से क्रिकेट किट माँगने का इरादा था . उनसे बातें हुईं तो पता चला पिछले चुनाव में माधुरानी ने उनको क्रिकेट किट दिलाई थी . माधुरानी की यह बात अच्छी थी . बच्चों को क्रिकेट कीट दिलाई तो सारा गाँव खुश. दो तीन लड़के दिखाई दिए गणेश ने पूछा तो पता चला वे बँडू होटेल वाले के लड़के थे. माँ बाप अब भी वहाँ होटेल चलाते थे और यह आवारा गर्दी करते फिरते थे. कोई उनकी बुराई कर रहा था..उन लड़कों में एक 15-16 साल का लड़का भी था ... वह गूंगे का बेटा था. गणेश बाबू को गूंगे और गूंगी की याद हो आई. गूंगी का आगे क्या हुआ..? उसका ब्याह हुआ या नही?... वह यह सब गाँव वालों से पूछने ही वाले थे कि उनके कार्यकर्ता ने उनके पास आ कर कान में फुसफुसाते हुए खबर दी "आज सभा में कुछ गड़बड़ी होने का अंदेशा है...मधुकर बाबू ने सतर्क रहने को कहा है.." आख़िरकार माधुरानी

की गाड़ी और उसकी गाड़ी के सामने सायरन बजाती हुई पुलिस की गाड़ी वहाँ आ खड़ी हुई. पूरी भीड़ में उत्साह की लहर दौड़ गयी. सब लोग उचक-उचक कर माधुरानी को देखना चाह रहे थे. मंच पर जाते समय कई लोगों ने वहाँ जा कर माधुरानी के गले में फूलों के हार पहनाए. किसको माला पहनाने का मौका देना है और किसको नहीं यह तय करने का काम गणेश बाबू का था सो उन्होने अच्छी तरह निभा दीया था . हार पहनाते समय कोई गड़बड़ न हुई थी. जिनको हार पहनाने के लिए चुना गया था उनको गणेश बाबू और उनके आदमियों ने मंच के पास ही जहाँ से माधुरानी गुज़रने वाली थी वहाँ खड़ा कर दिया था . लोगों से फूल मालाएँ स्वीकार कर माधुरानी उसे लोगों की भीड़ में उछाल रही थी. लोग उसे पाने के लिए हो हल्ला मचाने लगे.

फिर भाषण शुरू हुआ. माधुरानी के साथ आए मंच पर बैठे नेता एक-एक कर भाषण झाड़ रहे थे. उन्हें यह अच्छा मौका मिला था . भाषण के दौरान किसी वाक्य पर माधुरानी के आदमी तालियाँ बजाते थे.उनकी देखा देखी जनता भी तालियाँ बजाती थी. उन कार्यकर्ताओं की मानों यह ज़िम्मेदारी थी और वे बीच बीच में इसी तरह तालियाँ जब बजाते तो जनता भी उनका साथ देती. भाषण पर भाषण हो रहे थे. माधुरानी का भाषण सब से आखरी में होना था. गणेश बाबू को उन उकताऊ भाषण को सुनने में कोई दिलचस्पी नहीं थी. उन्होने जमुहाई लेते हुई आस पास नज़रें दौड़ाई , एक कोने में उन्हें एक बूढ़ा बैठा हुआ दिखाई दिया. वह बूढ़ा उन्हें जाना पहचाना लग रहा था. उन्होने याददाश्त पर ज़ोर डाला लेकिन उन्हें याद न आया. उस आदमी का ध्यान भी उनकी ओर गया लेकिन उसने झटसे अपनी नज़रें दूसरी ओर फेर लीं. गणेश बाबू चलकर उस आदमी के पास गये. उस आदमी ने चोर निगाहों से उन्हें अपने पास आते हुए देखा. गणेश बाबू उसके बगल में आ कर बोले "आपको पहले भी कहीं देखा हुआ सा लग रहा है?" "आप गणेश बाबू हैं ना?" उसने पूछा. "हाँ लेकिन माफ़ कीजिए मैने आपको पहचाना नहीं" "हम उजनी गाँव से आए हैं" उनको याद आया की यह तो गूंगी का बाप है ...पांडुरंग? ना ना .. पांडुरंग तो गूंगे का बापू था यह शायद रघुजी होंगे... "हां..हां... याद आया" गणेश बाबू फट से बोल पड़े "सब कुशल मंगल है?" "हां सब ठीक ही है..दो वखत की रोटी मिल जात है...और हम जैसे ग़रीब आदमी अधिक क्या चाहे?" उसने जवाब दिया. गणेश बाबू को जो बात जानना चाह रहे वह उसके दिए हुए जवाब से जान न पाए थे. वे और खुल कर बोले "आपकी बेटी कैसी है?" "बेटी?" उसने सवालिया निगाहों से पूछा. "मेरा मतलब...आपकी गूंगी से है" गणेश बाबू ने साफ कहा . गणेश बाबू को गूंगी का नाम मालूम न था यूँ भी सारा गाँव उसे गूंगी कह कर ही पुकारता था. रघुजी ने अपनी नज़रे चुरा लीं और मंच की ओर देखने लगे. शायद वह अपनी भावनाएँ छुपाने की कोशिश कर रहे थे. गणेश बाबू ने सोचा कहीं मैने ग़लत बात तो न कह दी...बेकार में दिल दुखा दिया... "माफ़ करिएगा...मुझे कुछ पता न था इसलिए ऐसे ही पूछ लिया" गणेश बाबू रघुजी के कंधे पर हाथ रखते बोले. उसने दोबारा पलट कर गणेश बाबू की ओर देखा इस बार उसकी आँखें भर आईं थी. वह मंच की ओर देखते बोला " साहब उसकी किस्मत ही फूटी थी..." "क्यों क्या हुआ" गणेश बाबू ने पूछा. "उस हरामजादे गूंगे के ब्याह के बाद हम लोगन ने उसके लिए दूसरा लड़का पसंद किया था..." बोलते वक्त उसकी आवाज़ भर्रा गयी थी. गूंगी का बाप बोलते

समय थोड़ा रुका. गणेश बाबू भी कहानी जानना चाह रहे थे. "उसका ब्याह भी तय हो गया था....हमने खेती बाड़ी बेच कर दहेज की रकम भी खड़ी कर ली थी...लेकिन" वह बोला. गणेश बाबू के दिमाग़ में तरह तरह के विचार आने लगे थे . लेकिन..? लेकिन..क्या हुआ? उस लड़के ने भी गूंगी को नकार दिया क्या?... गणेश बाबू ने सोचा "लेकिन जैसे ही बेटी को पता चला उसने खाना पीना छोड़ दिया...15 दिन से उसने कुछ न खाया पिया..ब्याह के ठीक एक दिन पहले वह चल बसी... हमको छोड़ कर चली गयी...." वह बूढ़ा अपनी आँखों के आँसू पोंछते हुए बोला. "क्या????" गणेश बाबू चौंक कर बोले..आगे उस बूढ़े से और सवाल पूछने की उनमें कोई हिम्मत न थी. वह बूढ़ा अब मंच की ओर देख रहा था अपनी बेटी की यादों को छुपाते हुए. बेचारी गूंगी... वह गूंगे से सच्चा प्यार करती थी...लोगों को उनके बीच यूँ आना न चाहिए था..उन्हें क्या हक था?... गणेश बाबू ने सोचा. उन्हें थपथपा कर भारी कदमों से वहाँ से चले गये. और वे कर भी क्या सकते थे.

अन्य नेताओं का भाषण होने के बाद मधुरानी भाषण देने के लिए खड़ी हुई. माइक्रोफोन के सामने जा कर उसने वहाँ उमड़ी भीड़ को निगाह भर कर देखा . चारों ओर शांति छा गयी. लोग उसको सुनने के लिए बेताब थे. "भाइयों और बहनों..." उसने पॉज़ लिया. लोगों ने ज़ोरदार तालियाँ बजा कर उसका स्वागत किया. आख़िरकार उसने अपना भाषण शुरू किया. करिश्मा शायद इसी को कहते हैं··· गणेश बाबू ने सोचा. मधुरानी का भाषण जो चला वह पौन घंटे तक चला. लोग मंत्रमुग्ध हो कर उसे सुन रहे थे. गणेश बाबू ने उसके भाषणों के बारे में आज तक केवल सुना ही था. आज वह शिद्दत से यह महसूस कर रहे थे की वाकई वह एक बेहतरीन वक्ता है. अचानक "मधुरानी मुर्दाबाद...." भीड़ के एक कोने से किसी ने तेज आवाज़ में कहा .. नारा सुन कर गणेश बाबू होश में आए. उन्होने पलट कर देखा वहाँ कुछ लोग लाल झंडा और लाठियाँ पकड़े दिखाई दिए. वैसे इस बात का अंदेशा था की सभा में कुछ गड़बड़ होने वाली है...यह ज़रूर संपत राव पाटिल जी के बेटे दीपक का किया धारा है... गणेश ने सोचा. संपत राव पाटिल की मौत के बाद उनके बेटे दीपक ने उनकी जगह ले ली थी. शायद उसे मालूम था की पाटिल जी का क़त्ल मधुरानी ने करवाया है. क्योंकि उनके बीच अनबन की खबरें बहुत पहले से जाहिर हो चुकीं थी. पाटिल जी आज होते तो वे ऐसा कदम कभी न उठाते लेकिन यह जोशीला नौजवान था.....गर्म खून था. "मधुरानी मुर्दाबाद" नारे अब पूरी सभा में गूंजने लगे थे. चारो ओर अफ़रा-तफ़री मच गयी. मधुरानी भाषण देते हुए एक पल रुकी उसने मधुकर बाबू और अन्य कार्यकर्ताओं की ओर एक नज़र डाली. मधुकर बाबू बड़े तैश में अपने आदमियों को लेकर उस कोने में बढ़ने लगे जहाँ नारेबाज़ी चल रही थी. इधर मधुरानी का भाषण जारी था. मधुकर बाबू और उनके चालीस पचास आदमियों के जाने पर स्थिति बद से बदतर हो गयी. उन लोगों ने लाठियाँ निकाल लीं और उन्हें मधुरानी के समर्थकों पर चलाना शुरू कर दिया. भागा-दौड़ी शुरू हो गयी. मधुरानी को मजबूरन भाषण रोकना पड़ा. एक पुलिस अधिकारी माइक्रोफोन के सामने खड़े हो कर लोगों से शांति बनाए रखने की अपील करने लगा . लेकिन अब भीड़ काबू के बाहर हो चुकी थी. वह लाल झंडे वाले और लाठीधारियों की संख्या देखते देखते बढ़ने लगी. मधुरानी के कार्यकर्तों के पास कोई हथियार न था वह पत्थर उठा उठा

कर उन्हें मारने लगे. इधर लाल झंडे वाले लाठियाँ भंज रहे थे. एक कार्यकर्ता ने जो पत्थर ले कर मारने के लिए फेंका वो सीधे एक आम के पेड़पर लटके मधुमखियोंकी छत्ते से जा लगा..सारी मक्खियों ने वहाँ मौजूद भीड़ को निशाना बनाना शुरू किया. मधुमक्खियों के कारण और भी भगदड़ मच गयी .. धक्कामुक्की बढ़ गयी...यह पूरा प्लान मधुरानी के विरोधियों का ही था. लेकिन हालात इस कदर बेकाबू हो जाएँगे किसी को अंदाज़ा न था. पुलिस अधिकारी ने वायरलेस पर संदेश भेज कर और मदद माँगी.

वह लाल झंडे वाले लोग अब मंच की दिशा की ओर बढ़ चले थे . लेकिन गणेश बाबू और उनके कार्यकर्ता उन्हें रोकने लगे. उन्हें मालूम था की एक बार यह लोग मंच तक पंहुच गये तो मधुरानी और उसके साथ मौजूद अन्य नेताओं की खैर नहीं. मधुरानी की जान को ख़तरा था इसलिए वह जी जान लगा कर लड़ रहे थे. मधुमक्खियों का छत्ता वहाँ से पास ही था. उन्होने वहाँ भी हमला बोल दिया था. गणेश बाबू और उनके लोगों को एक साथ दो चीज़ों से बचना पड़ रहा था , एक तो उन गुण्डों की लाठियों से और दूसरे उन मधुमक्खियों से. खुद गणेश बाबू का चेहरा भी डंक से सूज कर लाल हो गया था लेकिन उन्हें इसकी परवाह न थी. चाहे जान चली जाए मधुरानी का बाल भी बांका नही होना चाहिए..आख़िरकार अब वही तो मेरे जीने का सहारा थी... शायद मैं उस से प्यार करने लगा हूँ ... वरना क्या मैं उसके लिए जी जान लड़ा कर लड़ता?... उनके साथ के कुछ कार्यकर्ता वहाँ से भाग खड़े हुए , लेकिन गणेश बाबू को न जाने आज क्या हो गया था इस उम्र में भी वह लाल झंडे वाले लोगों को मार रहे थे. अब उनके हाथों में भी एक लाठी आ गयी थी जिससे वह अब जी जान से लड़ रहे थे. जब यह बमचक मची थी तो गणेश बाबू को मधुकर बाबू मंच की ओर जाते दिखे. " गणेश बाबू एक भी लौंडा उपर नहीं पंहुच ना चाहिए ... जान ले लो इन सालों की..मैं उपर मधुरानी की सुरक्षा की व्यवस्था देखता हूँ" मधुकर बाबु ने कहा. अब तक मैदान में पुलिस बल आ चुका था. उन्होने आँसू गैंस के गुब्बारे छोड़े और लाठी चार्ज करने लगे. लेकिन भगदड़ कायम थी. पुलिस बल भी वहाँ जमे लोगों की संख्या को नियंत्रित करने के लिए काफ़ी न था. गणेश बाबू हमलावरों को मार भागने मे लगभग कामयाब हो गये थे इतने में उनके करीब तीन कार्यकर्ता आ पंहुचे. गणेश बाबू समझ गये की उन्हें कोई खबर बतानी है.. वहाँ का इंतेज़ाम दूसरे कार्यकर्ता को सौंप कर वह उन तीनों के साथ एक कोने में आ खड़े हुए. "साहब बुरी खबर है" एक आदमी बोला. "क्या हुआ..ज़रा खुल कर बताओ" गणेश बाबू का कलेजा मुँह को आ रहा था "कही माधुरानी को कुछ हो तो न गया" उन्होने सोचा. "मधुकर बाबू आज आपका गेम बजाने की फिराक में हैं" दूसरा आदमी बोला. "क्या?!!..तुम लोगों को कैसे पता चला?" गणेश बाबू ने हैरान हो कर पूछा. उन्हें मालूम था की मधुकर बाबू कभी न कभी यह चाल चलेंगे. लेकिन वह वक्त इतनी जल्दी आएगा उन्हें ऐसी उम्मीद न थी. "राजू ने अपने कानों से सुना ...मधुकर बाबू को काशीनाथ से कहते हुए " तीसरा बोला.. "क्या कहा उसने?" गणेश बाबू ने पूछा. " आ..आज अच्छा मौका है....इस की बजा डालो आज ... मुझसे ज़बान लड़ाता है हरामज़ादा...उसे मालूम नहीं म्यान में एक ही तलवार रह सकती है.. - ऐसा काशीनाथ को बोला वह" "ऐ ..सा..?" गणेश बाबू सोचते हुए बोले. "अब क्या करें?" गणेश बाबू बोले. "साहब जी आप बस हुक्म कीजिए" राजू बोला

. गणेश बाबू ने उसकी ओर देखा. उसका फ़ैसला हो चुका था. उसे आदेश देने पर वह जान की परवाह किए बगैर उसकी खातिर जी जान लड़ा देने वाला था. गणेश बाबू के जबड़े भींच गये थे. "हाँ वह सही है..एक म्यान में एक ही तलवार रह सकती है.." गणेश बाबू अपनी सोने की चेन और अंगूठियाँ निकाल कर उनके हवाले करते हुए बोले. " जी साहब जैसी आपकी आज्ञा...वैसे वह भी मंच के नीचे भीड़ में उतरा हैं ... एक ही लाठी से उसका सिर फोड़ दूँगा" एक दूसरा बंदा बोला. "जी साहब" बाकी दोनों ने भी हामी भर दी और फिर वह सब अपनी लाठियों को संभालते हुए मधुकर बाबू की दिशा में बढ़ चले.

अन्य जगहों पर चाहे हालत बेकाबू हो गये हों लेकिन गणेश बाबू और उनके साथी पूरी ताक़त से लोगों को मंच की ओर जाने से रोके हुए थे. उनकी लाठीधारियों के साथ मुठभेड़ अब भी जारी थी. रह रह कर गणेश बाबू का ध्यान उस दिशा में चला जाता जहाँ उन्होने उन तीनों को मधुकर बाबू का गेम बजाने भेजा था. वैसे उन पर उनका पूरा भरोसा था लेकिन काफ़ी देर होने पर भी जब वे न लौटे तो उन्हें चिंता हुई. इतने में वह तीनो गणेश बाबू को अपनी ओर आते हुए दिखाई दिए ...तीनों के चेहरे पर मुस्कुराहट थी... यानी उन्होने सौंपा गया काम कर दिया... उन्होने सोचा. अब उनके चेहरे पर भी मुस्कुराहट तैरने लगी . वे अब उनके मुँह से खुशख़बरी सुनना चाह रहे थे . इस दौरान वे तीनों उनके पीछे आ कर खड़े हो गये. वे पलटकर उनसे मुखातिब होने ही वाले थे की उन पर किसी ने पीछे से लाठी चलाई और वह लड़खड़ा कर नीचे गिर पड़े. उन्होने पलटकर देखा तो उन तीनो में से ही एक बंदे ने पीछे से उनके सिर पर लाठी चलाई थी. उन्हें आश्चर्य हुवा था. वे थोडा सम्हलने को हुए थे की इतने में दूसरा ज़ोरदार वार उनके माथे पर हुआ ..इस बार यह वार उनके विश्वासपात्र राजू ने किया था. .... अब तक गणेश बाबू को समझ आ गया कि उनके साथ धोखा हुआ है. लेकिन क्यों? और कैसे?... इसके बाद उनके शरीर पर लाठियों के अनगिनत वार किए गये . हमलावर वही तीन थे. उन तीनो ने लाठियाँ मार मार कर उन्हें अधमरा कर दिया था. तभी लाठीधारियों का एक बड़ा झुंड अपनी तरफ आते देख तीनों वहाँ से भाग खड़े हुए. नीचे पड़े खून से लथपथ कराहते हुए गणेश बाबू का ध्यान अचानक मंच के कोने में गया..चार पाँच कार्यकर्ता मधुरानी को उसकी गाड़ी तक पंहुचने में कामयाब हो गये थे , उन लोगों में मधुकर बाबू भी थे. वह लोग गाड़ी में झटसे बैठ गये. मधुकर बाबू और गणेश बाबू की नज़रें आपस में मिलीं . मधुकर बाबू उनकी ओर देख एक शैतानी हँसी हँसे. फिर मधुकर बाबू ने माधुरानी से बात करते हुए गणेश बाबू की ओर उंगली से इशारा किया.मधुरानी और गणेश बाबू की नज़रें मिली. यानी..यानी...मुझ पर जो हमला हुआ वह मधुकर बाबू ने किया और वह भी माधुरानी की सहमति से?... लेकिन क्यों...और कैसे??... इतने में गणेश बाबू को मधुकरबाबू के गले में अपनी सोने की चेन दिखाई दी. अच्छा तो ऐसा हुआ... गणेश बाबू को सब समझ आया . गणेश बाबू को जो उन तीनो ने खबर दी इसमें भी मधुकर बाबू की चाल थी...उन्होने पहले उनको हमला करने के लिए उकसाया और जब गणेश बाबू ने उन तीनों को मधुकर बाबू का गेम बजाने भेजा तो उसने यह बात जा कर मधुरानी को बता दी और सुबूत के तौर पर उनकी चेन और अंगूठियाँ दिखा दी. और फिर जब मधुरानी को यह बात मालूम पड़ी की गणेश बाबू उनको बताए बगैर इतना

बड़ा कदम उठा सकते हैं तो वे भरोसे के काबिल नही हैं. फिर मधुकरबाबू ने गणेश बाबू का गेम बजाने के लिए मधुरानी से इजाज़त माँगी - जो उसने दे दी. लेकिन गणेश बाबू के मन में एक झूठी आशा पल्लवित हुई. अब वह भी मुझे यहाँ से ले जाने का इन्तेजाम कराएगी... वे जाने के लिए तैयार ही थे. लेकिन यह क्या ? ... वह नज़र अब उनको पहचानती तक न थी , इतना बड़ा दंगा फ़साद होने के बावजूद उन नज़रों में डर भी न था.. दुख भी न था और न दया थी..उन नज़रों में थी एक महत्वकांक्षा..,,,.रास्ते में जो भी आए उसे पैरों तले निर्ममता से रौंदने की चाहत.... मधुरानी ने उन्हें देख कर अनदेखा कर दिया और ड्राईवर को वहाँ से ले चलने का आदेश दिया. उनकी गाड़ी देखते ही देखते नज़रों से ओझल हो गयी. गणेश बाबू देखते ही रह गये. गणेश बाबू को अपनी आँखों पर विश्वास न हुआ. अन्य कार्यकर्ता अब भी लाठीधारियों से लड़ रहे थे।··· यह सोच कर की मधुरानी अब भी वहाँ मौजूद है. यानी इन सब लोगों को यूँ ही मरने के लिए छोड़ मधुरानी वहाँ से भाग खड़ी हुई थी. गणेश बाबू अब नीचे पड़े हुए अपनी जान बचाने की कोशिश कर रहे थे. इतने में लोगों का बदहवास झुंड उस ओर आया ...वह संख्या में इतने ज़्यादा थे की गणेश बाबू बच ना सके . उस भगदड़ में गणेश बाबू को भीड़ ने बेदर्दी से अंजाने में पैरों तले कुचल डाला..उनकी दर्द भरी चीखें किसी को शोर गुल में सुनाई न दी. लोगों की भीड़ अब जा चुकी थी लेकिन गणेश बाबू के शरीर का एक भी हिस्सा साबुत न बचा था. थोड़ा हिलाने पर भी उन्हें बहुत दर्द होता था. उन्होने उसी हाल में पड़े पड़े आस पास देखा मधुमक्खियाँ अब भी लोगों को डंस रही थी.....लोगों ने उनसे बचने के लिए उनमें से कई मक्खियों को मसल दिया था. लेकिन वह कार्यकर्ता मक्खियाँ थी..उनका काम अपनी रानी को बचाना था.. गणेश बाबू अब अपनी मौत की प्रतीक्षा करने लगे. अब मौत ही उन्हें इस जानलेवा दर्द से छुटकारा दिला सकती थी. अचानक उनकी नज़र आकाश में गयी उन्होने देखा उस छत्ते की रानी मक्खी अपने साथ कुछ नर मधुमक्खियों और कुछ कार्यकर्ता मक्खियों को ले पूर्व दिशा की ओर उड़ रही थी...... नयी जगह की खोज में....और वह जा रही है इस बात से बेख़बर उसके अन्य कार्यकर्ता अब भी लोगों को डंस रहे थे.......ठीक माधुरानी के कार्यकर्ताओं की तरह..... गणेश बाबू ने आखरी बार इधर उधर देखा उनके साथी भी लाठी खा कर मर रहे थे तो कुछ अब भी लड़ रहे थे. गणेश बाबू ने सोचा: इनमें से प्रत्येक आदमी एक कार्यकर्ता मक्खी की मौत मर रहा है....... उन हालात में भी गणेश बाबू के चेहरे पर समाधान की एक झलक दिखने लगी. उन्हें इस बात की खुशी थी की उनके आस पास मधुरानी के कार्यकर्ता एक कार्यकर्ता मधु मक्खी की मौत मार रहे थे.... लेकिन जो मौत उनको मिल रही थी वह मौत थी एक नर मधुमक्खी की...